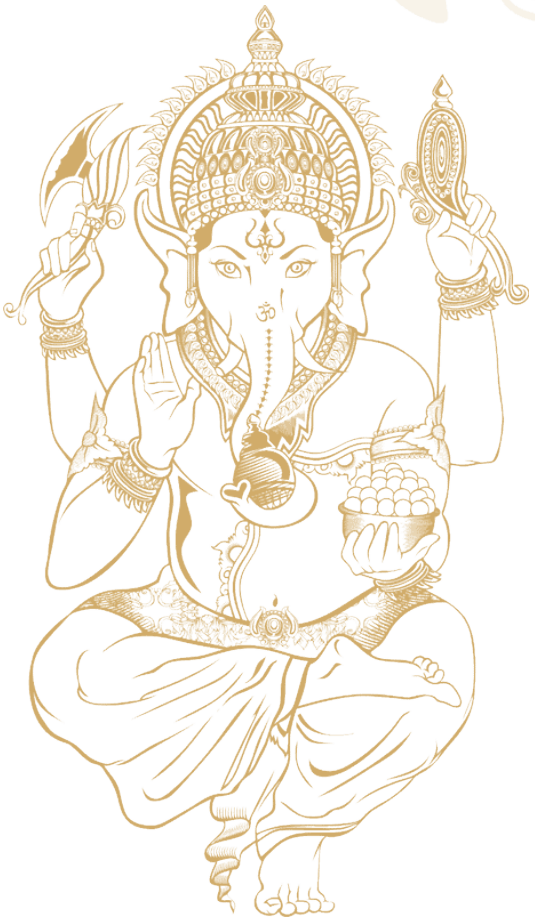

Prashant Matai

19 Oct 1979

09:17 AM

Mumbai

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121147701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**19/10/1979**
दिन	शुक्रवार
जन्म समय	**09:17:00 घंटे**
इष्ट	06:47:32 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	08:38:20 घंटे
वेलान्तर	00:14:54 घंटे
साम्पातिक काल	10:26:27 घंटे
सूर्योदय	06:33:59 घंटे
सूर्यास्त	18:13:27 घंटे
दिनमान	11:39:28 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	01:35:26 तुला
लग्न के अंश	07:48:16 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी	**कन्या - बुध**
नक्षत्र-चरण	**उ०फाल्गुनी - 4**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	ऐन्द्र
करण	विष्टि
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पी-पीयूष
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1901	आश्विन	27
पंजाबी	संवत : 2036	कार्तिक	3
बंगाली	सन् : 1386	कार्तिक	2
तमिल	संवत : 2036	आइपसी	2
केरल	कोल्लम : 1155	तुलम	2
नेपाली	संवत : 2036	कार्तिक	3
चैत्रादि	संवत : 2036	कार्तिक	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2036	आश्विन	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 14
तिथि समाप्ति काल _____: 30:13:47
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 09:24:17 घंटे
जन्म योग _____: उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____: ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____: 18:45:41 घंटे
जन्म योग _____: ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण _____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 17:14:19 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 66:51:30
भभोग _____: 67:09:44
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 0 वर्ष 0 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____: भाद्रपद
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: श्रवण
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: मेष
चन्द्र _____: मिथुन
मंगल _____: वृष
बुध _____: मीन
गुरु _____: मिथुन
शुक्र _____: कर्क
शनि _____: मीन
राहु _____: सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

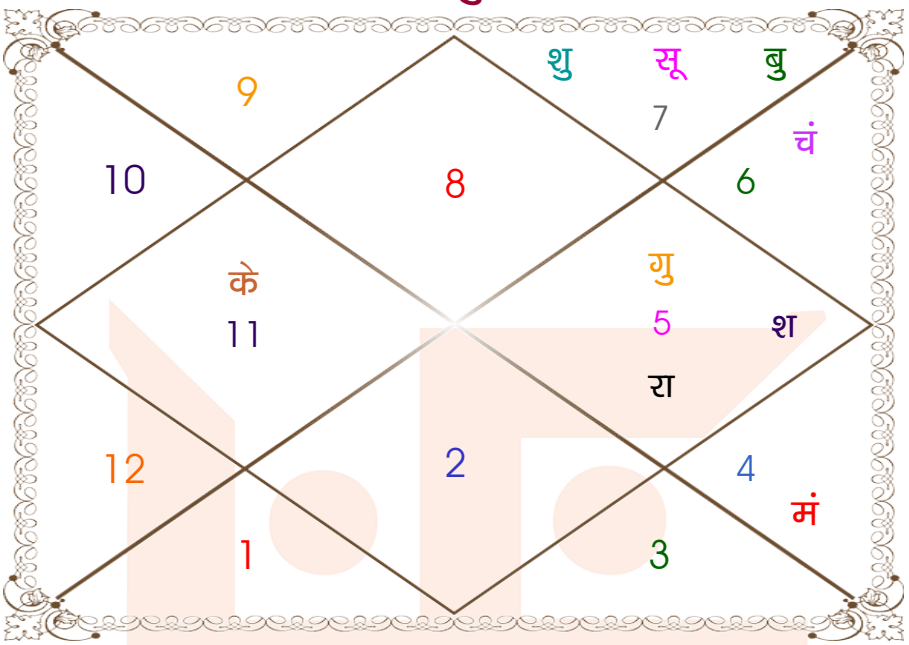

चन्द्र कुंडली

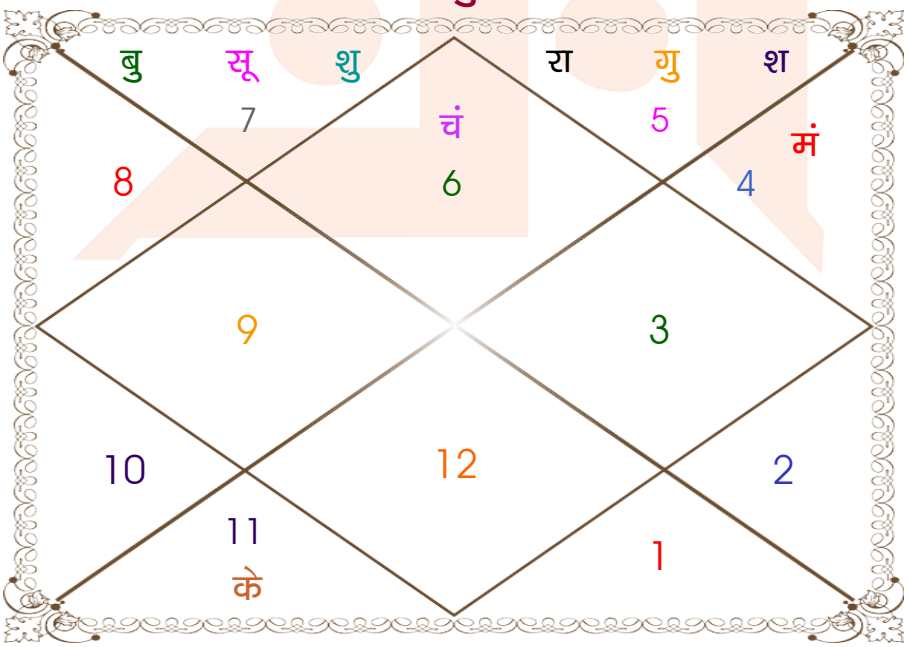

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

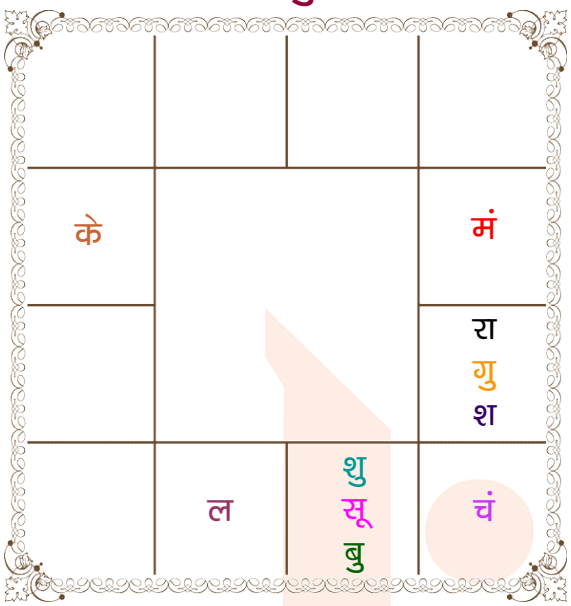

लग्न कुंडली

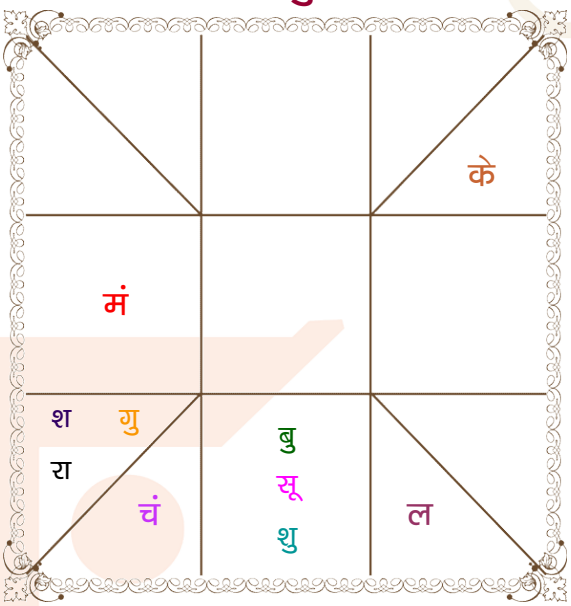

विंशोत्तरी
सूर्य 0वर्ष 0मा 9दि

सूर्य

19/10/1979

28/10/2093

सूर्य	29/10/1979
चन्द्र	28/10/1989
मंगल	28/10/1996
राहु	29/10/2014
गुरु	29/10/2030
शनि	28/10/2049
बुध	29/10/2066
केतु	28/10/2073
शुक्र	28/10/2093

योगिनी
सिद्धा 0वर्ष 0मा 11दि

पिंगला

30/10/2024

30/10/2026

पिंगला	09/12/2024
धान्या	08/02/2025
भ्रामरी	30/04/2025
भद्रिका	10/08/2025
उल्का	10/12/2025
सिद्धा	01/05/2026
संकटा	10/10/2026
मंगला	30/10/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	07:48:16	320:49:02	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	केतु	---
सूर्य			तुला	01:35:26	00:59:37	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	नीच राशि
चंद्र			कन्या	09:56:21	11:59:03	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
मंगल			कर्क	20:23:45	00:33:01	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	नीच राशि
बुध			तुला	23:23:19	01:19:04	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	शनि	मित्र राशि
गुरु			सिंह	10:04:26	00:10:18	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मित्र राशि
शुक्र			तुला	16:04:48	01:14:45	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	मूलत्रिकोण
शनि			सिंह	28:20:54	00:06:43	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि
राहु	व		सिंह	14:06:50	00:04:29	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	14:06:50	00:04:29	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			तुला	26:08:28	00:03:29	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	---
नेप			वृश्चि	24:48:16	00:01:31	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
प्लूटो			कन्या	25:48:20	00:02:23	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	---
दशम भाव			सिंह	11:11:21	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:34:21

लग्न-चलित

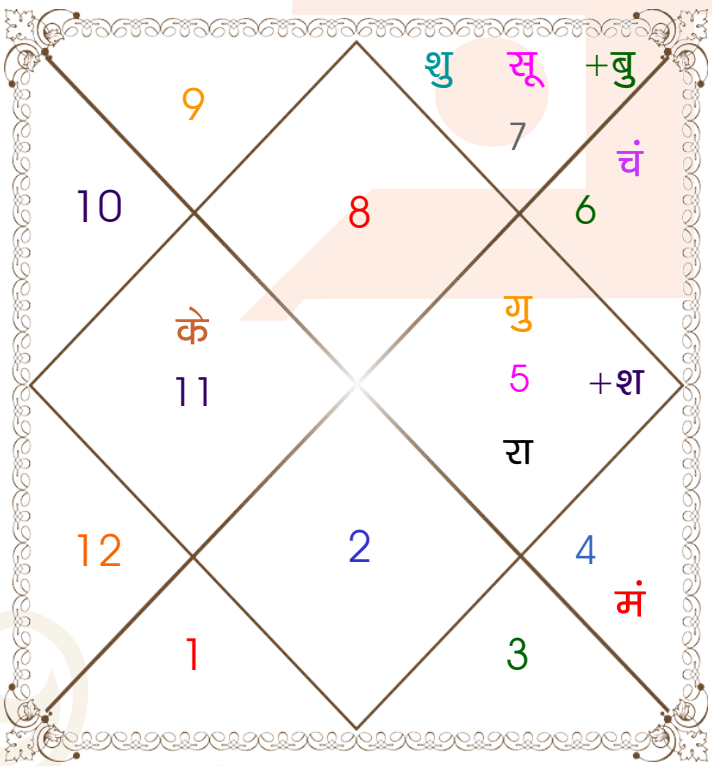

चन्द्र कुंडली

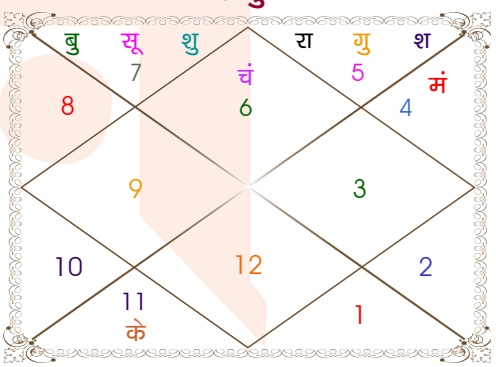

नवमांश कुंडली

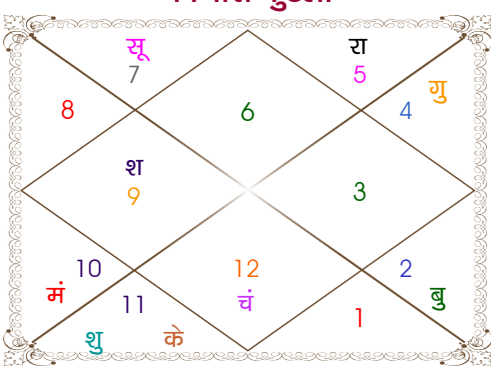

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	23:22:07	वृश्चिक	07:48:16
2	वृश्चिक	23:22:07	धनु	08:55:58
3	धनु	24:29:49	मकर	10:03:40
4	मकर	25:37:31	कुम्भ	11:11:21
5	कुम्भ	25:37:31	मीन	10:03:40
6	मीन	24:29:49	मेष	08:55:58
7	मेष	23:22:07	वृष	07:48:16
8	वृष	23:22:07	मिथुन	08:55:58
9	मिथुन	24:29:49	कर्क	10:03:40
10	कर्क	25:37:31	सिंह	11:11:21
11	सिंह	25:37:31	कन्या	10:03:40
12	कन्या	24:29:49	तुला	08:55:58

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	07:48:16
2	धनु	07:15:11
3	मकर	08:25:25
4	कुम्भ	11:11:21
5	मीन	13:17:24
6	मेष	12:12:17
7	वृष	07:48:16
8	मिथुन	07:15:11
9	कर्क	08:25:25
10	सिंह	11:11:21
11	कन्या	13:17:24
12	तुला	12:12:17

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

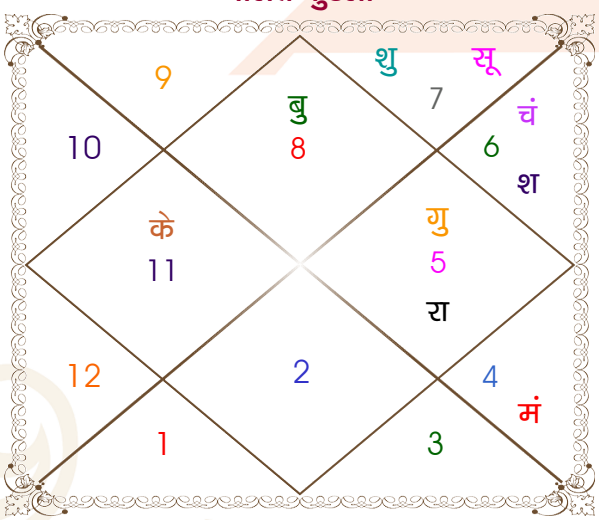

भाव कुंडली

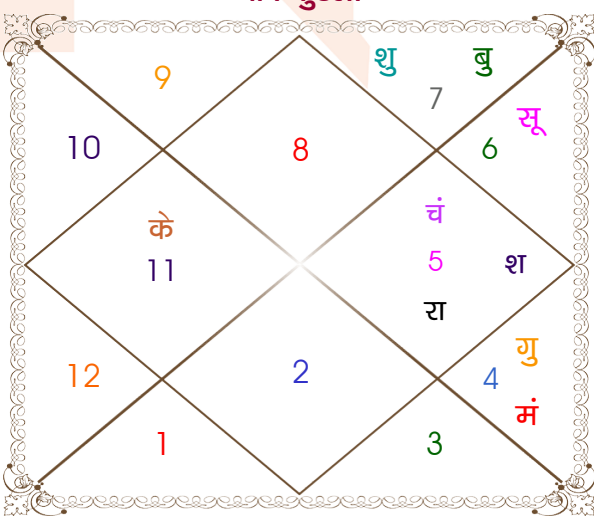

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	बाल	भीत	प्रकाश	0.19	41 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	वृद्ध	मुदित	उपवेशन	3.54	34 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	कुमार	भीत	कौतुक	0.28	34 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	3.93	88 %
गुरु	पुत्र	धन	कुमार	मुदित	नृत्यलिप्सा	7.51	43 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	युवा	स्वस्थ	आगम	1.70	18 %
शनि	आत्मा	आयु	मृत	खल	उपवेशन	3.57	56 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	79 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	खल	उपवेशन	0.00	79 %
कुल						20.72	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

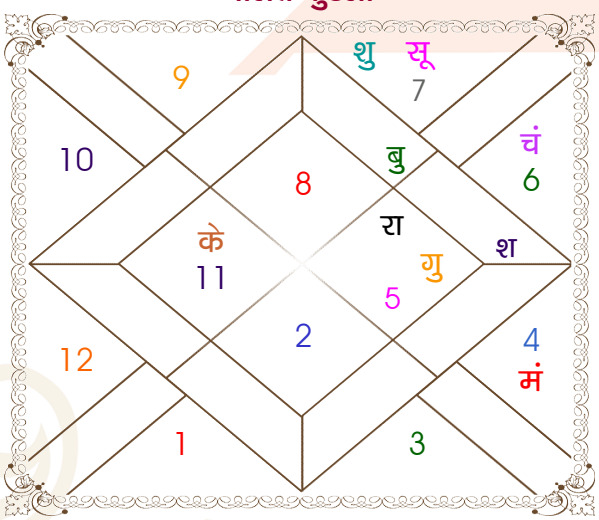

लग्न-चलित

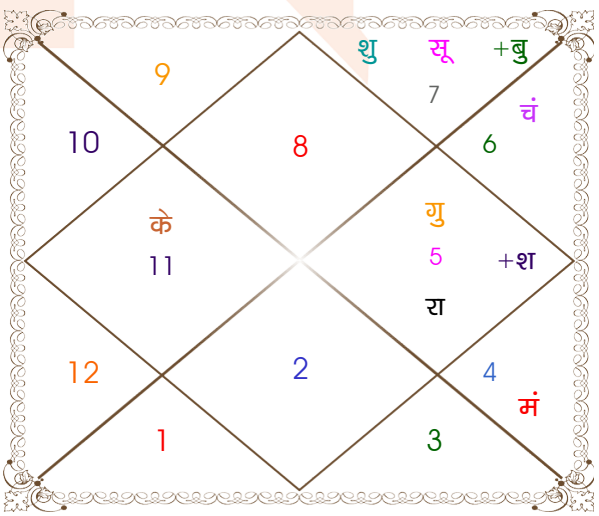

सुदर्शन चक्र

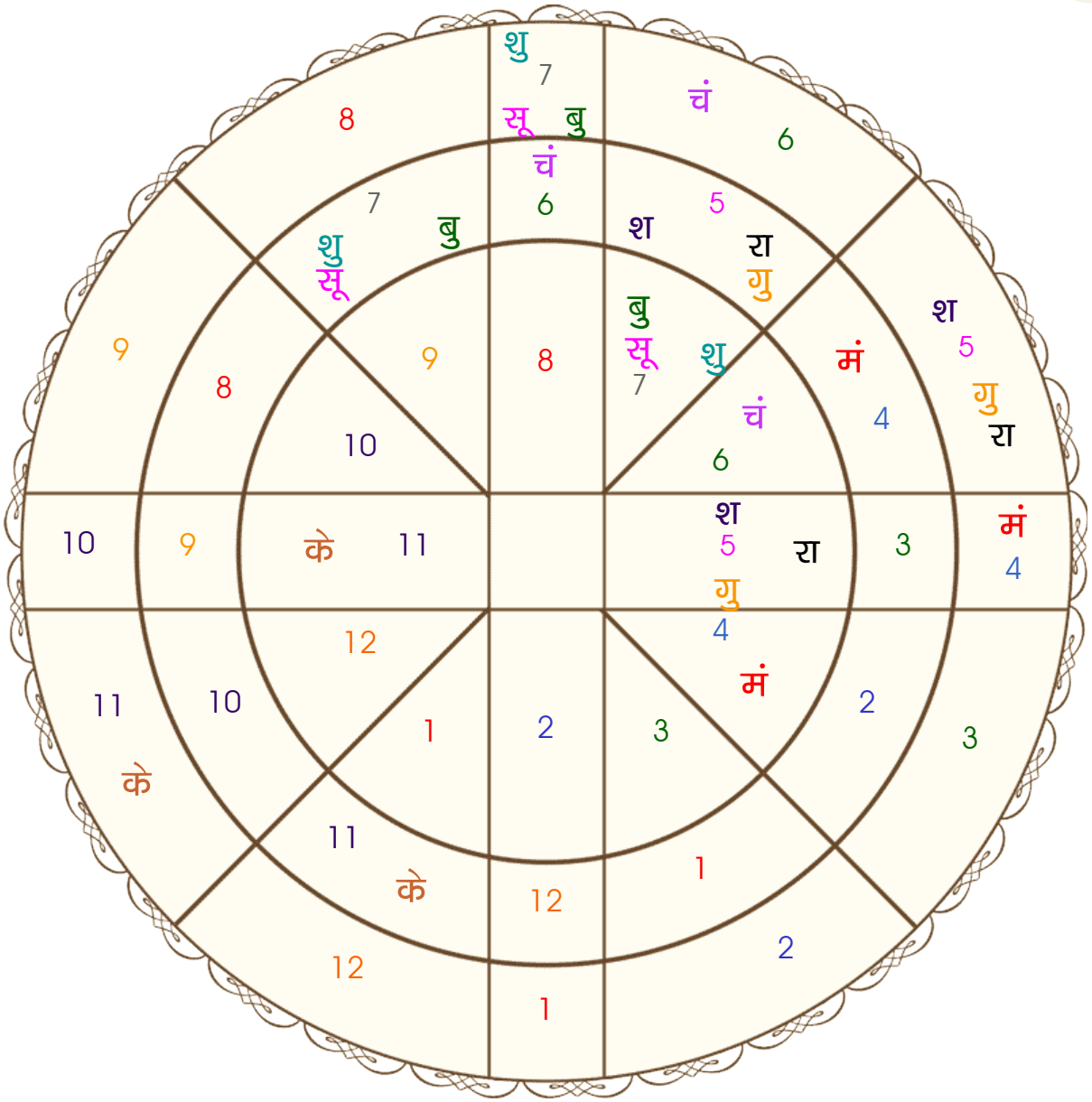

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : चन्द्र 9 वर्ष 11 मास 19 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	01:41:27	शुक्र	मंगल	बुध	शनि
चंद्र		कन्या	10:02:22	बुध	चंद्र	चंद्र	चंद्र
मंगल		कर्क	20:29:46	चंद्र	बुध	शुक्र	गुरु
बुध		तुला	23:29:20	शुक्र	गुरु	शनि	राहु
गुरु		सिंह	10:10:27	सूर्य	केतु	शनि	शुक्र
शुक्र		तुला	16:10:49	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु
शनि		सिंह	28:26:55	सूर्य	सूर्य	मंगल	मंगल
राहु	व	सिंह	14:12:51	सूर्य	शुक्र	शुक्र	राहु
केतु	व	कुंभ	14:12:51	शनि	राहु	बुध	शनि
हर्ष		तुला	26:14:29	शुक्र	गुरु	केतु	गुरु
नेप		वृश्चि	24:54:17	मंगल	बुध	राहु	शनि
प्लूटो		कन्या	25:54:21	बुध	मंगल	राहु	चंद्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	07:54:17	मंगल	शनि	केतु	शनि
2	धनु	07:21:12	गुरु	केतु	राहु	चंद्र
3	मक	08:31:26	शनि	सूर्य	शुक्र	मंगल
4	कुंभ	11:17:22	शनि	राहु	शनि	शुक्र
5	मीन	13:23:25	गुरु	शनि	राहु	गुरु
6	मेष	12:18:18	मंगल	केतु	बुध	चंद्र
7	वृष	07:54:17	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शुक्र
8	मिथु	07:21:12	बुध	राहु	राहु	शनि
9	कर्क	08:31:26	चंद्र	शनि	शुक्र	सूर्य
10	सिंह	11:17:22	सूर्य	केतु	शनि	गुरु
11	कन्या	13:23:25	बुध	चंद्र	राहु	शुक्र
12	तुला	12:18:18	शुक्र	राहु	शनि	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:28:20

फॉरच्युना : तुला 16:15:13

लग्न कुंडली

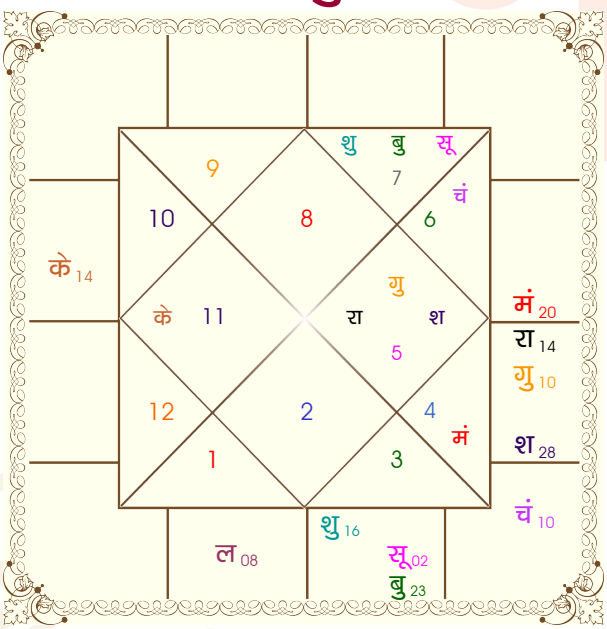

भाव कुंडली

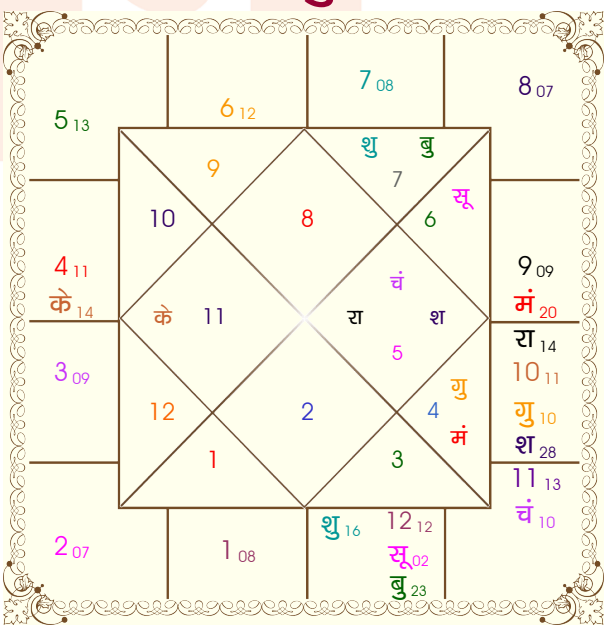

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- मंगल-
2	बुध- गुरु-
3	शनि-
4	गुरु, शनि- केतु,
5	बुध- गुरु-
6	सूर्य- मंगल-
7	शुक्र- राहु-
8	मंगल- बुध-
9	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु,
10	सूर्य- चंद्र+ शुक्र, शनि+ राहु, केतु,
11	सूर्य, मंगल- बुध- शनि,
12	मंगल, बुध, शुक्र, राहु+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 6- 9, 10- 11,
चंद्र	9, 10+
मंगल	1- 6- 8- 9, 11- 12,
बुध	2- 5- 8- 9, 11- 12,
गुरु	2- 4, 5- 9,
शुक्र	7- 10, 12,
शनि	3- 4- 10+ 11,
राहु	7- 10, 12+
केतु	4, 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	सू	मं
2	--	--	बु	गु
3	--	--	--	श
4	गु	के	--	श
5	--	--	बु	गु
6	--	--	सू	मं
7	--	--	रा	शु
8	--	--	मं	बु
9	सू बु	मं गु	चं	चं
10	चं शु के	चं श रा	श	सू
11	श	सू	मं	बु
12	मं रा	बु शु	रा	शु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	10	3,7	तुला	11
चंद्र	9	11	कन्या	10
मंगल	1,6	---	कर्क	9
बुध	8,11	---	तुला	12
गुरु	2,5	---	सिंह	9
शुक्र	7,12	---	तुला	12
शनि	3,4	1,5,9	सिंह	10
राहु	---	4,8,12	सिंह	10
केतु	---	2,6,10	कुम्भ	4

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	1,6	---	9	8,11	---	12
चंद्र	9	11	10	9	11	10
मंगल	8,11	---	12	7,12	---	12
बुध	2,5	---	9	3,4	1,5,9	10
गुरु	---	2,6,10	4	3,4	1,5,9	10
शुक्र	---	4,8,12	10	7,12	---	12
शनि	10	3,7	11	1,6	---	9
राहु	7,12	---	12	7,12	---	12
केतु	---	4,8,12	10	8,11	---	12

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	181.59	159.94	110.40	203.39	130.07	196.08	148.35	134.11	314.11	206.14	234.80	175.81
सूर्य	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	युति
181.59	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.22
चंद्र	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
159.94	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	पंचा	--	--	4था	--	4था	--	--	8वां	4था	पंच	तृती
110.40	0.30	0.00	0.00	9.51	0.00	9.00	0.00	0.00	7.91	8.24	1.21	0.46
बुध	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	युति	--	--
203.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.21	0.00	0.00	0.00	9.59	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	--	--	--	--	युति	सप्त	--	--	अष्ट
130.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.12	9.12	0.00	0.00	0.41
शुक्र	युति	--	--	युति	--	--	--	--	पंच	युति	--	--
196.08	0.53	0.00	0.00	7.21	0.00	0.00	0.00	0.00	2.61	4.94	0.00	0.00
शनि	--	युति	--	3रा	--	3रा	--	युति	सप्त	3रा	चतु	--
148.35	0.00	3.49	0.00	8.68	0.00	2.82	0.00	0.80	0.80	9.73	1.80	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	तृती	युति	--	सप्त	पंचा	--	--
134.11	0.00	0.00	0.00	0.00	9.12	2.61	0.80	0.00	10.00	1.00	0.00	0.00
केतु	--	--	--	--	सप्त	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--
314.11	0.00	0.00	0.00	0.00	9.12	0.00	0.80	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	युति	--	युति	--	--	--	--	--	--
206.14	0.00	0.00	0.00	9.59	0.00	4.94	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
234.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	--	--	--	--	--	--	--	--	तृती	--
175.81	8.22	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.90	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	217.80	248.93	280.06	311.19	340.06	8.93	37.80	68.93	100.06	131.19	160.06	188.93
सूर्य	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
181.59	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.19
चंद्र	तृती	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
159.94	2.54	0.00	3.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00
मंगल	--	--	--	8वां	--	--	--	--	युति	--	--	4था
110.40	0.00	0.00	0.00	5.70	0.00	0.00	0.00	0.00	4.69	0.00	0.00	3.62
बुध	युति	अष्ट	--	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति
203.39	0.61	0.66	0.00	0.00	0.00	0.57	0.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.57
गुरु	चतु	5वां	षष्ठ	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती
130.07	2.49	9.93	1.00	9.93	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	2.87
शुक्र	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--	--	--	युति
196.08	0.00	0.00	0.00	0.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.33
शनि	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	नवां
148.35	5.48	0.00	0.00	0.00	3.37	0.00	0.00	4.46	0.00	0.00	3.37	0.61
राहु	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
134.11	0.00	0.64	0.00	9.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.53	0.00	0.64
केतु	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--	--
314.11	0.00	0.00	0.00	9.53	0.00	0.64	0.00	0.64	0.00	9.53	0.00	0.00
हर्ष	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
206.14	3.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	युति	अष्ट	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--
234.80	0.00	0.91	0.92	0.00	0.00	0.20	0.00	0.91	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--	--
175.81	0.00	0.00	0.00	0.82	0.00	1.95	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	217.80	247.25	278.42	311.19	343.29	12.20	37.80	67.25	98.42	131.19	163.29	192.20
सूर्य	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
181.59	0.00	0.26	0.00	0.00	0.00	4.43	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.43
चंद्र	तृती	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
159.94	2.54	0.00	2.77	0.00	9.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.39	0.00
मंगल	--	--	--	8वां	--	--	--	--	युति	--	--	4था
110.40	0.00	0.00	0.00	5.70	0.00	0.00	0.00	0.00	3.12	0.00	0.00	6.54
बुध	युति	--	--	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति
203.39	0.61	0.00	0.00	0.00	0.00	3.89	0.61	0.00	0.00	0.00	0.00	3.89
गुरु	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती
130.07	2.49	9.57	0.00	9.93	0.00	9.75	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	2.55
शुक्र	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--	--	--	युति
196.08	0.00	0.00	0.00	0.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.19
शनि	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--
148.35	5.48	0.00	0.00	0.00	0.06	0.00	0.00	5.96	0.00	0.00	0.06	0.00
राहु	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
134.11	0.00	0.00	0.00	9.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.53	0.00	2.63
केतु	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--
314.11	0.00	0.00	0.00	9.53	0.00	2.63	0.00	0.00	0.00	9.53	0.00	0.00
हर्ष	युति	--	पंचा	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति
206.14	3.42	0.00	0.90	0.00	0.00	1.11	3.42	0.00	0.00	0.00	0.00	1.11
नेप	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
234.80	0.00	2.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.64	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	पंचा	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
175.81	0.00	0.65	0.00	0.82	2.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.57	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

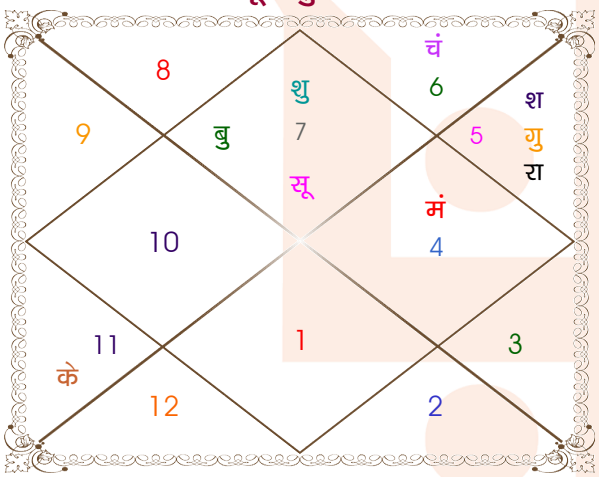

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

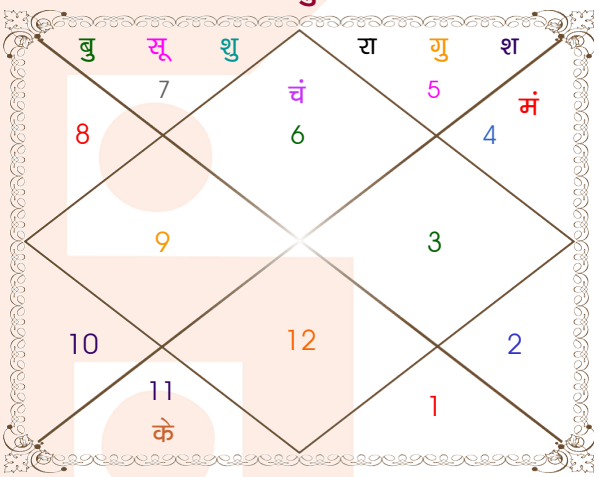

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

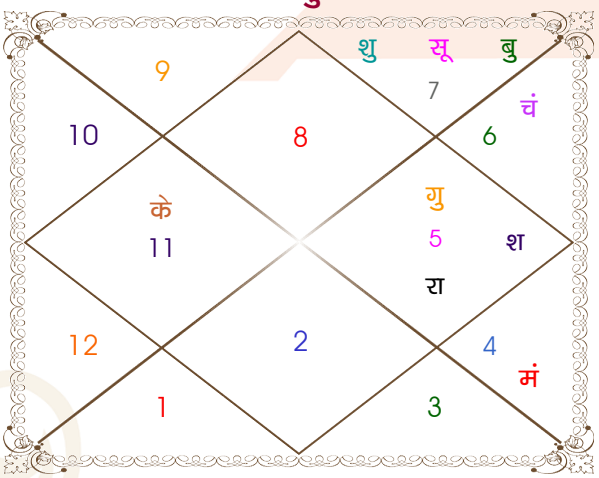

देह विचारः

होरा कुंडली

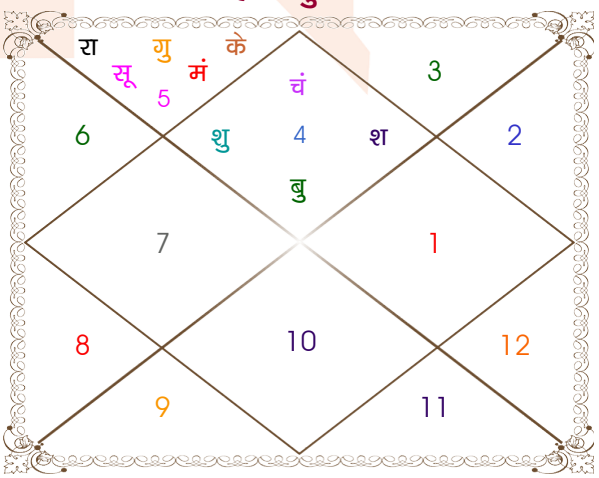

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

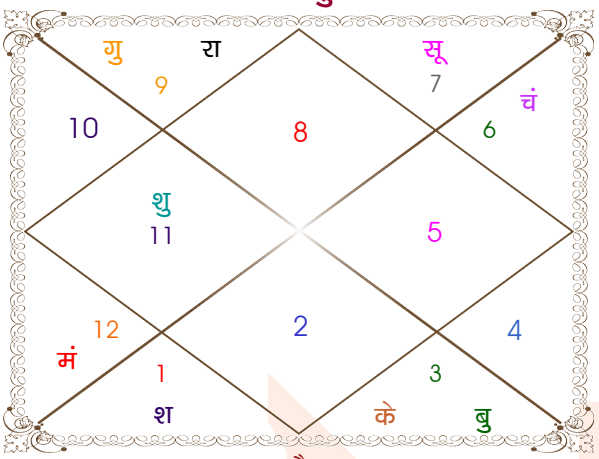

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

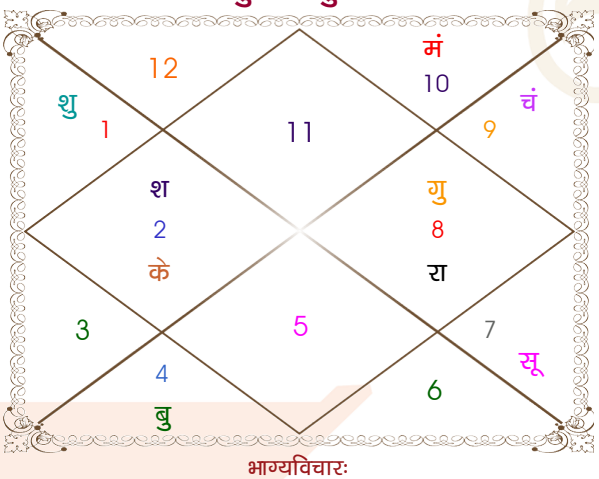

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

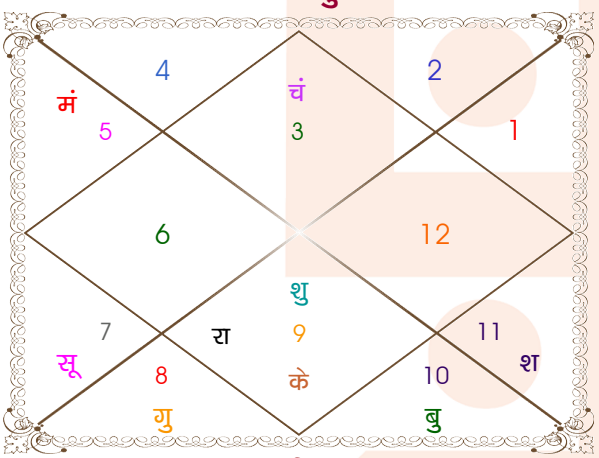

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

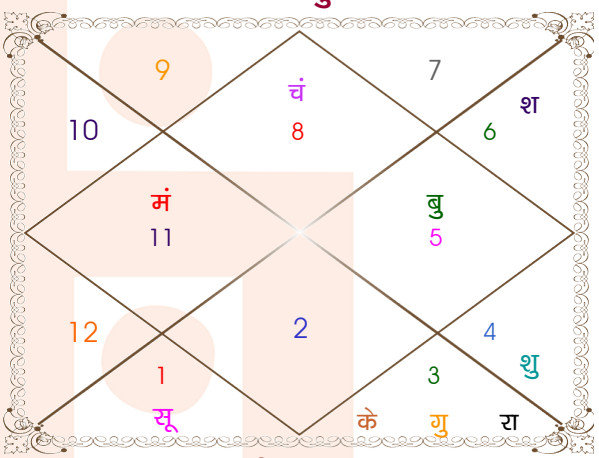

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

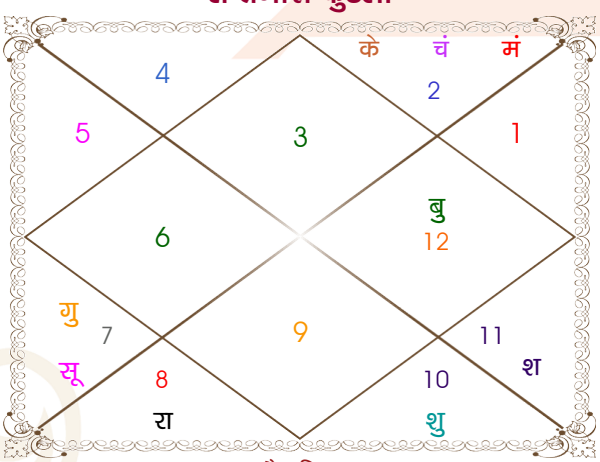

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

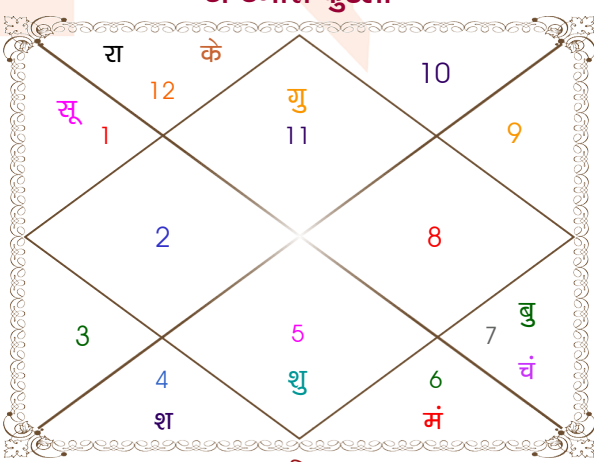

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

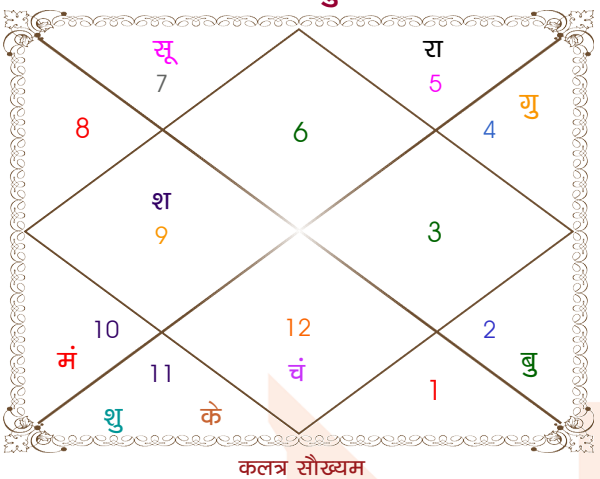

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

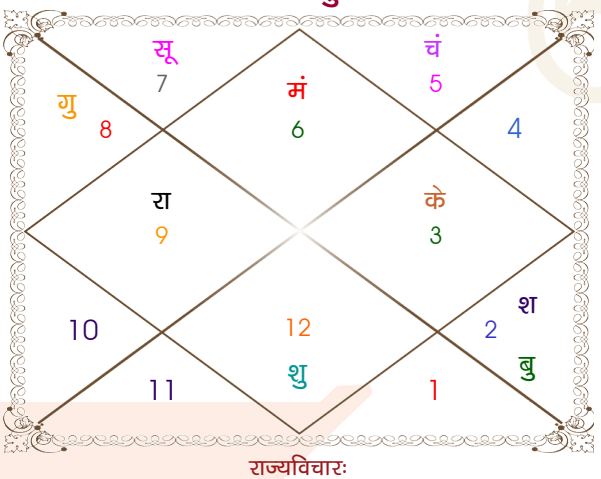

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

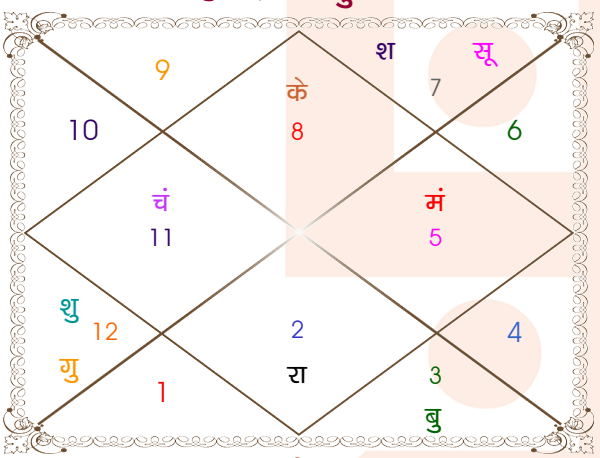

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

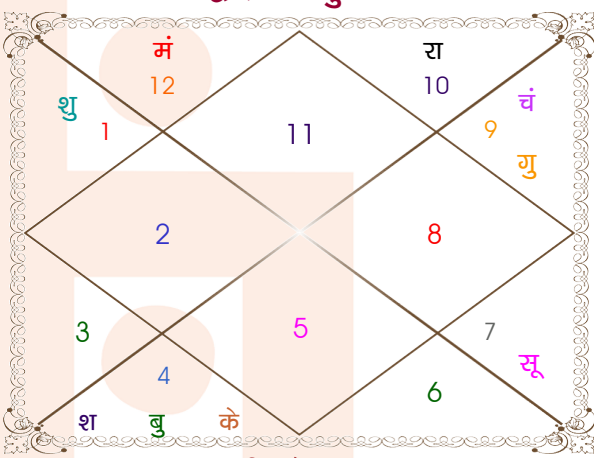

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

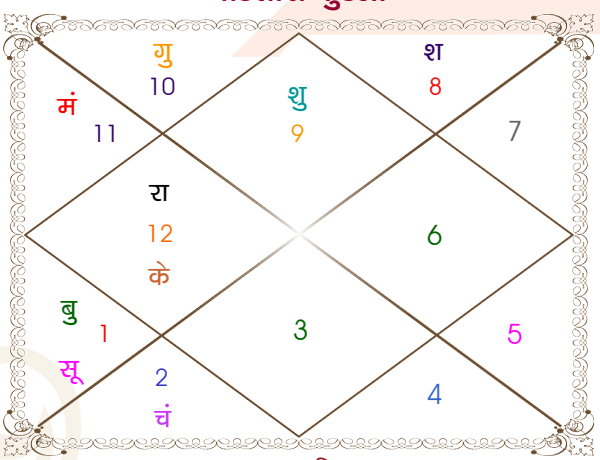

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

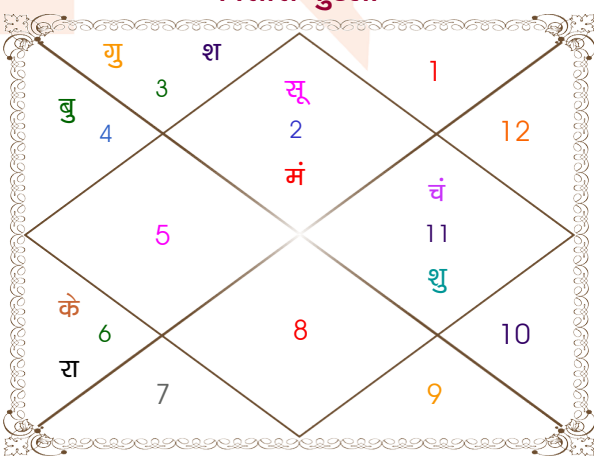

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

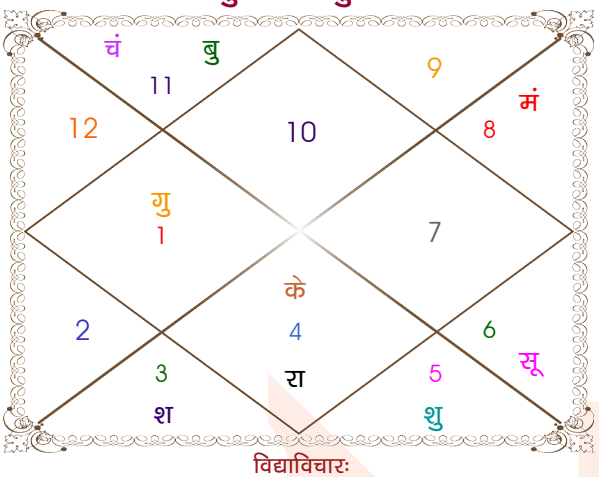

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

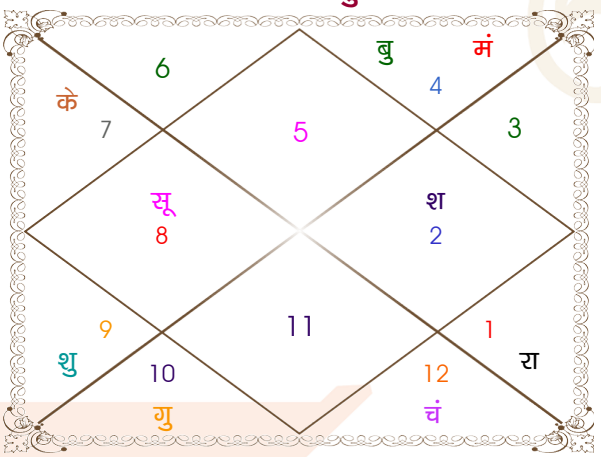

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

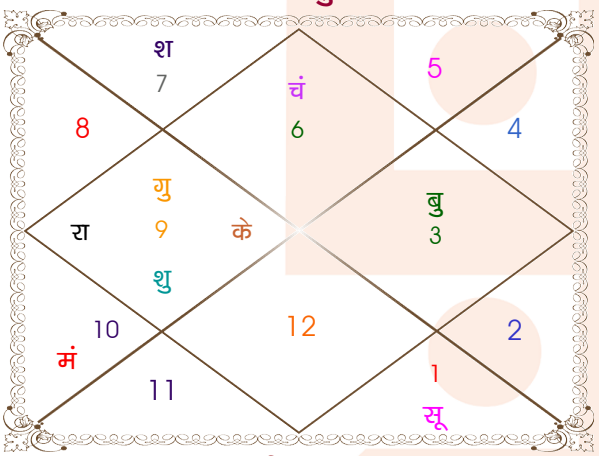

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

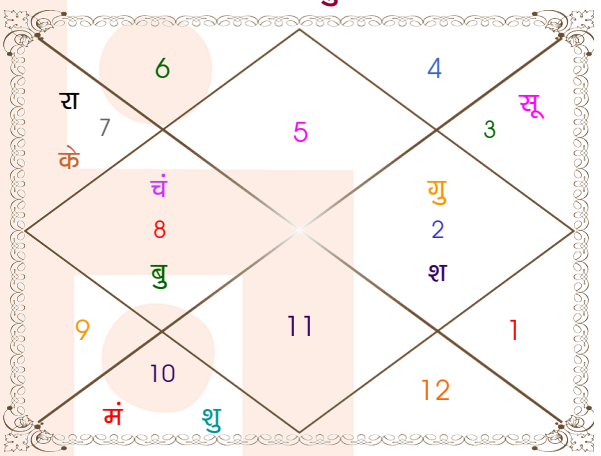

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

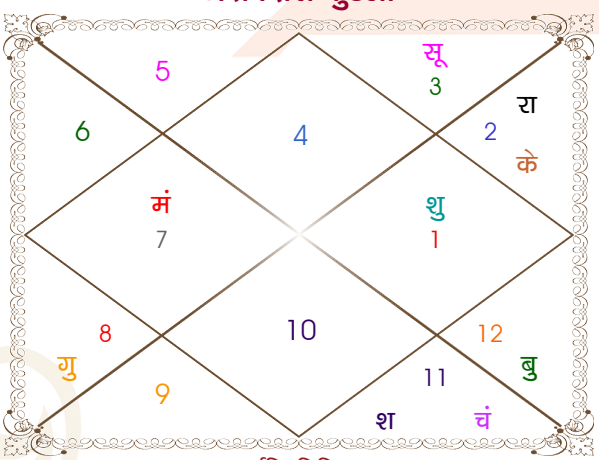

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

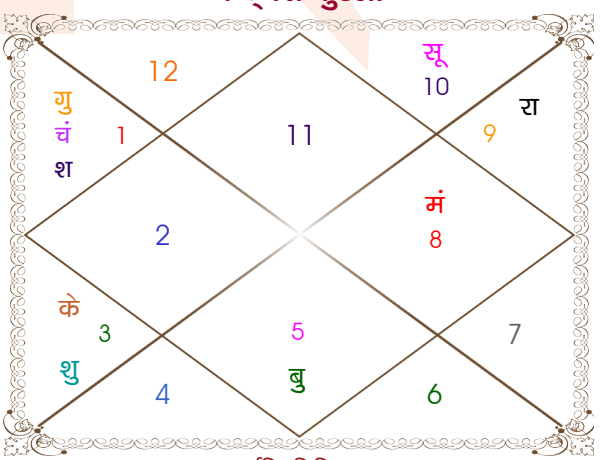

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृश्चि	तुला	कन्या	कर्क	तुला	सिंह	तुला	सिंह	सिंह	कुंभ
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	वृश्चि	तुला	कन्या	मीन	मिथु	धनु	कुंभ	मेष	धनु	मिथु
चतुर्थांश	कुंभ	तुला	धनु	मक	कर्क	वृश्चि	मेष	वृष	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	मिथु	तुला	वृष	वृष	मीन	तुला	मक	कुंभ	वृश्चि	वृष
नवमांश	कन्या	तुला	मीन	मक	वृष	कर्क	कुंभ	धनु	सिंह	कुंभ
दशमांश	कन्या	तुला	सिंह	कन्या	वृष	वृश्चि	मीन	वृष	धनु	मिथु
द्वादशांश	कुंभ	तुला	धनु	मीन	कर्क	धनु	मेष	कर्क	मक	कर्क
षोडशांश	धनु	मेष	वृष	कुंभ	मेष	मक	धनु	वृश्चि	मीन	मीन
विंशांश	वृष	वृष	कुंभ	वृष	कर्क	मिथु	कुंभ	मिथु	कन्या	कन्या
चतुर्विंशांश	मक	कन्या	कुंभ	वृश्चि	कुंभ	मेष	सिंह	मिथु	कर्क	कर्क
सप्तविंशांश	सिंह	वृश्चि	मीन	कर्क	कर्क	मक	धनु	वृष	मेष	तुला
त्रिंशांश	कन्या	मेष	कन्या	मक	मिथु	धनु	धनु	तुला	धनु	धनु
खवेदांश	सिंह	मिथु	वृश्चि	मक	वृश्चि	वृष	मक	वृष	तुला	तुला
अक्षवेदांश	कर्क	मिथु	कुंभ	तुला	मीन	वृश्चि	मेष	कुंभ	वृष	वृष
षष्ट्यंश	कुंभ	मक	मेष	वृश्चि	सिंह	मेष	मिथु	मेष	धनु	मिथु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
गुरु	4 चामर	4 चामर	4 गोपुर	4 नागपुष्प
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
केतु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	7.15	17.15	17.10	12.50	18.70	17.35	9.65	9.25	5.50
सप्तवर्ग	7.15	16.85	16.80	12.63	17.60	17.25	10.98	9.40	6.03
दशवर्ग	9.33	16.50	17.00	12.25	17.03	14.80	11.73	8.35	6.48
षोडशवर्ग	9.18	16.15	16.98	12.00	16.28	15.20	11.65	9.25	6.53

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	3	18	3	47	48	6	43
सप्तवर्गज बल	62	143	135	105	165	150	86
ओजयुग्मक बल	30	30	0	15	15	0	30
केन्द्र बल	15	30	15	15	60	15	60
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	125	220	153	182	288	171	219
कुल दिग्बल	43	10	53	55	31	22	23
नतोन्नत बल	44	16	16	60	44	44	16
पक्ष बल	53	106	53	53	7	7	53
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	34	32	52	52	43	11	26
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	132	213	120	240	155	138	94
कुल चेष्टाबल	0	0	32	30	20	9	14
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-4	-2	-2	-12	-1	-8	-1
कुल षट्बल	355	492	373	521	527	375	358
रूप षट्बल	5.9	8.2	6.2	8.7	8.8	6.2	6.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.2	1.4	1.2	1.2	1.4	1.1	1.2
संबंधित पद	6	1	3	4	2	7	5

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	7.78	11.30	9.06	37.72	30.91	7.71	24.24
कष्ट फल	46.86	47.26	39.85	19.55	21.68	52.12	28.22

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	373	527	358	358	527	373	375	521	492	355	521	375
भावदिग्बल	0	50	10	30	50	20	30	10	10	60	40	50
भावदृष्टि बल	8	12	39	79	15	33	85	22	23	7	-2	5
कुल भाव बल	381	589	407	467	592	425	490	553	525	422	558	430
रूप भाव बल	6.4	9.8	6.8	7.8	9.9	7.1	8.2	9.2	8.8	7.0	9.3	7.2
संबंधित पद	12	2	11	7	1	9	6	4	5	10	3	8

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

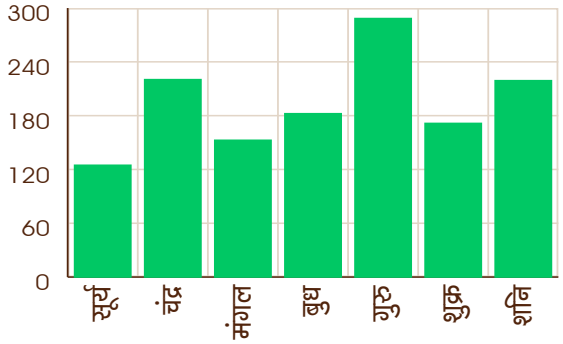

दिग्बल

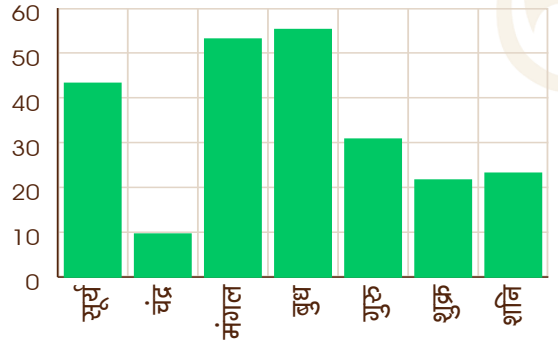

कालबल

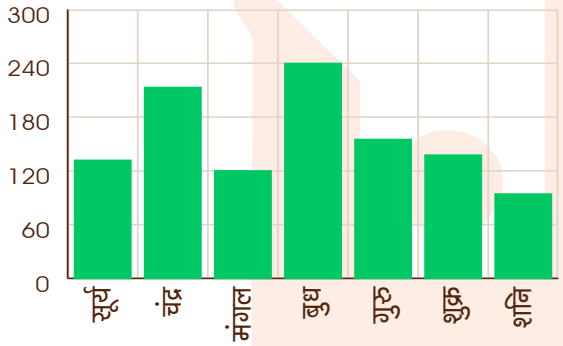

चेष्टाबल

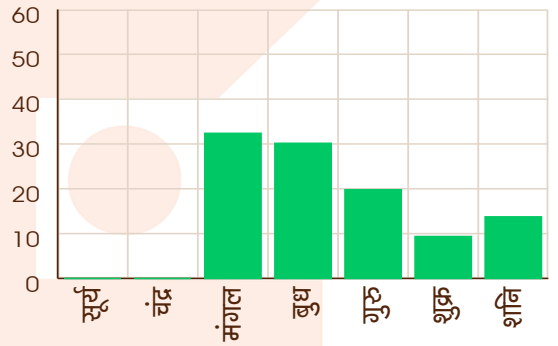

नैसर्गिक बल

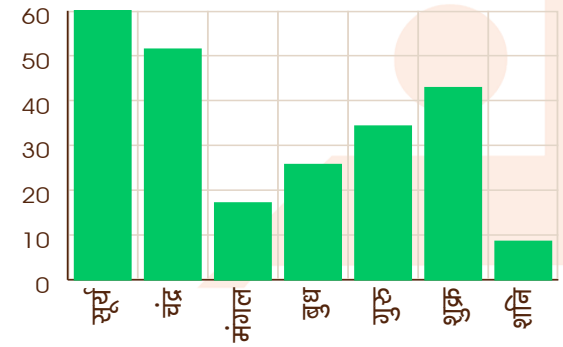

दृग्बल

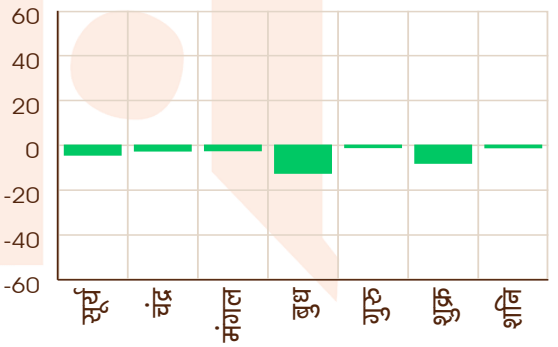

रूप षट्बल

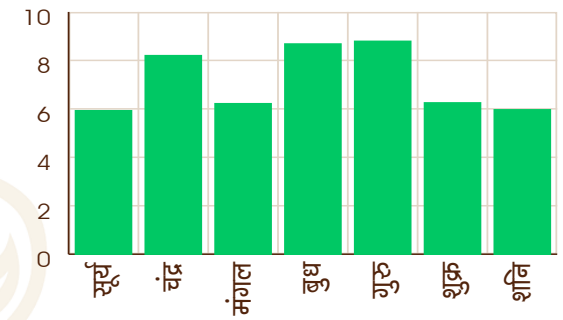

न्यूनतम षट्बल

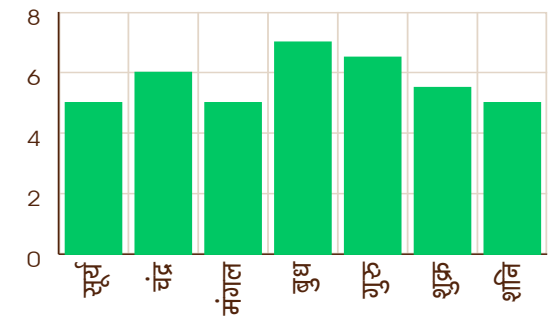

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

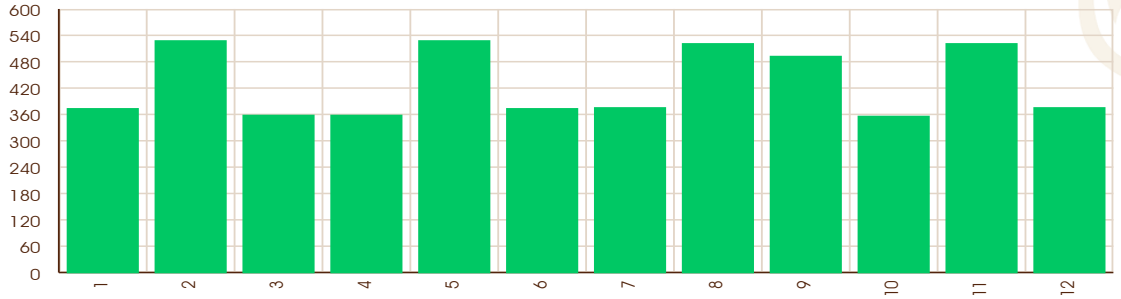

भावदिग्बल

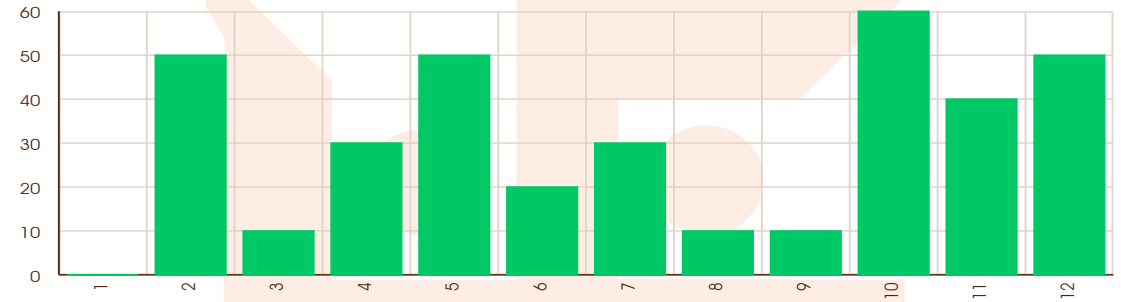

भावदृष्टि बल

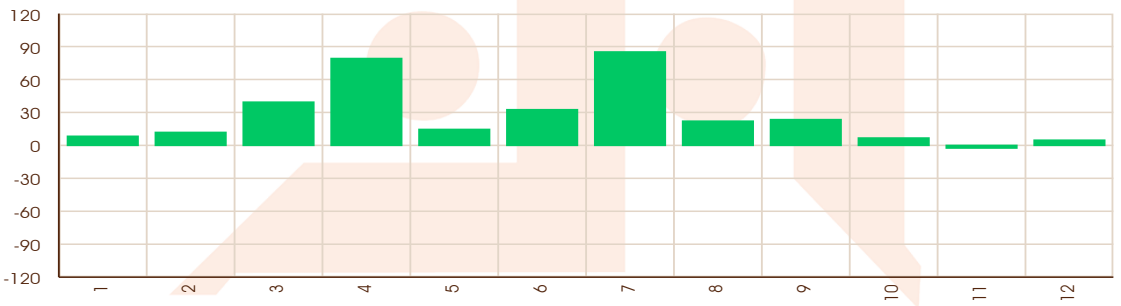

भाव बल

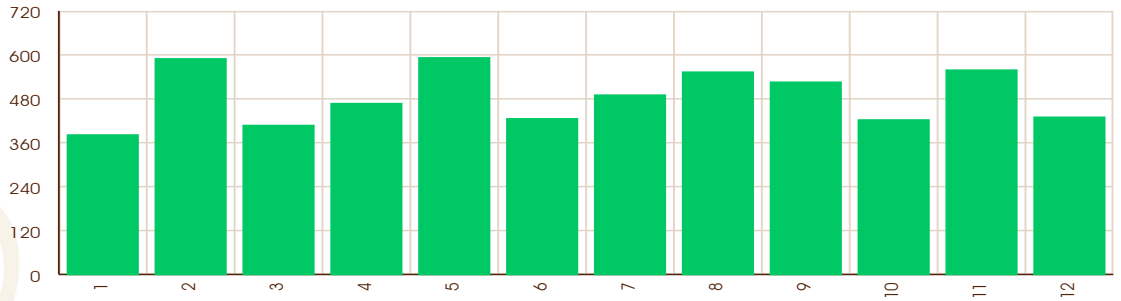

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

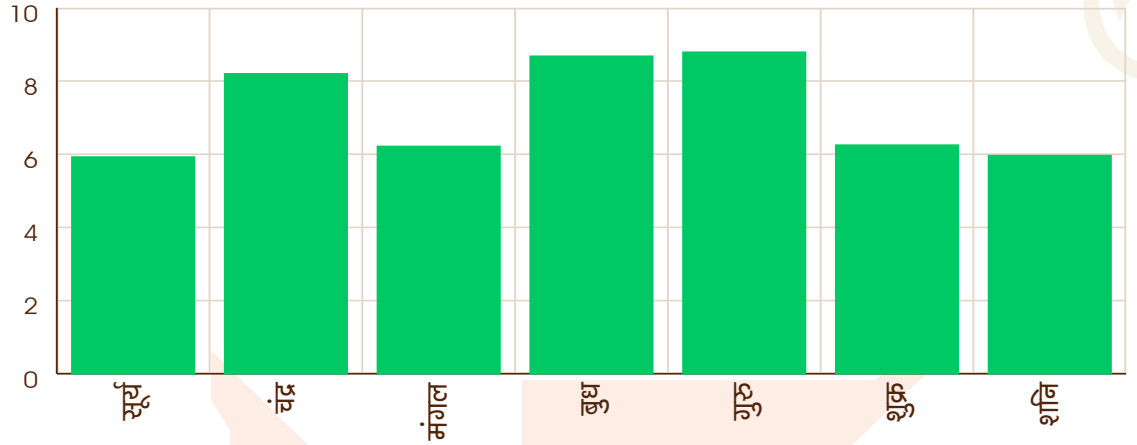

इष्ट - कष्ट फल

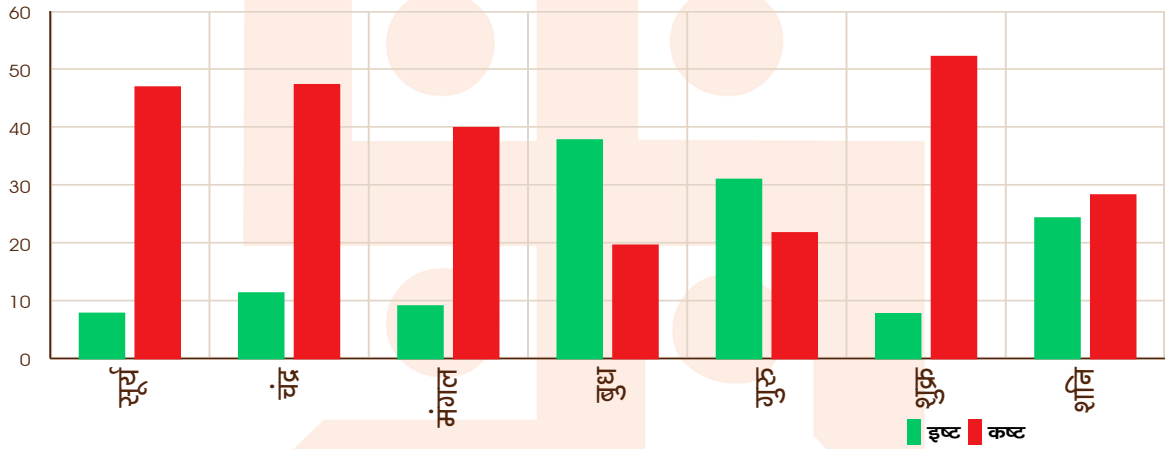

रूप भाव बल

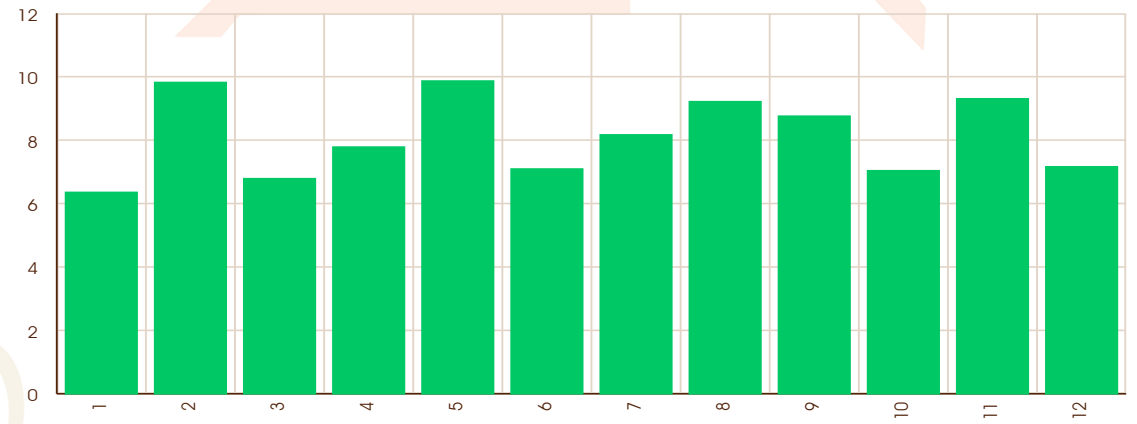

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृश्चि	07:48:16	--	--	अनुराधा	2	17
गुलिक	गु	वृश्चि	10:39:58	--	--	अनुराधा	3	17
काल	का	वृश्चि	29:59:48	--	--	ज्येष्ठा	4	18
मृत्यु	मृ	मक	12:42:05	--	--	श्रवण	1	22
यमघंटक	यम	मीन	05:22:10	--	--	उ०भाद्रपद	1	26
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कुंभ	08:08:33	--	--	शतभिषा	1	24
धूम	धू	कुंभ	14:55:26	नीच	--	शतभिषा	3	24
व्यतिपात	व्य	वृष	15:04:34	नीच	--	रोहिणी	2	4
परिवेश	परि	वृश्चि	15:04:34	--	--	अनुराधा	4	17
इन्द्रचाप	इ	सिंह	14:55:26	--	--	पू०फाल्गुनी	1	11
उपकेतु	उप	कन्या	01:35:26	--	--	उ०फाल्गुनी	2	12

प्राणपद	:	मक	06:38:48	कारकाँश लग्न	:	धनु	15:08:07
भाव लग्न	:	धनु	18:33:26	होरा लग्न	:	मक	29:18:37
घटी लग्न	:	मेष	25:21:16	वर्णद लग्न	:	तुला	22:53:07

उपग्रह कुंडली

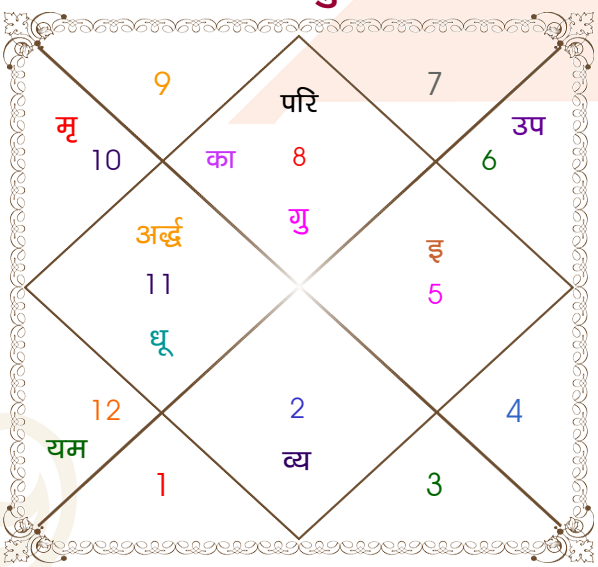

आरूढ़ कुंडली

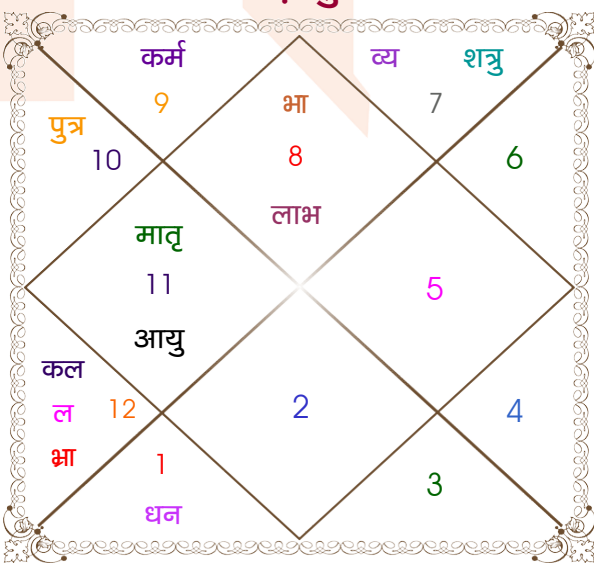

षन्नाडी चक्र

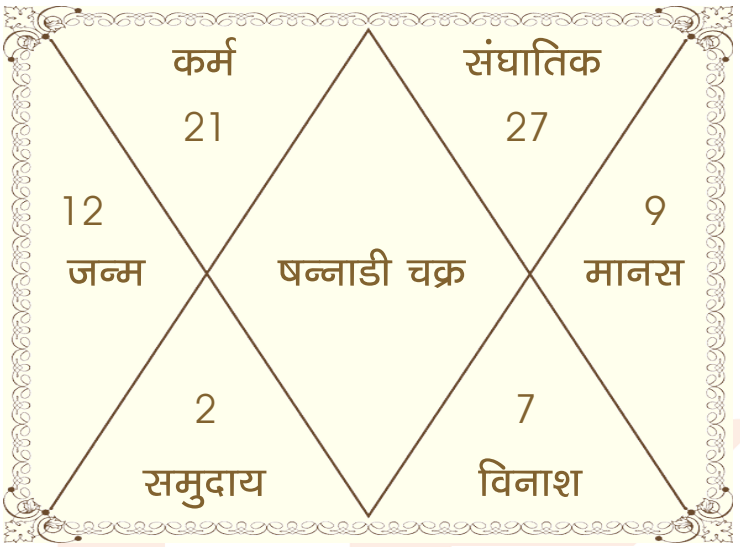

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	3	3	2	4	5	4	6	3	5	4	5	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
कुल	4	2	3	5	4	4	3	5	5	4	4	6	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
कुल	4	6	2	1	3	2	3	5	4	3	4	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	4	3	4	3	7	5	4	3	7	4	6	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
कुल	6	2	6	5	3	5	5	5	3	5	4	7	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	4	4	7	3	3	5	3	6	6	3	4	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	4	4	2	4	3	4	2	2	3	3	4	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
गुरु	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	4	6	3	2	3	5	4	4	6	4	3	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	3	4	4	4	4	2	4	3	4	2	2	39
गुरु	3	5	4	7	6	2	6	5	3	5	5	5	56
मंगल	3	4	2	4	6	2	1	3	2	3	5	4	39
सूर्य	6	3	5	4	5	4	3	3	2	4	5	4	48
शुक्र	3	6	6	3	4	4	4	4	7	3	3	5	52
बुध	4	3	7	4	6	4	4	3	4	3	7	5	54
चंद्र	5	5	4	4	6	4	2	3	5	4	4	3	49
बिन्दु	27	29	32	30	37	24	22	25	26	26	31	28	337
रेखा	29	27	24	26	19	32	34	31	30	30	25	28	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	2	2	1	1	0	2	0	1	0	0	9
गुरु	0	3	0	2	3	0	2	0	0	3	1	0	14
मंगल	1	2	1	1	4	0	0	0	0	1	4	1	15
सूर्य	4	0	2	1	3	1	0	0	0	1	2	1	15
शुक्र	0	3	3	0	1	1	1	1	4	0	0	2	16
बुध	0	0	3	1	2	1	0	0	0	0	3	2	12
चंद्र	0	1	2	1	1	0	0	0	0	0	2	0	7
रेखा	5	9	13	8	15	4	3	3	4	6	12	6	88

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	2	1	1	0	2	0	1	0	0	8
गुरु	0	1	0	2	3	0	2	0	0	2	1	0	11
मंगल	1	2	1	1	4	0	0	0	0	1	3	1	14
सूर्य	4	0	1	1	3	1	0	0	0	1	1	1	13
शुक्र	0	2	2	0	1	1	1	1	2	0	0	2	12
बुध	0	0	2	1	2	1	0	0	0	0	3	2	11
चंद्र	0	1	2	1	1	0	0	0	0	0	2	0	7
रेखा	5	6	9	8	15	4	3	3	2	5	10	6	76

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	103	62	129	102	83	108	52
ग्रह पिंड	58	23	68	43	95	37	36
शोध्य पिंड	161	85	197	145	178	145	88

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

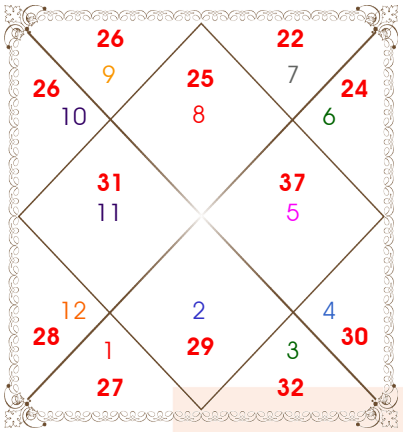

सूर्य का अष्टकवर्ग

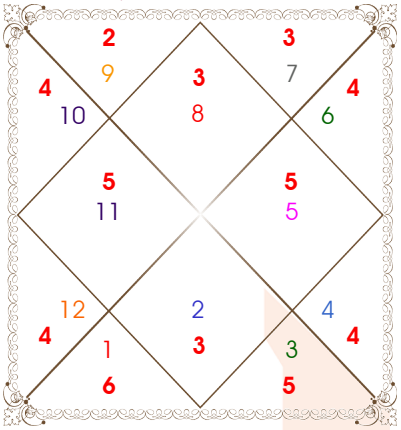

चंद्र का अष्टकवर्ग

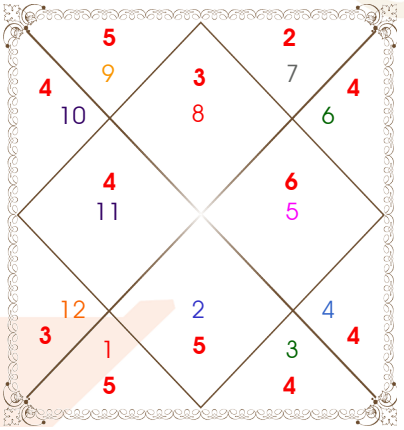

मंगल का अष्टकवर्ग

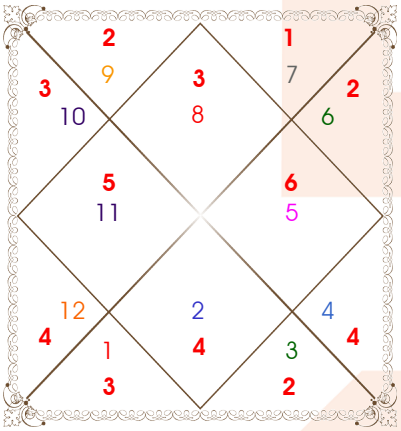

बुध का अष्टकवर्ग

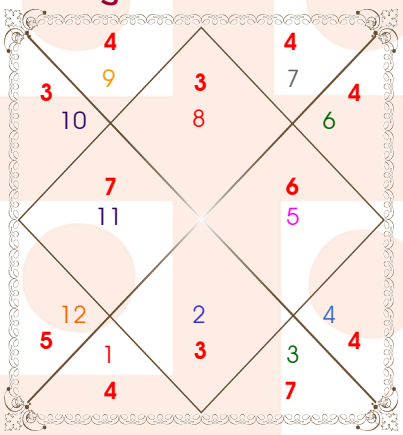

गुरू का अष्टकवर्ग

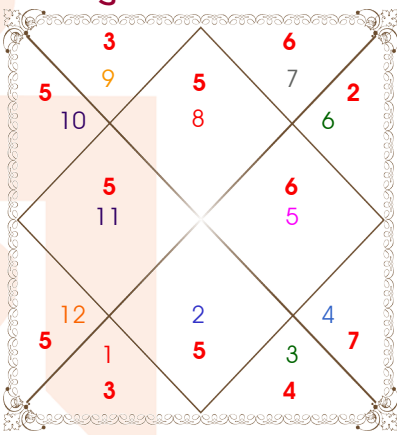

शुक्र का अष्टकवर्ग

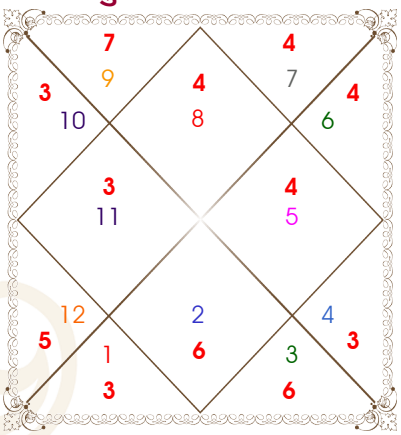

शनि का अष्टकवर्ग

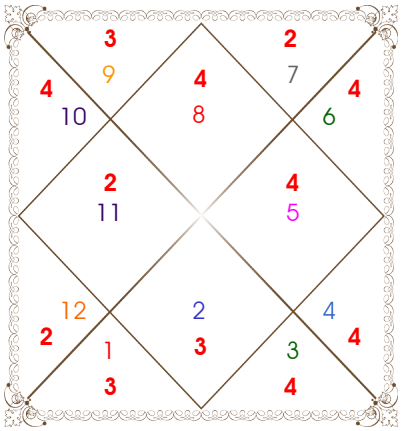

लग्न का अष्टकवर्ग

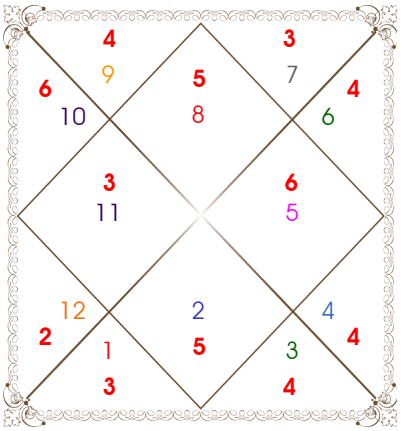

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

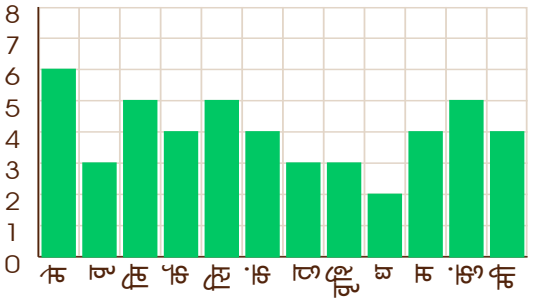

चन्द्र

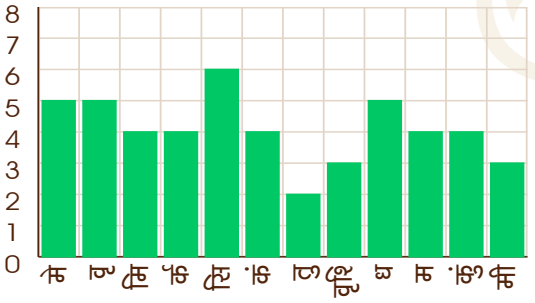

मंगल

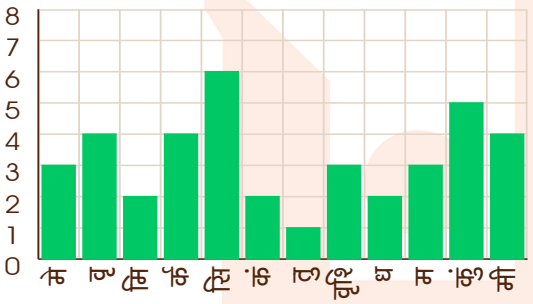

बुध

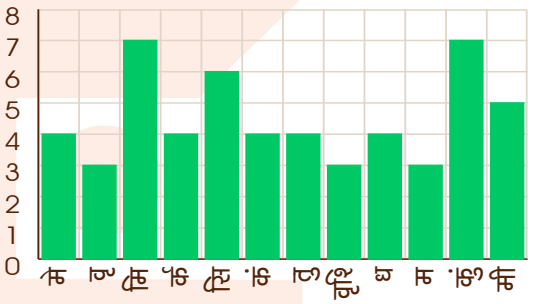

गुरु

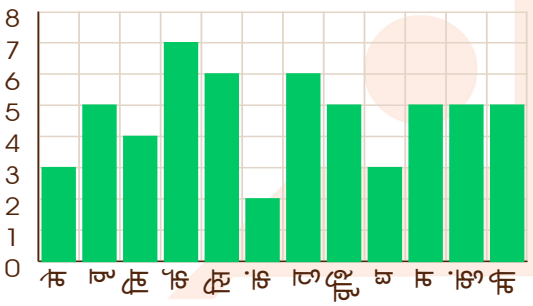

शुक्र

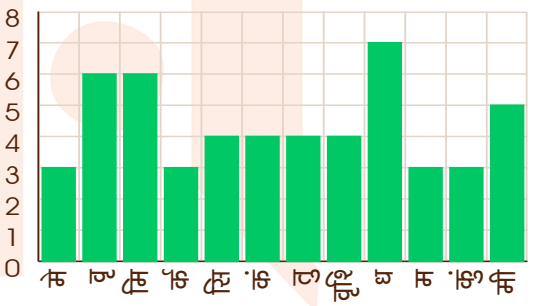

शनि

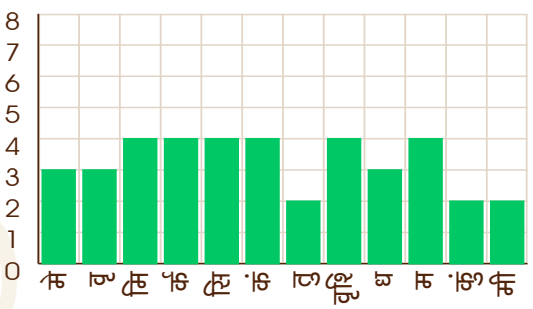

लग्न

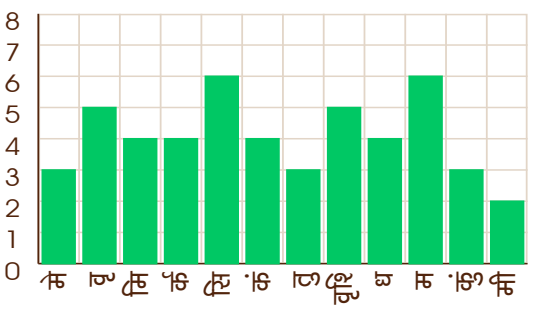

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

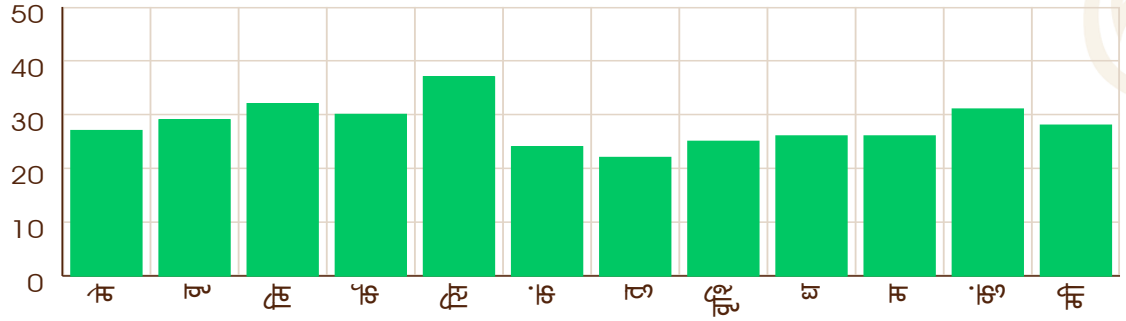

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

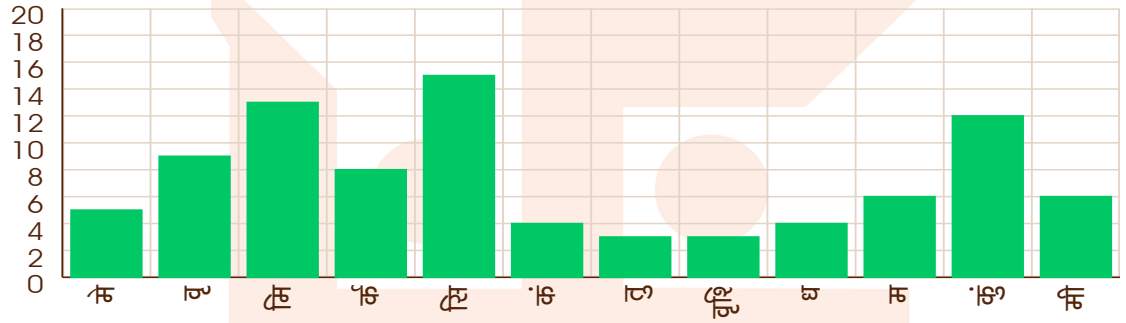

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

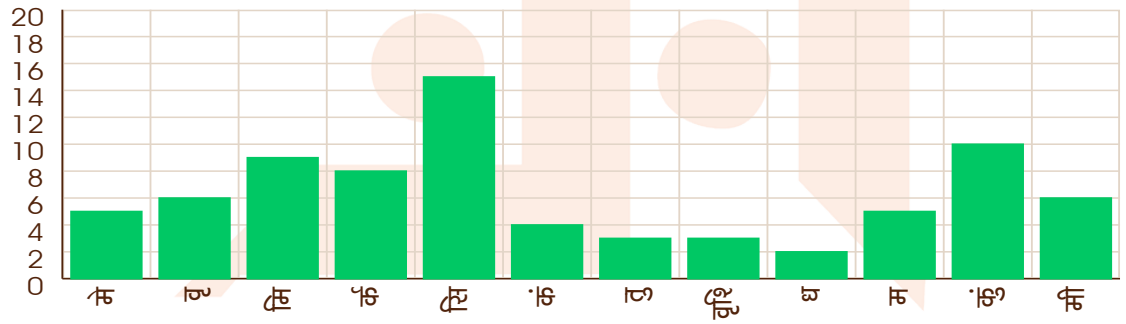

शोध्य पिंड

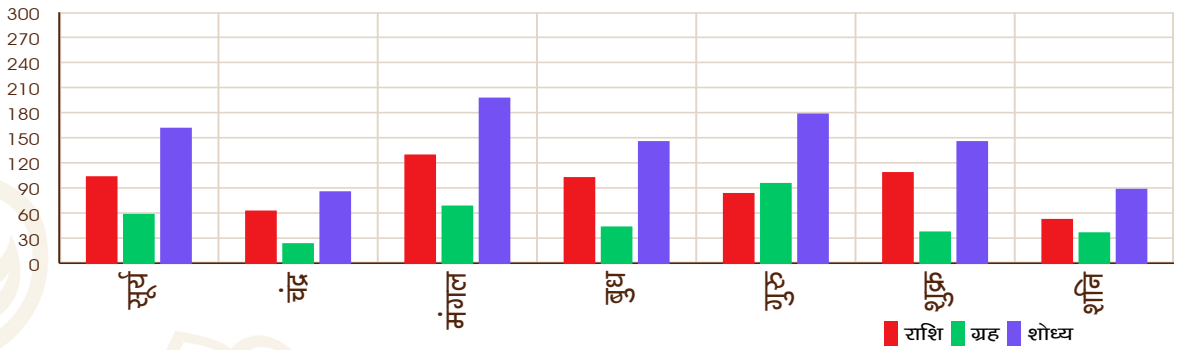

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 0 वर्ष 0 मास 9 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
19/10/1979		29/10/1979		28/10/1989		28/10/1996		29/10/2014	
29/10/1979		28/10/1989		28/10/1996		29/10/2014		29/10/2030	
	00/00/0000	चंद्र	28/08/1980	मंगल	27/03/1990	राहु	11/07/1999	गुरु	16/12/2016
	00/00/0000	मंगल	29/03/1981	राहु	14/04/1991	गुरु	04/12/2001	शनि	29/06/2019
	00/00/0000	राहु	28/09/1982	गुरु	20/03/1992	शनि	10/10/2004	बुध	04/10/2021
	00/00/0000	गुरु	28/01/1984	शनि	29/04/1993	बुध	29/04/2007	केतु	10/09/2022
	00/00/0000	शनि	29/08/1985	बुध	26/04/1994	केतु	17/05/2008	शुक्र	11/05/2025
	00/00/0000	बुध	28/01/1987	केतु	22/09/1994	शुक्र	18/05/2011	सूर्य	27/02/2026
	00/00/0000	केतु	29/08/1987	शुक्र	22/11/1995	सूर्य	10/04/2012	चंद्र	29/06/2027
	19/10/1979	शुक्र	29/04/1989	सूर्य	29/03/1996	चंद्र	10/10/2013	मंगल	04/06/2028
शुक्र	29/10/1979	सूर्य	28/10/1989	चंद्र	28/10/1996	मंगल	29/10/2014	राहु	29/10/2030

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
29/10/2030		28/10/2049		29/10/2066		28/10/2073		28/10/2093	
28/10/2049		29/10/2066		28/10/2073		28/10/2093		19/10/2099	
शनि	31/10/2033	बुध	26/03/2052	केतु	27/03/2067	शुक्र	27/02/2077	सूर्य	15/02/2094
बुध	11/07/2036	केतु	23/03/2053	शुक्र	26/05/2068	सूर्य	27/02/2078	चंद्र	17/08/2094
केतु	19/08/2037	शुक्र	22/01/2056	सूर्य	01/10/2068	चंद्र	29/10/2079	मंगल	22/12/2094
शुक्र	19/10/2040	सूर्य	28/11/2056	चंद्र	02/05/2069	मंगल	28/12/2080	राहु	16/11/2095
सूर्य	01/10/2041	चंद्र	29/04/2058	मंगल	28/09/2069	राहु	29/12/2083	गुरु	03/09/2096
चंद्र	02/05/2043	मंगल	26/04/2059	राहु	16/10/2070	गुरु	29/08/2086	शनि	16/08/2097
मंगल	10/06/2044	राहु	13/11/2061	गुरु	22/09/2071	शनि	28/10/2089	बुध	23/06/2098
राहु	17/04/2047	गुरु	18/02/2064	शनि	31/10/2072	बुध	28/08/2092	केतु	29/10/2098
गुरु	28/10/2049	शनि	29/10/2066	बुध	28/10/2073	केतु	28/10/2093	शुक्र	19/10/2099

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 0 वर्ष 0 मा 10 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
19/10/1979		29/10/1979		28/08/1980		29/03/1981		28/09/1982	
29/10/1979		28/08/1980		29/03/1981		28/09/1982		28/01/1984	
00/00/0000		चंद्र	23/11/1979	मंगल	10/09/1980	राहु	19/06/1981	गुरु	02/12/1982
00/00/0000		मंगल	11/12/1979	राहु	12/10/1980	गुरु	01/09/1981	शनि	17/02/1983
00/00/0000		राहु	26/01/1980	गुरु	09/11/1980	शनि	26/11/1981	बुध	27/04/1983
00/00/0000		गुरु	06/03/1980	शनि	13/12/1980	बुध	12/02/1982	केतु	26/05/1983
00/00/0000		शनि	23/04/1980	बुध	12/01/1981	केतु	16/03/1982	शुक्र	15/08/1983
00/00/0000		बुध	06/06/1980	केतु	24/01/1981	शुक्र	15/06/1982	सूर्य	08/09/1983
00/00/0000		केतु	23/06/1980	शुक्र	01/03/1981	सूर्य	13/07/1982	चंद्र	19/10/1983
19/10/1979		शुक्र	13/08/1980	सूर्य	12/03/1981	चंद्र	27/08/1982	मंगल	16/11/1983
केतु	29/10/1979	सूर्य	28/08/1980	चंद्र	29/03/1981	मंगल	28/09/1982	राहु	28/01/1984

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
28/01/1984		29/08/1985		28/01/1987		29/08/1987		29/04/1989	
29/08/1985		28/01/1987		29/08/1987		29/04/1989		28/10/1989	
शनि	29/04/1984	बुध	10/11/1985	केतु	09/02/1987	शुक्र	08/12/1987	सूर्य	08/05/1989
बुध	20/07/1984	केतु	10/12/1985	शुक्र	17/03/1987	सूर्य	08/01/1988	चंद्र	23/05/1989
केतु	22/08/1984	शुक्र	06/03/1986	सूर्य	28/03/1987	चंद्र	28/02/1988	मंगल	03/06/1989
शुक्र	27/11/1984	सूर्य	01/04/1986	चंद्र	14/04/1987	मंगल	03/04/1988	राहु	30/06/1989
सूर्य	26/12/1984	चंद्र	14/05/1986	मंगल	27/04/1987	राहु	03/07/1988	गुरु	24/07/1989
चंद्र	12/02/1985	मंगल	13/06/1986	राहु	29/05/1987	गुरु	23/09/1988	शनि	22/08/1989
मंगल	18/03/1985	राहु	30/08/1986	गुरु	26/06/1987	शनि	28/12/1988	बुध	17/09/1989
राहु	12/06/1985	गुरु	07/11/1986	शनि	30/07/1987	बुध	24/03/1989	केतु	28/09/1989
गुरु	29/08/1985	शनि	28/01/1987	बुध	29/08/1987	केतु	29/04/1989	शुक्र	28/10/1989

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
28/10/1989		27/03/1990		14/04/1991		20/03/1992		29/04/1993	
27/03/1990		14/04/1991		20/03/1992		29/04/1993		26/04/1994	
मंगल	06/11/1989	राहु	23/05/1990	गुरु	29/05/1991	शनि	23/05/1992	बुध	19/06/1993
राहु	28/11/1989	गुरु	13/07/1990	शनि	22/07/1991	बुध	19/07/1992	केतु	10/07/1993
गुरु	18/12/1989	शनि	12/09/1990	बुध	09/09/1991	केतु	12/08/1992	शुक्र	09/09/1993
शनि	11/01/1990	बुध	05/11/1990	केतु	29/09/1991	शुक्र	18/10/1992	सूर्य	27/09/1993
बुध	01/02/1990	केतु	28/11/1990	शुक्र	24/11/1991	सूर्य	08/11/1992	चंद्र	27/10/1993
केतु	10/02/1990	शुक्र	31/01/1991	सूर्य	12/12/1991	चंद्र	11/12/1992	मंगल	17/11/1993
शुक्र	07/03/1990	सूर्य	19/02/1991	चंद्र	09/01/1992	मंगल	04/01/1993	राहु	10/01/1994
सूर्य	14/03/1990	चंद्र	23/03/1991	मंगल	29/01/1992	राहु	06/03/1993	गुरु	28/02/1994
चंद्र	27/03/1990	मंगल	14/04/1991	राहु	20/03/1992	गुरु	29/04/1993	शनि	26/04/1994

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - केतु	
26/04/1994	
22/09/1994	
केतु	05/05/1994
शुक्र	30/05/1994
सूर्य	06/06/1994
चंद्र	18/06/1994
मंगल	27/06/1994
राहु	19/07/1994
गुरु	08/08/1994
शनि	01/09/1994
बुध	22/09/1994

मंगल - शुक्र	
22/09/1994	
22/11/1995	
शुक्र	02/12/1994
सूर्य	23/12/1994
चंद्र	28/01/1995
मंगल	22/02/1995
राहु	27/04/1995
गुरु	23/06/1995
शनि	29/08/1995
बुध	28/10/1995
केतु	22/11/1995

मंगल - सूर्य	
22/11/1995	
29/03/1996	
सूर्य	29/11/1995
चंद्र	09/12/1995
मंगल	17/12/1995
राहु	05/01/1996
गुरु	22/01/1996
शनि	11/02/1996
बुध	29/02/1996
केतु	08/03/1996
शुक्र	29/03/1996

मंगल - चंद्र	
29/03/1996	
28/10/1996	
चंद्र	16/04/1996
मंगल	28/04/1996
राहु	30/05/1996
गुरु	28/06/1996
शनि	31/07/1996
बुध	31/08/1996
केतु	12/09/1996
शुक्र	17/10/1996
सूर्य	28/10/1996

राहु - राहु	
28/10/1996	
11/07/1999	
राहु	25/03/1997
गुरु	04/08/1997
शनि	07/01/1998
बुध	26/05/1998
केतु	23/07/1998
शुक्र	03/01/1999
सूर्य	22/02/1999
चंद्र	15/05/1999
मंगल	11/07/1999

राहु - गुरु	
11/07/1999	
04/12/2001	
गुरु	05/11/1999
शनि	23/03/2000
बुध	25/07/2000
केतु	14/09/2000
शुक्र	07/02/2001
सूर्य	23/03/2001
चंद्र	04/06/2001
मंगल	25/07/2001
राहु	04/12/2001

राहु - शनि	
04/12/2001	
10/10/2004	
शनि	18/05/2002
बुध	12/10/2002
केतु	12/12/2002
शुक्र	03/06/2003
सूर्य	25/07/2003
चंद्र	20/10/2003
मंगल	20/12/2003
राहु	24/05/2004
गुरु	10/10/2004

राहु - बुध	
10/10/2004	
29/04/2007	
बुध	19/02/2005
केतु	14/04/2005
शुक्र	16/09/2005
सूर्य	02/11/2005
चंद्र	19/01/2006
मंगल	14/03/2006
राहु	01/08/2006
गुरु	03/12/2006
शनि	29/04/2007

राहु - केतु	
29/04/2007	
17/05/2008	
केतु	22/05/2007
शुक्र	25/07/2007
सूर्य	13/08/2007
चंद्र	14/09/2007
मंगल	06/10/2007
राहु	03/12/2007
गुरु	23/01/2008
शनि	23/03/2008
बुध	17/05/2008

राहु - शुक्र	
17/05/2008	
18/05/2011	
शुक्र	15/11/2008
सूर्य	09/01/2009
चंद्र	10/04/2009
मंगल	13/06/2009
राहु	25/11/2009
गुरु	20/04/2010
शनि	10/10/2010
बुध	15/03/2011
केतु	18/05/2011

राहु - सूर्य	
18/05/2011	
10/04/2012	
सूर्य	03/06/2011
चंद्र	30/06/2011
मंगल	20/07/2011
राहु	07/09/2011
गुरु	21/10/2011
शनि	12/12/2011
बुध	27/01/2012
केतु	15/02/2012
शुक्र	10/04/2012

राहु - चंद्र	
10/04/2012	
10/10/2013	
चंद्र	26/05/2012
मंगल	27/06/2012
राहु	17/09/2012
गुरु	29/11/2012
शनि	24/02/2013
बुध	12/05/2013
केतु	13/06/2013
शुक्र	13/09/2013
सूर्य	10/10/2013

राहु - मंगल	
10/10/2013	
29/10/2014	
मंगल	01/11/2013
राहु	29/12/2013
गुरु	18/02/2014
शनि	20/04/2014
बुध	13/06/2014
केतु	06/07/2014
शुक्र	07/09/2014
सूर्य	27/09/2014
चंद्र	29/10/2014

गुरु - गुरु	
29/10/2014	
16/12/2016	
गुरु	10/02/2015
शनि	13/06/2015
बुध	01/10/2015
केतु	16/11/2015
शुक्र	25/03/2016
सूर्य	03/05/2016
चंद्र	06/07/2016
मंगल	21/08/2016
राहु	16/12/2016

गुरु - शनि	
16/12/2016	
29/06/2019	
शनि	11/05/2017
बुध	19/09/2017
केतु	12/11/2017
शुक्र	16/04/2018
सूर्य	01/06/2018
चंद्र	17/08/2018
मंगल	10/10/2018
राहु	26/02/2019
गुरु	29/06/2019

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
29/06/2019		04/10/2021		10/09/2022		11/05/2025		27/02/2026	
04/10/2021		10/09/2022		11/05/2025		27/02/2026		29/06/2027	
बुध	24/10/2019	केतु	24/10/2021	शुक्र	19/02/2023	सूर्य	26/05/2025	चंद्र	09/04/2026
केतु	12/12/2019	शुक्र	20/12/2021	सूर्य	09/04/2023	चंद्र	19/06/2025	मंगल	07/05/2026
शुक्र	28/04/2020	सूर्य	06/01/2022	चंद्र	29/06/2023	मंगल	06/07/2025	राहु	19/07/2026
सूर्य	08/06/2020	चंद्र	03/02/2022	मंगल	25/08/2023	राहु	19/08/2025	गुरु	22/09/2026
चंद्र	16/08/2020	मंगल	23/02/2022	राहु	18/01/2024	गुरु	27/09/2025	शनि	08/12/2026
मंगल	03/10/2020	राहु	15/04/2022	गुरु	27/05/2024	शनि	12/11/2025	बुध	15/02/2027
राहु	05/02/2021	गुरु	31/05/2022	शनि	28/10/2024	बुध	23/12/2025	केतु	16/03/2027
गुरु	26/05/2021	शनि	24/07/2022	बुध	15/03/2025	केतु	09/01/2026	शुक्र	05/06/2027
शनि	04/10/2021	बुध	10/09/2022	केतु	11/05/2025	शुक्र	27/02/2026	सूर्य	29/06/2027

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
29/06/2027		04/06/2028		29/10/2030		31/10/2033		11/07/2036	
04/06/2028		29/10/2030		31/10/2033		11/07/2036		19/08/2037	
मंगल	19/07/2027	राहु	14/10/2028	शनि	21/04/2031	बुध	20/03/2034	केतु	03/08/2036
राहु	08/09/2027	गुरु	07/02/2029	बुध	23/09/2031	केतु	16/05/2034	शुक्र	10/10/2036
गुरु	24/10/2027	शनि	26/06/2029	केतु	26/11/2031	शुक्र	27/10/2034	सूर्य	30/10/2036
शनि	17/12/2027	बुध	28/10/2029	शुक्र	27/05/2032	सूर्य	15/12/2034	चंद्र	03/12/2036
बुध	03/02/2028	केतु	19/12/2029	सूर्य	21/07/2032	चंद्र	07/03/2035	मंगल	26/12/2036
केतु	23/02/2028	शुक्र	14/05/2030	चंद्र	21/10/2032	मंगल	03/05/2035	राहु	25/02/2037
शुक्र	20/04/2028	सूर्य	26/06/2030	मंगल	24/12/2032	राहु	28/09/2035	गुरु	20/04/2037
सूर्य	07/05/2028	चंद्र	07/09/2030	राहु	07/06/2033	गुरु	06/02/2036	शनि	23/06/2037
चंद्र	04/06/2028	मंगल	29/10/2030	गुरु	31/10/2033	शनि	11/07/2036	बुध	19/08/2037

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
19/08/2037		19/10/2040		01/10/2041		02/05/2043		10/06/2044	
19/10/2040		01/10/2041		02/05/2043		10/06/2044		17/04/2047	
शुक्र	28/02/2038	सूर्य	05/11/2040	चंद्र	18/11/2041	मंगल	26/05/2043	राहु	13/11/2044
सूर्य	27/04/2038	चंद्र	04/12/2040	मंगल	22/12/2041	राहु	26/07/2043	गुरु	01/04/2045
चंद्र	01/08/2038	मंगल	25/12/2040	राहु	19/03/2042	गुरु	18/09/2043	शनि	13/09/2045
मंगल	08/10/2038	राहु	15/02/2041	गुरु	04/06/2042	शनि	21/11/2043	बुध	07/02/2046
राहु	30/03/2039	गुरु	02/04/2041	शनि	03/09/2042	बुध	17/01/2044	केतु	09/04/2046
गुरु	01/09/2039	शनि	27/05/2041	बुध	24/11/2042	केतु	10/02/2044	शुक्र	30/09/2046
शनि	02/03/2040	बुध	15/07/2041	केतु	28/12/2042	शुक्र	17/04/2044	सूर्य	21/11/2046
बुध	13/08/2040	केतु	04/08/2041	शुक्र	03/04/2043	सूर्य	07/05/2044	चंद्र	15/02/2047
केतु	19/10/2040	शुक्र	01/10/2041	सूर्य	02/05/2043	चंद्र	10/06/2044	मंगल	17/04/2047

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
17/04/2047		28/10/2049		26/03/2052		23/03/2053		22/01/2056	
28/10/2049		26/03/2052		23/03/2053		22/01/2056		28/11/2056	
गुरु	18/08/2047	बुध	02/03/2050	केतु	16/04/2052	शुक्र	12/09/2053	सूर्य	07/02/2056
शनि	12/01/2048	केतु	22/04/2050	शुक्र	16/06/2052	सूर्य	02/11/2053	चंद्र	03/03/2056
बुध	22/05/2048	शुक्र	16/09/2050	सूर्य	04/07/2052	चंद्र	28/01/2054	मंगल	22/03/2056
केतु	15/07/2048	सूर्य	30/10/2050	चंद्र	03/08/2052	मंगल	29/03/2054	राहु	07/05/2056
शुक्र	16/12/2048	चंद्र	11/01/2051	मंगल	24/08/2052	राहु	31/08/2054	गुरु	18/06/2056
सूर्य	31/01/2049	मंगल	04/03/2051	राहु	17/10/2052	गुरु	16/01/2055	शनि	06/08/2056
चंद्र	19/04/2049	राहु	13/07/2051	गुरु	05/12/2052	शनि	29/06/2055	बुध	19/09/2056
मंगल	12/06/2049	गुरु	08/11/2051	शनि	31/01/2053	बुध	23/11/2055	केतु	07/10/2056
राहु	28/10/2049	शनि	26/03/2052	बुध	23/03/2053	केतु	22/01/2056	शुक्र	28/11/2056

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
28/11/2056		29/04/2058		26/04/2059		13/11/2061		18/02/2064	
29/04/2058		26/04/2059		13/11/2061		18/02/2064		29/10/2066	
चंद्र	10/01/2057	मंगल	20/05/2058	राहु	13/09/2059	गुरु	03/03/2062	शनि	23/07/2064
मंगल	09/02/2057	राहु	13/07/2058	गुरु	15/01/2060	शनि	12/07/2062	बुध	09/12/2064
राहु	27/04/2057	गुरु	31/08/2058	शनि	11/06/2060	बुध	06/11/2062	केतु	05/02/2065
गुरु	05/07/2057	शनि	27/10/2058	बुध	21/10/2060	केतु	25/12/2062	शुक्र	19/07/2065
शनि	25/09/2057	बुध	17/12/2058	केतु	14/12/2060	शुक्र	12/05/2063	सूर्य	06/09/2065
बुध	08/12/2057	केतु	08/01/2059	शुक्र	18/05/2061	सूर्य	22/06/2063	चंद्र	27/11/2065
केतु	07/01/2058	शुक्र	09/03/2059	सूर्य	04/07/2061	चंद्र	30/08/2063	मंगल	23/01/2066
शुक्र	03/04/2058	सूर्य	27/03/2059	चंद्र	19/09/2061	मंगल	17/10/2063	राहु	20/06/2066
सूर्य	29/04/2058	चंद्र	26/04/2059	मंगल	13/11/2061	राहु	18/02/2064	गुरु	29/10/2066

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
29/10/2066		27/03/2067		26/05/2068		01/10/2068		02/05/2069	
27/03/2067		26/05/2068		01/10/2068		02/05/2069		28/09/2069	
केतु	06/11/2066	शुक्र	06/06/2067	सूर्य	01/06/2068	चंद्र	18/10/2068	मंगल	10/05/2069
शुक्र	01/12/2066	सूर्य	27/06/2067	चंद्र	12/06/2068	मंगल	31/10/2068	राहु	02/06/2069
सूर्य	09/12/2066	चंद्र	02/08/2067	मंगल	19/06/2068	राहु	02/12/2068	गुरु	22/06/2069
चंद्र	21/12/2066	मंगल	26/08/2067	राहु	09/07/2068	गुरु	30/12/2068	शनि	15/07/2069
मंगल	30/12/2066	राहु	29/10/2067	गुरु	26/07/2068	शनि	02/02/2069	बुध	05/08/2069
राहु	21/01/2067	गुरु	25/12/2067	शनि	15/08/2068	बुध	04/03/2069	केतु	14/08/2069
गुरु	10/02/2067	शनि	02/03/2068	बुध	02/09/2068	केतु	17/03/2069	शुक्र	08/09/2069
शनि	06/03/2067	बुध	01/05/2068	केतु	09/09/2068	शुक्र	21/04/2069	सूर्य	16/09/2069
बुध	27/03/2067	केतु	26/05/2068	शुक्र	01/10/2068	सूर्य	02/05/2069	चंद्र	28/09/2069

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
28/09/2069		16/10/2070		22/09/2071		31/10/2072		28/10/2073	
16/10/2070		22/09/2071		31/10/2072		28/10/2073		27/02/2077	
राहु	24/11/2069	गुरु	01/12/2070	शनि	25/11/2071	बुध	21/12/2072	शुक्र	19/05/2074
गुरु	15/01/2070	शनि	24/01/2071	बुध	22/01/2072	केतु	12/01/2073	सूर्य	19/07/2074
शनि	16/03/2070	बुध	13/03/2071	केतु	14/02/2072	शुक्र	13/03/2073	चंद्र	29/10/2074
बुध	10/05/2070	केतु	02/04/2071	शुक्र	22/04/2072	सूर्य	31/03/2073	मंगल	08/01/2075
केतु	01/06/2070	शुक्र	29/05/2071	सूर्य	12/05/2072	चंद्र	30/04/2073	राहु	09/07/2075
शुक्र	04/08/2070	सूर्य	15/06/2071	चंद्र	15/06/2072	मंगल	21/05/2073	गुरु	19/12/2075
सूर्य	23/08/2070	चंद्र	13/07/2071	मंगल	08/07/2072	राहु	15/07/2073	शनि	28/06/2076
चंद्र	24/09/2070	मंगल	02/08/2071	राहु	07/09/2072	गुरु	01/09/2073	बुध	18/12/2076
मंगल	16/10/2070	राहु	22/09/2071	गुरु	31/10/2072	शनि	28/10/2073	केतु	27/02/2077

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
27/02/2077		27/02/2078		29/10/2079		28/12/2080		29/12/2083	
27/02/2078		29/10/2079		28/12/2080		29/12/2083		29/08/2086	
सूर्य	17/03/2077	चंद्र	19/04/2078	मंगल	23/11/2079	राहु	10/06/2081	गुरु	07/05/2084
चंद्र	17/04/2077	मंगल	24/05/2078	राहु	26/01/2080	गुरु	03/11/2081	शनि	08/10/2084
मंगल	08/05/2077	राहु	24/08/2078	गुरु	22/03/2080	शनि	26/04/2082	बुध	23/02/2085
राहु	02/07/2077	गुरु	13/11/2078	शनि	29/05/2080	बुध	28/09/2082	केतु	21/04/2085
गुरु	19/08/2077	शनि	17/02/2079	बुध	28/07/2080	केतु	01/12/2082	शुक्र	30/09/2085
शनि	16/10/2077	बुध	14/05/2079	केतु	22/08/2080	शुक्र	02/06/2083	सूर्य	18/11/2085
बुध	07/12/2077	केतु	19/06/2079	शुक्र	01/11/2080	सूर्य	27/07/2083	चंद्र	07/02/2086
केतु	28/12/2077	शुक्र	28/09/2079	सूर्य	22/11/2080	चंद्र	26/10/2083	मंगल	05/04/2086
शुक्र	27/02/2078	सूर्य	29/10/2079	चंद्र	28/12/2080	मंगल	29/12/2083	राहु	29/08/2086

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
29/08/2086		28/10/2089		28/08/2092		28/10/2093		15/02/2094	
28/10/2089		28/08/2092		28/10/2093		15/02/2094		17/08/2094	
शनि	28/02/2087	बुध	24/03/2090	केतु	22/09/2092	सूर्य	03/11/2093	चंद्र	02/03/2094
बुध	11/08/2087	केतु	23/05/2090	शुक्र	02/12/2092	चंद्र	12/11/2093	मंगल	13/03/2094
केतु	17/10/2087	शुक्र	12/11/2090	सूर्य	23/12/2092	मंगल	18/11/2093	राहु	09/04/2094
शुक्र	27/04/2088	सूर्य	03/01/2091	चंद्र	28/01/2093	राहु	05/12/2093	गुरु	04/05/2094
सूर्य	24/06/2088	चंद्र	30/03/2091	मंगल	22/02/2093	गुरु	19/12/2093	शनि	01/06/2094
चंद्र	28/09/2088	मंगल	29/05/2091	राहु	27/04/2093	शनि	06/01/2094	बुध	27/06/2094
मंगल	05/12/2088	राहु	31/10/2091	गुरु	23/06/2093	बुध	21/01/2094	केतु	08/07/2094
राहु	27/05/2089	गुरु	17/03/2092	शनि	29/08/2093	केतु	28/01/2094	शुक्र	07/08/2094
गुरु	28/10/2089	शनि	28/08/2092	बुध	28/10/2093	शुक्र	15/02/2094	सूर्य	17/08/2094

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - सूर्य - शुक्र	
09/01/2026 22:13	
27/02/2026 15:01	
शुक्र	18/01/2026 01:01
सूर्य	20/01/2026 11:28
चंद्र	24/01/2026 12:52
मंगल	27/01/2026 09:03
राहु	03/02/2026 16:22
गुरु	10/02/2026 04:12
शनि	17/02/2026 21:16
बुध	24/02/2026 18:51
केतु	27/02/2026 15:01

गुरु - चंद्र - चंद्र	
27/02/2026 15:01	
09/04/2026 05:01	
चंद्र	03/03/2026 00:11
मंगल	05/03/2026 09:00
राहु	11/03/2026 11:06
गुरु	16/03/2026 20:58
शनि	23/03/2026 07:11
बुध	29/03/2026 01:10
केतु	31/03/2026 09:59
शुक्र	07/04/2026 04:19
सूर्य	09/04/2026 05:01

गुरु - चंद्र - मंगल	
09/04/2026 05:01	
07/05/2026 14:49	
मंगल	10/04/2026 20:48
राहु	15/04/2026 03:04
गुरु	18/04/2026 21:58
शनि	23/04/2026 09:55
बुध	27/04/2026 10:31
केतु	29/04/2026 02:17
शुक्र	03/05/2026 19:55
सूर्य	05/05/2026 06:00
चंद्र	07/05/2026 14:49

गुरु - चंद्र - राहु	
07/05/2026 14:49	
19/07/2026 16:01	
राहु	18/05/2026 13:48
गुरु	28/05/2026 07:34
शनि	08/06/2026 21:09
बुध	19/06/2026 05:31
केतु	23/06/2026 11:48
शुक्र	05/07/2026 16:00
सूर्य	09/07/2026 07:39
चंद्र	15/07/2026 09:45
मंगल	19/07/2026 16:01

गुरु - चंद्र - गुरु	
19/07/2026 16:01	
22/09/2026 14:25	
गुरु	28/07/2026 07:49
शनि	07/08/2026 14:33
बुध	16/08/2026 19:20
केतु	20/08/2026 14:14
शुक्र	31/08/2026 09:58
सूर्य	03/09/2026 15:53
चंद्र	09/09/2026 01:45
मंगल	12/09/2026 20:40
राहु	22/09/2026 14:25

गुरु - चंद्र - शनि	
22/09/2026 14:25	
08/12/2026 17:01	
शनि	04/10/2026 19:26
बुध	15/10/2026 17:36
केतु	20/10/2026 05:33
शुक्र	02/11/2026 01:59
सूर्य	05/11/2026 22:31
चंद्र	12/11/2026 08:44
मंगल	16/11/2026 20:41
राहु	28/11/2026 10:17
गुरु	08/12/2026 17:01

गुरु - चंद्र - बुध	
08/12/2026 17:01	
15/02/2027 16:49	
बुध	18/12/2026 11:36
केतु	22/12/2026 12:11
शुक्र	03/01/2027 00:09
सूर्य	06/01/2027 10:56
चंद्र	12/01/2027 04:55
मंगल	16/01/2027 05:31
राहु	26/01/2027 13:53
गुरु	04/02/2027 18:39
शनि	15/02/2027 16:49

गुरु - चंद्र - केतु	
15/02/2027 16:49	
16/03/2027 02:37	
केतु	17/02/2027 08:36
शुक्र	22/02/2027 02:14
सूर्य	23/02/2027 12:19
चंद्र	25/02/2027 21:08
मंगल	27/02/2027 12:54
राहु	03/03/2027 19:11
गुरु	07/03/2027 14:05
शनि	12/03/2027 02:02
बुध	16/03/2027 02:37

गुरु - चंद्र - शुक्र	
16/03/2027 02:37	
05/06/2027 06:37	
शुक्र	29/03/2027 15:17
सूर्य	02/04/2027 16:41
चंद्र	09/04/2027 11:01
मंगल	14/04/2027 04:39
राहु	26/04/2027 08:51
गुरु	07/05/2027 04:35
शनि	20/05/2027 01:01
बुध	31/05/2027 12:59
केतु	05/06/2027 06:37

गुरु - चंद्र - सूर्य	
05/06/2027 06:37	
29/06/2027 15:01	
सूर्य	06/06/2027 11:51
चंद्र	08/06/2027 12:33
मंगल	09/06/2027 22:38
राहु	13/06/2027 14:18
गुरु	16/06/2027 20:13
शनि	20/06/2027 16:45
बुध	24/06/2027 03:32
केतु	25/06/2027 13:37
शुक्र	29/06/2027 15:01

गुरु - मंगल - मंगल	
29/06/2027 15:01	
19/07/2027 12:17	
मंगल	30/06/2027 18:52
राहु	03/07/2027 18:27
गुरु	06/07/2027 10:05
शनि	09/07/2027 13:39
बुध	12/07/2027 09:16
केतु	13/07/2027 13:06
शुक्र	16/07/2027 20:39
सूर्य	17/07/2027 20:31
चंद्र	19/07/2027 12:17

गुरु - मंगल - राहु	
19/07/2027 12:17	
08/09/2027 15:31	
राहु	27/07/2027 04:22
गुरु	03/08/2027 00:00
शनि	11/08/2027 02:19
बुध	18/08/2027 08:10
केतु	21/08/2027 07:46
शुक्र	29/08/2027 20:18
सूर्य	01/09/2027 09:40
चंद्र	05/09/2027 15:56
मंगल	08/09/2027 15:31

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - मंगल - गुरु	
08/09/2027 15:31	
24/10/2027 02:24	
गुरु	14/09/2027 16:59
शनि	21/09/2027 21:42
बुध	28/09/2027 08:14
केतु	30/09/2027 23:52
शुक्र	08/10/2027 13:41
सूर्य	10/10/2027 20:14
चंद्र	14/10/2027 15:08
मंगल	17/10/2027 06:46
राहु	24/10/2027 02:24

गुरु - मंगल - शनि	
24/10/2027 02:24	
17/12/2027 01:49	
शनि	01/11/2027 15:31
बुध	09/11/2027 07:02
केतु	12/11/2027 10:36
शुक्र	21/11/2027 10:30
सूर्य	24/11/2027 03:16
चंद्र	28/11/2027 15:13
मंगल	01/12/2027 18:47
राहु	09/12/2027 21:06
गुरु	17/12/2027 01:49

गुरु - मंगल - बुध	
17/12/2027 01:49	
03/02/2028 08:53	
बुध	23/12/2027 22:01
केतु	26/12/2027 17:38
शुक्र	03/01/2028 18:49
सूर्य	06/01/2028 04:46
चंद्र	10/01/2028 05:21
मंगल	13/01/2028 00:58
राहु	20/01/2028 06:50
गुरु	26/01/2028 17:22
शनि	03/02/2028 08:53

गुरु - मंगल - केतु	
03/02/2028 08:53	
23/02/2028 06:09	
केतु	04/02/2028 12:43
शुक्र	07/02/2028 20:16
सूर्य	08/02/2028 20:08
चंद्र	10/02/2028 11:54
मंगल	11/02/2028 15:45
राहु	14/02/2028 15:20
गुरु	17/02/2028 06:58
शनि	20/02/2028 10:32
बुध	23/02/2028 06:09

गुरु - मंगल - शुक्र	
23/02/2028 06:09	
20/04/2028 01:45	
शुक्र	03/03/2028 17:25
सूर्य	06/03/2028 13:35
चंद्र	11/03/2028 07:13
मंगल	14/03/2028 14:46
राहु	23/03/2028 03:18
गुरु	30/03/2028 17:07
शनि	08/04/2028 17:01
बुध	16/04/2028 18:12
केतु	20/04/2028 01:45

गुरु - मंगल - सूर्य	
20/04/2028 01:45	
07/05/2028 02:49	
सूर्य	20/04/2028 22:12
चंद्र	22/04/2028 08:17
मंगल	23/04/2028 08:09
राहु	25/04/2028 21:31
गुरु	28/04/2028 04:03
शनि	30/04/2028 20:50
बुध	03/05/2028 06:47
केतु	04/05/2028 06:39
शुक्र	07/05/2028 02:49

गुरु - मंगल - चंद्र	
07/05/2028 02:49	
04/06/2028 12:37	
चंद्र	09/05/2028 11:38
मंगल	11/05/2028 03:25
राहु	15/05/2028 09:41
गुरु	19/05/2028 04:35
शनि	23/05/2028 16:32
बुध	27/05/2028 17:08
केतु	29/05/2028 08:54
शुक्र	03/06/2028 02:32
सूर्य	04/06/2028 12:37

गुरु - राहु - राहु	
04/06/2028 12:37	
14/10/2028 00:23	
राहु	24/06/2028 05:59
गुरु	11/07/2028 18:45
शनि	01/08/2028 14:25
बुध	20/08/2028 05:29
केतु	27/08/2028 21:34
शुक्र	18/09/2028 19:32
सूर्य	25/09/2028 09:19
चंद्र	06/10/2028 08:18
मंगल	14/10/2028 00:23

गुरु - राहु - गुरु	
14/10/2028 00:23	
07/02/2029 21:30	
गुरु	29/10/2028 14:24
शनि	17/11/2028 02:33
बुध	03/12/2028 15:56
केतु	10/12/2028 11:34
शुक्र	29/12/2028 23:05
सूर्य	04/01/2029 19:21
चंद्र	14/01/2029 13:06
मंगल	21/01/2029 08:44
राहु	07/02/2029 21:30

गुरु - राहु - शनि	
07/02/2029 21:30	
26/06/2029 16:35	
शनि	01/03/2029 20:56
बुध	21/03/2029 12:50
केतु	29/03/2029 15:09
शुक्र	21/04/2029 18:19
सूर्य	28/04/2029 16:53
चंद्र	10/05/2029 06:28
मंगल	18/05/2029 08:47
राहु	08/06/2029 04:26
गुरु	26/06/2029 16:35

गुरु - राहु - बुध	
26/06/2029 16:35	
28/10/2029 21:01	
बुध	14/07/2029 06:49
केतु	21/07/2029 12:40
शुक्र	11/08/2029 05:25
सूर्य	17/08/2029 10:26
चंद्र	27/08/2029 18:48
मंगल	04/09/2029 00:40
राहु	22/09/2029 15:44
गुरु	09/10/2029 05:07
शनि	28/10/2029 21:01

गुरु - राहु - केतु	
28/10/2029 21:01	
19/12/2029 00:16	
केतु	31/10/2029 20:37
शुक्र	09/11/2029 09:09
सूर्य	11/11/2029 22:31
चंद्र	16/11/2029 04:47
मंगल	19/11/2029 04:22
राहु	26/11/2029 20:28
गुरु	03/12/2029 16:06
शनि	11/12/2029 18:24
बुध	19/12/2029 00:16

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - राहु - शुक्र	
19/12/2029 00:16	
14/05/2030 02:40	
शुक्र	12/01/2030 08:40
सूर्य	19/01/2030 15:59
चंद्र	31/01/2030 20:11
मंगल	09/02/2030 08:43
राहु	03/03/2030 06:41
गुरु	22/03/2030 18:12
शनि	14/04/2030 21:23
बुध	05/05/2030 14:07
केतु	14/05/2030 02:40

गुरु - राहु - सूर्य	
14/05/2030 02:40	
26/06/2030 22:35	
सूर्य	16/05/2030 07:16
चंद्र	19/05/2030 22:55
मंगल	22/05/2030 12:17
राहु	29/05/2030 02:04
गुरु	03/06/2030 22:20
शनि	10/06/2030 20:53
बुध	17/06/2030 01:54
केतु	19/06/2030 15:16
शुक्र	26/06/2030 22:35

गुरु - राहु - चंद्र	
26/06/2030 22:35	
07/09/2030 23:47	
चंद्र	03/07/2030 00:41
मंगल	07/07/2030 06:57
राहु	18/07/2030 05:56
गुरु	27/07/2030 23:42
शनि	08/08/2030 13:17
बुध	18/08/2030 21:39
केतु	23/08/2030 03:55
शुक्र	04/09/2030 08:07
सूर्य	07/09/2030 23:47

गुरु - राहु - मंगल	
07/09/2030 23:47	
29/10/2030 03:01	
मंगल	10/09/2030 23:22
राहु	18/09/2030 15:28
गुरु	25/09/2030 11:06
शनि	03/10/2030 13:24
बुध	10/10/2030 19:16
केतु	13/10/2030 18:51
शुक्र	22/10/2030 07:24
सूर्य	24/10/2030 20:45
चंद्र	29/10/2030 03:01

शनि - शनि - शनि	
29/10/2030 03:01	
21/04/2031 02:26	
शनि	25/11/2030 16:08
बुध	20/12/2030 07:39
केतु	30/12/2030 11:13
शुक्र	28/01/2031 11:07
सूर्य	06/02/2031 03:53
चंद्र	20/02/2031 15:50
मंगल	02/03/2031 19:24
राहु	28/03/2031 21:43
गुरु	21/04/2031 02:26

शनि - शनि - बुध	
21/04/2031 02:26	
23/09/2031 18:20	
बुध	13/05/2031 03:42
केतु	22/05/2031 05:37
शुक्र	17/06/2031 04:16
सूर्य	24/06/2031 23:04
चंद्र	07/07/2031 22:23
मंगल	17/07/2031 00:19
राहु	09/08/2031 08:42
गुरु	30/08/2031 02:49
शनि	23/09/2031 18:20

शनि - शनि - केतु	
23/09/2031 18:20	
26/11/2031 20:39	
केतु	27/09/2031 12:04
शुक्र	08/10/2031 04:28
सूर्य	11/10/2031 09:23
चंद्र	16/10/2031 17:34
मंगल	20/10/2031 11:18
राहु	30/10/2031 02:03
गुरु	07/11/2031 15:09
शनि	17/11/2031 18:43
बुध	26/11/2031 20:39

शनि - शनि - शुक्र	
26/11/2031 20:39	
27/05/2032 23:50	
शुक्र	27/12/2031 09:11
सूर्य	05/01/2032 12:56
चंद्र	20/01/2032 19:12
मंगल	31/01/2032 11:35
राहु	27/02/2032 22:52
गुरु	23/03/2032 08:53
शनि	21/04/2032 08:47
बुध	17/05/2032 07:26
केतु	27/05/2032 23:50

शनि - शनि - सूर्य	
27/05/2032 23:50	
21/07/2032 22:23	
सूर्य	30/05/2032 17:45
चंद्र	04/06/2032 07:38
मंगल	07/06/2032 12:33
राहु	15/06/2032 18:20
गुरु	23/06/2032 02:08
शनि	01/07/2032 18:55
बुध	09/07/2032 13:42
केतु	12/07/2032 18:37
शुक्र	21/07/2032 22:23

शनि - शनि - चंद्र	
21/07/2032 22:23	
21/10/2032 11:58	
चंद्र	29/07/2032 13:31
मंगल	03/08/2032 21:42
राहु	17/08/2032 15:20
गुरु	29/08/2032 20:21
शनि	13/09/2032 08:18
बुध	26/09/2032 07:38
केतु	01/10/2032 15:49
शुक्र	16/10/2032 22:05
सूर्य	21/10/2032 11:58

शनि - शनि - मंगल	
21/10/2032 11:58	
24/12/2032 14:17	
मंगल	25/10/2032 05:42
राहु	03/11/2032 20:27
गुरु	12/11/2032 09:33
शनि	22/11/2032 13:07
बुध	01/12/2032 15:03
केतु	05/12/2032 08:47
शुक्र	16/12/2032 01:10
सूर्य	19/12/2032 06:05
चंद्र	24/12/2032 14:17

शनि - शनि - राहु	
24/12/2032 14:17	
07/06/2033 09:56	
राहु	18/01/2033 07:38
गुरु	09/02/2033 07:03
शनि	07/03/2033 09:22
बुध	30/03/2033 17:45
केतु	09/04/2033 08:29
शुक्र	06/05/2033 19:46
सूर्य	15/05/2033 01:33
चंद्र	28/05/2033 19:11
मंगल	07/06/2033 09:56

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शनि - गुरु	
07/06/2033 09:56	
31/10/2033 22:04	
गुरु	26/06/2033 22:45
शनि	20/07/2033 03:29
बुध	09/08/2033 21:36
केतु	18/08/2033 10:42
शुक्र	11/09/2033 20:44
सूर्य	19/09/2033 04:32
चंद्र	01/10/2033 09:33
मंगल	09/10/2033 22:39
राहु	31/10/2033 22:04

शनि - बुध - बुध	
31/10/2033 22:04	
20/03/2034 04:43	
बुध	20/11/2033 15:37
केतु	28/11/2033 18:36
शुक्र	21/12/2033 23:43
सूर्य	28/12/2033 22:51
चंद्र	09/01/2034 13:24
मंगल	17/01/2034 16:23
राहु	07/02/2034 13:47
गुरु	26/02/2034 03:28
शनि	20/03/2034 04:43

शनि - बुध - केतु	
20/03/2034 04:43	
16/05/2034 13:06	
केतु	23/03/2034 13:01
शुक्र	02/04/2034 02:24
सूर्य	04/04/2034 23:14
चंद्र	09/04/2034 17:56
मंगल	13/04/2034 02:13
राहु	21/04/2034 16:40
गुरु	29/04/2034 08:11
शनि	08/05/2034 10:07
बुध	16/05/2034 13:06

शनि - बुध - शुक्र	
16/05/2034 13:06	
27/10/2034 09:38	
शुक्र	12/06/2034 20:32
सूर्य	21/06/2034 01:09
चंद्र	04/07/2034 16:52
मंगल	14/07/2034 06:16
राहु	07/08/2034 20:08
गुरु	29/08/2034 16:28
शनि	24/09/2034 15:07
बुध	17/10/2034 20:14
केतु	27/10/2034 09:38

शनि - बुध - सूर्य	
27/10/2034 09:38	
15/12/2034 13:23	
सूर्य	29/10/2034 20:37
चंद्र	02/11/2034 22:56
मंगल	05/11/2034 19:45
राहु	13/11/2034 04:43
गुरु	19/11/2034 18:01
शनि	27/11/2034 12:49
बुध	04/12/2034 11:57
केतु	07/12/2034 08:46
शुक्र	15/12/2034 13:23

शनि - बुध - चंद्र	
15/12/2034 13:23	
07/03/2035 11:39	
चंद्र	22/12/2034 09:15
मंगल	27/12/2034 03:56
राहु	08/01/2035 10:53
गुरु	19/01/2035 09:03
शनि	01/02/2035 08:22
बुध	12/02/2035 22:56
केतु	17/02/2035 17:38
शुक्र	03/03/2035 09:20
सूर्य	07/03/2035 11:39

शनि - बुध - मंगल	
07/03/2035 11:39	
03/05/2035 20:02	
मंगल	10/03/2035 19:56
राहु	19/03/2035 10:24
गुरु	27/03/2035 01:55
शनि	05/04/2035 03:50
बुध	13/04/2035 06:50
केतु	16/04/2035 15:07
शुक्र	26/04/2035 04:31
सूर्य	29/04/2035 01:20
चंद्र	03/05/2035 20:02

शनि - बुध - राहु	
03/05/2035 20:02	
28/09/2035 07:18	
राहु	25/05/2035 22:55
गुरु	14/06/2035 14:50
शनि	07/07/2035 23:13
बुध	28/07/2035 20:37
केतु	06/08/2035 11:04
शुक्र	31/08/2035 00:57
सूर्य	07/09/2035 09:55
चंद्र	19/09/2035 16:51
मंगल	28/09/2035 07:18

शनि - बुध - गुरु	
28/09/2035 07:18	
06/02/2036 09:20	
गुरु	15/10/2035 18:47
शनि	05/11/2035 12:54
बुध	24/11/2035 02:35
केतु	01/12/2035 18:06
शुक्र	23/12/2035 14:26
सूर्य	30/12/2035 03:44
चंद्र	10/01/2036 01:54
मंगल	17/01/2036 17:25
राहु	06/02/2036 09:20

शनि - बुध - शनि	
06/02/2036 09:20	
11/07/2036 01:13	
शनि	02/03/2036 00:51
बुध	24/03/2036 02:06
केतु	02/04/2036 04:01
शुक्र	28/04/2036 02:40
सूर्य	05/05/2036 21:28
चंद्र	18/05/2036 20:48
मंगल	27/05/2036 22:43
राहु	20/06/2036 07:06
गुरु	11/07/2036 01:13

शनि - केतु - केतु	
11/07/2036 01:13	
03/08/2036 15:58	
केतु	12/07/2036 10:17
शुक्र	16/07/2036 08:45
सूर्य	17/07/2036 13:05
चंद्र	19/07/2036 12:19
मंगल	20/07/2036 21:22
राहु	24/07/2036 10:23
गुरु	27/07/2036 13:57
शनि	31/07/2036 07:41
बुध	03/08/2036 15:58

शनि - केतु - शुक्र	
03/08/2036 15:58	
10/10/2036 03:15	
शुक्र	14/08/2036 21:51
सूर्य	18/08/2036 06:49
चंद्र	23/08/2036 21:45
मंगल	27/08/2036 20:13
राहु	06/09/2036 23:06
गुरु	15/09/2036 23:00
शनि	26/09/2036 15:23
बुध	06/10/2036 04:47
केतु	10/10/2036 03:15

विंशोत्तरी दशा - प्राण

गुरु - सूर्य - शुक्र - राहु	
27/01/2026 09:03	
03/02/2026 16:22	
राहु	28/01/2026 11:21
गुरु	29/01/2026 10:43
शनि	30/01/2026 14:29
बुध	31/01/2026 15:19
केतु	01/02/2026 01:33
शुक्र	02/02/2026 06:46
सूर्य	02/02/2026 15:32
चंद्र	03/02/2026 06:08
मंगल	03/02/2026 16:22

गुरु - सूर्य - शुक्र - गुरु	
03/02/2026 16:22	
10/02/2026 04:12	
गुरु	04/02/2026 13:09
शनि	05/02/2026 13:49
बुध	06/02/2026 11:54
केतु	06/02/2026 20:59
शुक्र	07/02/2026 22:58
सूर्य	08/02/2026 06:45
चंद्र	08/02/2026 19:44
मंगल	09/02/2026 04:50
राहु	10/02/2026 04:12

गुरु - सूर्य - शुक्र - शनि	
10/02/2026 04:12	
17/02/2026 21:16	
शनि	11/02/2026 09:30
बुध	12/02/2026 11:43
केतु	12/02/2026 22:31
शुक्र	14/02/2026 05:22
सूर्य	14/02/2026 14:37
चंद्र	15/02/2026 06:02
मंगल	15/02/2026 16:50
राहु	16/02/2026 20:35
गुरु	17/02/2026 21:16

गुरु - सूर्य - शुक्र - बुध	
17/02/2026 21:16	
24/02/2026 18:51	
बुध	18/02/2026 20:43
केतु	19/02/2026 06:23
शुक्र	20/02/2026 09:59
सूर्य	20/02/2026 18:15
चंद्र	21/02/2026 08:03
मंगल	21/02/2026 17:43
राहु	22/02/2026 18:33
गुरु	23/02/2026 16:38
शनि	24/02/2026 18:51

गुरु - सूर्य - शुक्र - केतु	
24/02/2026 18:51	
27/02/2026 15:01	
केतु	24/02/2026 22:49
शुक्र	25/02/2026 10:11
सूर्य	25/02/2026 13:36
चंद्र	25/02/2026 19:17
मंगल	25/02/2026 23:15
राहु	26/02/2026 09:29
गुरु	26/02/2026 18:34
शनि	27/02/2026 05:22
बुध	27/02/2026 15:01

गुरु - चंद्र - चंद्र - चंद्र	
27/02/2026 15:01	
03/03/2026 00:11	
चंद्र	27/02/2026 21:47
मंगल	28/02/2026 02:31
राहु	28/02/2026 14:42
गुरु	01/03/2026 01:31
शनि	01/03/2026 14:22
बुध	02/03/2026 01:52
केतु	02/03/2026 06:36
शुक्र	02/03/2026 20:08
सूर्य	03/03/2026 00:11

गुरु - चंद्र - चंद्र - मंगल	
03/03/2026 00:11	
05/03/2026 09:00	
मंगल	03/03/2026 03:30
राहु	03/03/2026 12:02
गुरु	03/03/2026 19:36
शनि	04/03/2026 04:36
बुध	04/03/2026 12:39
केतु	04/03/2026 15:58
शुक्र	05/03/2026 01:26
सूर्य	05/03/2026 04:16
चंद्र	05/03/2026 09:00

गुरु - चंद्र - चंद्र - राहु	
05/03/2026 09:00	
11/03/2026 11:06	
राहु	06/03/2026 06:55
गुरु	07/03/2026 02:24
शनि	08/03/2026 01:32
बुध	08/03/2026 22:14
केतु	09/03/2026 06:45
शुक्र	10/03/2026 07:06
सूर्य	10/03/2026 14:25
चंद्र	11/03/2026 02:35
मंगल	11/03/2026 11:06

गुरु - चंद्र - चंद्र - गुरु	
11/03/2026 11:06	
16/03/2026 20:58	
गुरु	12/03/2026 04:25
शनि	13/03/2026 00:59
बुध	13/03/2026 19:23
केतु	14/03/2026 02:58
शुक्र	15/03/2026 00:36
सूर्य	15/03/2026 07:06
चंद्र	15/03/2026 17:55
मंगल	16/03/2026 01:30
राहु	16/03/2026 20:58

गुरु - चंद्र - चंद्र - शनि	
16/03/2026 20:58	
23/03/2026 07:11	
शनि	17/03/2026 21:24
बुध	18/03/2026 19:14
केतु	19/03/2026 04:14
शुक्र	20/03/2026 05:56
सूर्य	20/03/2026 13:39
चंद्र	21/03/2026 02:30
मंगल	21/03/2026 11:30
राहु	22/03/2026 10:38
गुरु	23/03/2026 07:11

गुरु - चंद्र - चंद्र - बुध	
23/03/2026 07:11	
29/03/2026 01:10	
बुध	24/03/2026 02:44
केतु	24/03/2026 10:47
शुक्र	25/03/2026 09:47
सूर्य	25/03/2026 16:41
चंद्र	26/03/2026 04:11
मंगल	26/03/2026 12:14
राहु	27/03/2026 08:56
गुरु	28/03/2026 03:20
शनि	29/03/2026 01:10

गुरु - चंद्र - चंद्र - केतु	
29/03/2026 01:10	
31/03/2026 09:59	
केतु	29/03/2026 04:29
शुक्र	29/03/2026 13:58
सूर्य	29/03/2026 16:48
चंद्र	29/03/2026 21:32
मंगल	30/03/2026 00:51
राहु	30/03/2026 09:22
गुरु	30/03/2026 16:57
शनि	31/03/2026 01:57
बुध	31/03/2026 09:59

विंशोत्तरी दशा - प्राण

गुरु - चंद्र - चंद्र - शुक्र	
31/03/2026 09:59	
07/04/2026 04:19	
शुक्र	01/04/2026 13:03
सूर्य	01/04/2026 21:10
चंद्र	02/04/2026 10:41
मंगल	02/04/2026 20:10
राहु	03/04/2026 20:31
गुरु	04/04/2026 18:09
शनि	05/04/2026 19:51
बुध	06/04/2026 18:51
केतु	07/04/2026 04:19

गुरु - चंद्र - चंद्र - सूर्य	
07/04/2026 04:19	
09/04/2026 05:01	
सूर्य	07/04/2026 06:46
चंद्र	07/04/2026 10:49
मंगल	07/04/2026 13:40
राहु	07/04/2026 20:58
गुरु	08/04/2026 03:27
शनि	08/04/2026 11:10
बुध	08/04/2026 18:04
केतु	08/04/2026 20:54
शुक्र	09/04/2026 05:01

गुरु - चंद्र - मंगल - मंगल	
09/04/2026 05:01	
10/04/2026 20:48	
मंगल	09/04/2026 07:21
राहु	09/04/2026 13:19
गुरु	09/04/2026 18:37
शनि	10/04/2026 00:55
बुध	10/04/2026 06:33
केतु	10/04/2026 08:52
शुक्र	10/04/2026 15:30
सूर्य	10/04/2026 17:29
चंद्र	10/04/2026 20:48

गुरु - चंद्र - मंगल - राहु	
10/04/2026 20:48	
15/04/2026 03:04	
राहु	11/04/2026 12:08
गुरु	12/04/2026 01:46
शनि	12/04/2026 17:58
बुध	13/04/2026 08:27
केतु	13/04/2026 14:25
शुक्र	14/04/2026 07:28
सूर्य	14/04/2026 12:35
चंद्र	14/04/2026 21:06
मंगल	15/04/2026 03:04

गुरु - चंद्र - मंगल - गुरु	
15/04/2026 03:04	
18/04/2026 21:58	
गुरु	15/04/2026 15:11
शनि	16/04/2026 05:35
बुध	16/04/2026 18:28
केतु	16/04/2026 23:46
शुक्र	17/04/2026 14:55
सूर्य	17/04/2026 19:28
चंद्र	18/04/2026 03:02
मंगल	18/04/2026 08:20
राहु	18/04/2026 21:58

गुरु - चंद्र - मंगल - शनि	
18/04/2026 21:58	
23/04/2026 09:55	
शनि	19/04/2026 15:04
बुध	20/04/2026 06:22
केतु	20/04/2026 12:39
शुक्र	21/04/2026 06:39
सूर्य	21/04/2026 12:03
चंद्र	21/04/2026 21:02
मंगल	22/04/2026 03:20
राहु	22/04/2026 19:32
गुरु	23/04/2026 09:55

गुरु - चंद्र - मंगल - बुध	
23/04/2026 09:55	
27/04/2026 10:31	
बुध	23/04/2026 23:36
केतु	24/04/2026 05:15
शुक्र	24/04/2026 21:20
सूर्य	25/04/2026 02:10
चंद्र	25/04/2026 10:13
मंगल	25/04/2026 15:51
राहु	26/04/2026 06:20
गुरु	26/04/2026 19:13
शनि	27/04/2026 10:31

गुरु - चंद्र - मंगल - केतु	
27/04/2026 10:31	
29/04/2026 02:17	
केतु	27/04/2026 12:50
शुक्र	27/04/2026 19:28
सूर्य	27/04/2026 21:27
चंद्र	28/04/2026 00:46
मंगल	28/04/2026 03:05
राहु	28/04/2026 09:03
गुरु	28/04/2026 14:21
शनि	28/04/2026 20:39
बुध	29/04/2026 02:17

गुरु - चंद्र - मंगल - शुक्र	
29/04/2026 02:17	
03/05/2026 19:55	
शुक्र	29/04/2026 21:13
सूर्य	30/04/2026 02:54
चंद्र	30/04/2026 12:22
मंगल	30/04/2026 19:00
राहु	01/05/2026 12:03
गुरु	02/05/2026 03:12
शनि	02/05/2026 21:11
बुध	03/05/2026 13:17
केतु	03/05/2026 19:55

गुरु - चंद्र - मंगल - सूर्य	
03/05/2026 19:55	
05/05/2026 06:00	
सूर्य	03/05/2026 21:37
चंद्र	04/05/2026 00:28
मंगल	04/05/2026 02:27
राहु	04/05/2026 07:34
गुरु	04/05/2026 12:07
शनि	04/05/2026 17:31
बुध	04/05/2026 22:20
केतु	05/05/2026 00:20
शुक्र	05/05/2026 06:00

गुरु - चंद्र - मंगल - चंद्र	
05/05/2026 06:00	
07/05/2026 14:49	
चंद्र	05/05/2026 10:45
मंगल	05/05/2026 14:03
राहु	05/05/2026 22:35
गुरु	06/05/2026 06:09
शनि	06/05/2026 15:09
बुध	06/05/2026 23:12
केतु	07/05/2026 02:31
शुक्र	07/05/2026 11:59
सूर्य	07/05/2026 14:49

गुरु - चंद्र - राहु - राहु	
07/05/2026 14:49	
18/05/2026 13:48	
राहु	09/05/2026 06:16
गुरु	10/05/2026 17:20
शनि	12/05/2026 10:58
बुध	14/05/2026 00:14
केतु	14/05/2026 15:34
शुक्र	16/05/2026 11:24
सूर्य	17/05/2026 00:33
चंद्र	17/05/2026 22:28
मंगल	18/05/2026 13:48

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 0 वर्ष 0 मास 24 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
19/10/1979		13/11/1979		13/11/1995		12/11/2012		13/11/2030	
13/11/1979		13/11/1995		12/11/2012		13/11/2030		12/11/2041	
00/00/0000	चंद्र	27/01/1982	बुध	11/05/1998	शुक्र	29/08/2015	सूर्य	29/11/2031
00/00/0000	बुध	01/06/1984	शुक्र	29/12/2000	सूर्य	14/05/2017	मंगल	17/01/2033
00/00/0000	शुक्र	25/11/1986	सूर्य	10/08/2002	मंगल	25/03/2019	गुरु	12/04/2034
00/00/0000	सूर्य	01/06/1988	मंगल	13/05/2004	गुरु	31/03/2021	शनि	10/08/2035
00/00/0000	मंगल	27/01/1990	गुरु	09/04/2006	शनि	02/06/2023	केतु	11/01/2037
00/00/0000	गुरु	13/11/1991	शनि	28/04/2008	केतु	29/09/2025	चंद्र	19/07/2038
19/10/1979	शनि	18/10/1993	केतु	10/07/2010	चंद्र	24/03/2028	बुध	28/02/2040
शनि 13/11/1979	केतु	13/11/1995	चंद्र	12/11/2012	बुध	13/11/2030	शुक्र	12/11/2041

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
12/11/2041		12/11/2053		13/11/2066		12/11/2080	
12/11/2053		13/11/2066		12/11/2080		19/10/2095	
मंगल 09/02/2043		गुरु	28/04/2055	शनि	22/07/2068	केतु	22/10/2082
गुरु 14/06/2044		शनि	22/11/2056	केतु	14/05/2070	चंद्र	15/11/2084
शनि 25/11/2045		केतु	29/07/2058	चंद्र	18/04/2072	बुध	27/01/2087
केतु 15/06/2047		चंद्र	13/05/2060	बुध	08/05/2074	शुक्र	26/05/2089
चंद्र 08/02/2049		बुध	09/04/2062	शुक्र	09/07/2076	सूर्य	28/10/2090
बुध 13/11/2050		शुक्र	15/04/2064	सूर्य	06/11/2077	मंगल	17/05/2092
शुक्र 23/09/2052		सूर्य	09/07/2065	मंगल	19/04/2079	गुरु	21/01/2094
सूर्य 12/11/2053		मंगल	13/11/2066	गुरु	12/11/2080	शनि	19/10/2095

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
19/10/1979		13/11/1979		27/01/1982		01/06/1984		25/11/1986	
13/11/1979		27/01/1982		01/06/1984		25/11/1986		01/06/1988	
	00/00/0000	चंद्र	03/03/1980	बुध	01/06/1982	शुक्र	20/10/1984	सूर्य	17/01/1987
	00/00/0000	बुध	29/06/1980	शुक्र	12/10/1982	सूर्य	14/01/1985	मंगल	15/03/1987
	00/00/0000	शुक्र	01/11/1980	सूर्य	02/01/1983	मंगल	18/04/1985	गुरु	16/05/1987
	00/00/0000	सूर्य	17/01/1981	मंगल	31/03/1983	गुरु	29/07/1985	शनि	22/07/1987
	00/00/0000	मंगल	10/04/1981	गुरु	05/07/1983	शनि	15/11/1985	केतु	02/10/1987
	00/00/0000	गुरु	09/07/1981	शनि	16/10/1983	केतु	12/03/1986	चंद्र	17/12/1987
	19/10/1979	शनि	15/10/1981	केतु	04/02/1984	चंद्र	15/07/1986	बुध	07/03/1988
गुरु	13/11/1979	केतु	27/01/1982	चंद्र	01/06/1984	बुध	25/11/1986	शुक्र	01/06/1988

चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध	
01/06/1988		27/01/1990		13/11/1991		18/10/1993		13/11/1995	
27/01/1990		13/11/1991		18/10/1993		13/11/1995		11/05/1998	
मंगल	03/08/1988	गुरु	10/04/1990	शनि	06/02/1992	केतु	24/01/1994	बुध	25/03/1996
गुरु	10/10/1988	शनि	28/06/1990	केतु	07/05/1992	चंद्र	08/05/1994	शुक्र	13/08/1996
शनि	22/12/1988	केतु	21/09/1990	चंद्र	12/08/1992	बुध	27/08/1994	सूर्य	08/11/1996
केतु	10/03/1989	चंद्र	20/12/1990	बुध	24/11/1992	शुक्र	22/12/1994	मंगल	10/02/1997
चंद्र	01/06/1989	बुध	26/03/1991	शुक्र	13/03/1993	सूर्य	04/03/1995	गुरु	23/05/1997
बुध	29/08/1989	शुक्र	06/07/1991	सूर्य	19/05/1993	मंगल	21/05/1995	शनि	10/09/1997
शुक्र	01/12/1989	सूर्य	06/09/1991	मंगल	31/07/1993	गुरु	14/08/1995	केतु	05/01/1998
सूर्य	27/01/1990	मंगल	13/11/1991	गुरु	18/10/1993	शनि	13/11/1995	चंद्र	11/05/1998

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि	
11/05/1998		29/12/2000		10/08/2002		13/05/2004		09/04/2006	
29/12/2000		10/08/2002		13/05/2004		09/04/2006		28/04/2008	
शुक्र	07/10/1998	सूर्य	23/02/2001	मंगल	16/10/2002	गुरु	30/07/2004	शनि	09/07/2006
सूर्य	07/01/1999	मंगल	25/04/2001	गुरु	27/12/2002	शनि	22/10/2004	केतु	14/10/2006
मंगल	16/04/1999	गुरु	30/06/2001	शनि	14/03/2003	केतु	20/01/2005	चंद्र	25/01/2007
गुरु	02/08/1999	शनि	09/09/2001	केतु	05/06/2003	चंद्र	26/04/2005	बुध	15/05/2007
शनि	27/11/1999	केतु	24/11/2001	चंद्र	02/09/2003	बुध	06/08/2005	शुक्र	08/09/2007
केतु	30/03/2000	चंद्र	13/02/2002	बुध	05/12/2003	शुक्र	22/11/2005	सूर्य	18/11/2007
चंद्र	10/08/2000	बुध	11/05/2002	शुक्र	14/03/2004	सूर्य	27/01/2006	मंगल	04/02/2008
बुध	29/12/2000	शुक्र	10/08/2002	सूर्य	13/05/2004	मंगल	09/04/2006	गुरु	28/04/2008

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल	
28/04/2008		10/07/2010		12/11/2012		29/08/2015		14/05/2017	
10/07/2010		12/11/2012		29/08/2015		14/05/2017		25/03/2019	
केतु	10/08/2008	चंद्र	05/11/2010	शुक्र	19/04/2013	सूर्य	27/10/2015	मंगल	23/07/2017
चंद्र	28/11/2008	बुध	10/03/2011	सूर्य	25/07/2013	मंगल	31/12/2015	गुरु	07/10/2017
बुध	26/03/2009	शुक्र	21/07/2011	मंगल	08/11/2013	गुरु	10/03/2016	शनि	28/12/2017
शुक्र	29/07/2009	सूर्य	10/10/2011	गुरु	02/03/2014	शनि	24/05/2016	केतु	26/03/2018
सूर्य	13/10/2009	मंगल	07/01/2012	शनि	03/07/2014	केतु	13/08/2016	चंद्र	28/06/2018
मंगल	04/01/2010	गुरु	12/04/2012	केतु	12/11/2014	चंद्र	07/11/2016	बुध	06/10/2018
गुरु	04/04/2010	शनि	24/07/2012	चंद्र	02/04/2015	बुध	06/02/2017	शुक्र	19/01/2019
शनि	10/07/2010	केतु	12/11/2012	बुध	29/08/2015	शुक्र	14/05/2017	सूर्य	25/03/2019

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध	
25/03/2019		31/03/2021		02/06/2023		29/09/2025		24/03/2028	
31/03/2021		02/06/2023		29/09/2025		24/03/2028		13/11/2030	
गुरु	15/06/2019	शनि	04/07/2021	केतु	20/09/2023	चंद्र	01/02/2026	बुध	12/08/2028
शनि	12/09/2019	केतु	15/10/2021	चंद्र	15/01/2024	बुध	14/06/2026	शुक्र	09/01/2029
केतु	17/12/2019	चंद्र	01/02/2022	बुध	19/05/2024	शुक्र	02/11/2026	सूर्य	10/04/2029
चंद्र	27/03/2020	बुध	29/05/2022	शुक्र	28/09/2024	सूर्य	27/01/2027	मंगल	19/07/2029
बुध	13/07/2020	शुक्र	29/09/2022	सूर्य	17/12/2024	मंगल	01/05/2027	गुरु	04/11/2029
शुक्र	05/11/2020	सूर्य	13/12/2022	मंगल	15/03/2025	गुरु	10/08/2027	शनि	28/02/2030
सूर्य	13/01/2021	मंगल	05/03/2023	गुरु	19/06/2025	शनि	28/11/2027	केतु	03/07/2030
मंगल	31/03/2021	गुरु	02/06/2023	शनि	29/09/2025	केतु	24/03/2028	चंद्र	13/11/2030

सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु	
13/11/2030		29/11/2031		17/01/2033		12/04/2034		10/08/2035	
29/11/2031		17/01/2033		12/04/2034		10/08/2035		11/01/2037	
सूर्य	19/12/2030	मंगल	11/01/2032	गुरु	09/03/2033	शनि	10/06/2034	केतु	17/10/2035
मंगल	27/01/2031	गुरु	26/02/2032	शनि	02/05/2033	केतु	12/08/2034	चंद्र	27/12/2035
गुरु	11/03/2031	शनि	16/04/2032	केतु	29/06/2033	चंद्र	18/10/2034	बुध	12/03/2036
शनि	26/04/2031	केतु	09/06/2032	चंद्र	30/08/2033	बुध	28/12/2034	शुक्र	01/06/2036
केतु	14/06/2031	चंद्र	05/08/2032	बुध	04/11/2033	शुक्र	13/03/2035	सूर्य	20/07/2036
चंद्र	06/08/2031	बुध	05/10/2032	शुक्र	13/01/2034	सूर्य	28/04/2035	मंगल	12/09/2036
बुध	30/09/2031	शुक्र	09/12/2032	सूर्य	25/02/2034	मंगल	17/06/2035	गुरु	09/11/2036
शुक्र	29/11/2031	सूर्य	17/01/2033	मंगल	12/04/2034	गुरु	10/08/2035	शनि	11/01/2037

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु	
11/01/2037		19/07/2038		28/02/2040		12/11/2041		09/02/2043	
19/07/2038		28/02/2040		12/11/2041		09/02/2043		14/06/2044	
चंद्र	28/03/2037	बुध	13/10/2038	शुक्र	04/06/2040	मंगल	29/12/2041	गुरु	05/04/2043
बुध	18/06/2037	शुक्र	13/01/2039	सूर्य	02/08/2040	गुरु	18/02/2042	शनि	03/06/2043
शुक्र	12/09/2037	सूर्य	10/03/2039	मंगल	05/10/2040	शनि	14/04/2042	केतु	06/08/2043
सूर्य	03/11/2037	मंगल	10/05/2039	गुरु	14/12/2040	केतु	11/06/2042	चंद्र	12/10/2043
मंगल	30/12/2037	गुरु	14/07/2039	शनि	27/02/2041	चंद्र	13/08/2042	बुध	23/12/2043
गुरु	03/03/2038	शनि	24/09/2039	केतु	19/05/2041	बुध	18/10/2042	शुक्र	09/03/2044
शनि	08/05/2038	केतु	09/12/2039	चंद्र	13/08/2041	शुक्र	28/12/2042	सूर्य	24/04/2044
केतु	19/07/2038	चंद्र	28/02/2040	बुध	12/11/2041	सूर्य	09/02/2043	मंगल	14/06/2044

मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र	
14/06/2044		25/11/2045		15/06/2047		08/02/2049		13/11/2050	
25/11/2045		15/06/2047		08/02/2049		13/11/2050		23/09/2052	
शनि	17/08/2044	केतु	06/02/2046	चंद्र	06/09/2047	बुध	13/05/2049	शुक्र	26/02/2051
केतु	24/10/2044	चंद्र	25/04/2046	बुध	04/12/2047	शुक्र	21/08/2049	सूर्य	02/05/2051
चंद्र	05/01/2045	बुध	17/07/2046	शुक्र	07/03/2048	सूर्य	21/10/2049	मंगल	11/07/2051
बुध	24/03/2045	शुक्र	13/10/2046	सूर्य	03/05/2048	मंगल	26/12/2049	गुरु	25/09/2051
शुक्र	14/06/2045	सूर्य	06/12/2046	मंगल	04/07/2048	गुरु	08/03/2050	शनि	16/12/2051
सूर्य	03/08/2045	मंगल	03/02/2047	गुरु	10/09/2048	शनि	25/05/2050	केतु	13/03/2052
मंगल	27/09/2045	गुरु	07/04/2047	शनि	22/11/2048	केतु	16/08/2050	चंद्र	15/06/2052
गुरु	25/11/2045	शनि	15/06/2047	केतु	08/02/2049	चंद्र	13/11/2050	बुध	23/09/2052

मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र	
23/09/2052		12/11/2053		28/04/2055		22/11/2056		29/07/2058	
12/11/2053		28/04/2055		22/11/2056		29/07/2058		13/05/2060	
सूर्य	01/11/2052	गुरु	11/01/2054	शनि	07/07/2055	केतु	09/02/2057	चंद्र	27/10/2058
मंगल	14/12/2052	शनि	16/03/2054	केतु	19/09/2055	चंद्र	05/05/2057	बुध	31/01/2059
गुरु	30/01/2053	केतु	24/05/2054	चंद्र	07/12/2055	बुध	03/08/2057	शुक्र	12/05/2059
शनि	21/03/2053	चंद्र	05/08/2054	बुध	29/02/2056	शुक्र	06/11/2057	सूर्य	14/07/2059
केतु	14/05/2053	बुध	22/10/2054	शुक्र	28/05/2056	सूर्य	03/01/2058	मंगल	19/09/2059
चंद्र	10/07/2053	शुक्र	13/01/2055	सूर्य	21/07/2056	मंगल	08/03/2058	गुरु	02/12/2059
बुध	09/09/2053	सूर्य	04/03/2055	मंगल	18/09/2056	गुरु	15/05/2058	शनि	19/02/2060
शुक्र	12/11/2053	मंगल	28/04/2055	गुरु	22/11/2056	शनि	29/07/2058	केतु	13/05/2060

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि	
13/05/2060		09/04/2062		15/04/2064		09/07/2065		13/11/2066	
09/04/2062		15/04/2064		09/07/2065		13/11/2066		22/07/2068	
बुध	23/08/2060	शुक्र	02/08/2062	सूर्य	28/05/2064	मंगल	29/08/2065	शनि	26/01/2067
शुक्र	09/12/2060	सूर्य	11/10/2062	मंगल	13/07/2064	गुरु	23/10/2065	केतु	16/04/2067
सूर्य	13/02/2061	मंगल	26/12/2062	गुरु	02/09/2064	शनि	22/12/2065	चंद्र	10/07/2067
मंगल	26/04/2061	गुरु	18/03/2063	शनि	26/10/2064	केतु	23/02/2066	बुध	08/10/2067
गुरु	13/07/2061	शनि	15/06/2063	केतु	23/12/2064	चंद्र	02/05/2066	शुक्र	12/01/2068
शनि	05/10/2061	केतु	19/09/2063	चंद्र	24/02/2065	बुध	13/07/2066	सूर्य	11/03/2068
केतु	03/01/2062	चंद्र	29/12/2063	बुध	01/05/2065	शुक्र	27/09/2066	मंगल	14/05/2068
चंद्र	09/04/2062	बुध	15/04/2064	शुक्र	09/07/2065	सूर्य	13/11/2066	गुरु	22/07/2068

शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
22/07/2068		14/05/2070		18/04/2072		08/05/2074		09/07/2076	
14/05/2070		18/04/2072		08/05/2074		09/07/2076		06/11/2077	
केतु	15/10/2068	चंद्र	19/08/2070	बुध	06/08/2072	शुक्र	08/09/2074	सूर्य	24/08/2076
चंद्र	14/01/2069	बुध	01/12/2070	शुक्र	30/11/2072	सूर्य	22/11/2074	मंगल	13/10/2076
बुध	21/04/2069	शुक्र	20/03/2071	सूर्य	09/02/2073	मंगल	12/02/2075	गुरु	07/12/2076
शुक्र	02/08/2069	सूर्य	26/05/2071	मंगल	28/04/2073	गुरु	12/05/2075	शनि	03/02/2077
सूर्य	04/10/2069	मंगल	07/08/2071	गुरु	21/07/2073	शनि	16/08/2075	केतु	07/04/2077
मंगल	11/12/2069	गुरु	25/10/2071	शनि	19/10/2073	केतु	26/11/2075	चंद्र	13/06/2077
गुरु	23/02/2070	शनि	18/01/2072	केतु	24/01/2074	चंद्र	15/03/2076	बुध	23/08/2077
शनि	14/05/2070	केतु	18/04/2072	चंद्र	08/05/2074	बुध	09/07/2076	शुक्र	06/11/2077

शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध	
06/11/2077		19/04/2079		12/11/2080		22/10/2082		15/11/2084	
19/04/2079		12/11/2080		22/10/2082		15/11/2084		27/01/2087	
मंगल	31/12/2077	गुरु	22/06/2079	केतु	12/02/2081	चंद्र	03/02/2083	बुध	13/03/2085
गुरु	28/02/2078	शनि	30/08/2079	चंद्र	20/05/2081	बुध	25/05/2083	शुक्र	16/07/2085
शनि	03/05/2078	केतु	13/11/2079	बुध	01/09/2081	शुक्र	19/09/2083	सूर्य	30/09/2085
केतु	10/07/2078	चंद्र	31/01/2080	शुक्र	20/12/2081	सूर्य	29/11/2083	मंगल	22/12/2085
चंद्र	21/09/2078	बुध	24/04/2080	सूर्य	25/02/2082	मंगल	16/02/2084	गुरु	22/03/2086
बुध	08/12/2078	शुक्र	21/07/2080	मंगल	10/05/2082	गुरु	10/05/2084	शनि	27/06/2086
शुक्र	28/02/2079	सूर्य	14/09/2080	गुरु	28/07/2082	शनि	10/08/2084	केतु	08/10/2086
सूर्य	19/04/2079	मंगल	12/11/2080	शनि	22/10/2082	केतु	15/11/2084	चंद्र	27/01/2087

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 0 वर्ष 0 मास 6 दिन

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
19/10/1979		26/10/1979		26/06/1986		24/02/1991		24/02/2003	
26/10/1979		26/06/1986		24/02/1991		24/02/2003		25/10/2013	
	00/00/0000	चंद्र	15/05/1980	मंगल	03/10/1986	राहु	12/12/1992	गुरु	28/07/2004
	00/00/0000	मंगल	05/10/1980	राहु	16/06/1987	गुरु	20/07/1994	शनि	05/04/2006
	00/00/0000	राहु	05/10/1981	गुरु	29/01/1988	शनि	13/06/1996	बुध	09/10/2007
	00/00/0000	गुरु	25/08/1982	शनि	25/10/1988	बुध	24/02/1998	केतु	24/05/2008
	00/00/0000	शनि	15/09/1983	बुध	23/06/1989	केतु	06/11/1998	शुक्र	04/03/2010
	00/00/0000	बुध	25/08/1984	केतु	01/10/1989	शुक्र	06/11/2000	सूर्य	15/09/2010
	00/00/0000	केतु	14/01/1985	शुक्र	12/07/1990	सूर्य	13/06/2001	चंद्र	05/08/2011
	19/10/1979	शुक्र	24/02/1986	सूर्य	05/10/1990	चंद्र	13/06/2002	मंगल	20/03/2012
शुक्र	26/10/1979	सूर्य	26/06/1986	चंद्र	24/02/1991	मंगल	24/02/2003	राहु	25/10/2013

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
25/10/2013		26/06/2026		25/10/2037		26/06/2042		26/10/2055	
26/06/2026		25/10/2037		26/06/2042		26/10/2055		19/10/2059	
शनि	28/10/2015	बुध	02/02/2028	केतु	01/02/2038	शुक्र	14/09/2044	सूर्य	07/01/2056
बुध	13/08/2017	केतु	30/09/2028	शुक्र	13/11/2038	सूर्य	16/05/2045	चंद्र	07/05/2056
केतु	10/05/2018	शुक्र	21/08/2030	सूर्य	06/02/2039	चंद्र	26/06/2046	मंगल	01/08/2056
शुक्र	19/06/2020	सूर्य	16/03/2031	चंद्र	28/06/2039	मंगल	06/04/2047	राहु	08/03/2057
सूर्य	05/02/2021	चंद्र	24/02/2032	मंगल	05/10/2039	राहु	05/04/2049	गुरु	19/09/2057
चंद्र	26/02/2022	मंगल	23/10/2032	राहु	17/06/2040	गुरु	14/01/2051	शनि	08/05/2058
मंगल	23/11/2022	राहु	06/07/2034	गुरु	30/01/2041	शनि	24/02/2053	बुध	01/12/2058
राहु	17/10/2024	गुरु	09/01/2036	शनि	27/10/2041	बुध	14/01/2055	केतु	24/02/2059
गुरु	26/06/2026	शनि	25/10/2037	बुध	26/06/2042	केतु	26/10/2055	शुक्र	19/10/2059

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
19/10/1979		26/10/1979		15/05/1980		05/10/1980		05/10/1981	
26/10/1979		15/05/1980		05/10/1980		05/10/1981		25/08/1982	
	00/00/0000	चंद्र	11/11/1979	मंगल	24/05/1980	राहु	28/11/1980	गुरु	17/11/1981
	00/00/0000	मंगल	23/11/1979	राहु	14/06/1980	गुरु	16/01/1981	शनि	07/01/1982
	00/00/0000	राहु	24/12/1979	गुरु	03/07/1980	शनि	15/03/1981	बुध	22/02/1982
	00/00/0000	गुरु	20/01/1980	शनि	25/07/1980	बुध	06/05/1981	केतु	13/03/1982
	00/00/0000	शनि	21/02/1980	बुध	15/08/1980	केतु	27/05/1981	शुक्र	06/05/1982
	00/00/0000	बुध	21/03/1980	केतु	23/08/1980	शुक्र	27/07/1981	सूर्य	23/05/1982
	00/00/0000	केतु	01/04/1980	शुक्र	16/09/1980	सूर्य	14/08/1981	चंद्र	19/06/1982
	19/10/1979	शुक्र	05/05/1980	सूर्य	23/09/1980	चंद्र	13/09/1981	मंगल	08/07/1982
केतु	26/10/1979	सूर्य	15/05/1980	चंद्र	05/10/1980	मंगल	05/10/1981	राहु	25/08/1982

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
25/08/1982		15/09/1983		25/08/1984		14/01/1985		24/02/1986	
15/09/1983		25/08/1984		14/01/1985		24/02/1986		26/06/1986	
शनि	25/10/1982	बुध	03/11/1983	केतु	02/09/1984	शुक्र	23/03/1985	सूर्य	02/03/1986
बुध	19/12/1982	केतु	23/11/1983	शुक्र	26/09/1984	सूर्य	12/04/1985	चंद्र	12/03/1986
केतु	11/01/1983	शुक्र	19/01/1984	सूर्य	03/10/1984	चंद्र	16/05/1985	मंगल	19/03/1986
शुक्र	16/03/1983	सूर्य	06/02/1984	चंद्र	15/10/1984	मंगल	08/06/1985	राहु	06/04/1986
सूर्य	04/04/1983	चंद्र	05/03/1984	मंगल	23/10/1984	राहु	08/08/1985	गुरु	23/04/1986
चंद्र	06/05/1983	मंगल	26/03/1984	राहु	13/11/1984	गुरु	01/10/1985	शनि	12/05/1986
मंगल	29/05/1983	राहु	16/05/1984	गुरु	02/12/1984	शनि	05/12/1985	बुध	29/05/1986
राहु	26/07/1983	गुरु	01/07/1984	शनि	25/12/1984	बुध	31/01/1986	केतु	05/06/1986
गुरु	15/09/1983	शनि	25/08/1984	बुध	14/01/1985	केतु	24/02/1986	शुक्र	26/06/1986

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
26/06/1986		03/10/1986		16/06/1987		29/01/1988		25/10/1988	
03/10/1986		16/06/1987		29/01/1988		25/10/1988		23/06/1989	
मंगल	01/07/1986	राहु	10/11/1986	गुरु	16/07/1987	शनि	12/03/1988	बुध	28/11/1988
राहु	16/07/1986	गुरु	14/12/1986	शनि	21/08/1987	बुध	19/04/1988	केतु	12/12/1988
गुरु	30/07/1986	शनि	24/01/1987	बुध	22/09/1987	केतु	05/05/1988	शुक्र	21/01/1989
शनि	14/08/1986	बुध	01/03/1987	केतु	05/10/1987	शुक्र	19/06/1988	सूर्य	02/02/1989
बुध	28/08/1986	केतु	16/03/1987	शुक्र	12/11/1987	सूर्य	02/07/1988	चंद्र	23/02/1989
केतु	03/09/1986	शुक्र	28/04/1987	सूर्य	24/11/1987	चंद्र	25/07/1988	मंगल	09/03/1989
शुक्र	20/09/1986	सूर्य	10/05/1987	चंद्र	13/12/1987	मंगल	09/08/1988	राहु	14/04/1989
सूर्य	25/09/1986	चंद्र	01/06/1987	मंगल	26/12/1987	राहु	19/09/1988	गुरु	16/05/1989
चंद्र	03/10/1986	मंगल	16/06/1987	राहु	29/01/1988	गुरु	25/10/1988	शनि	23/06/1989

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
23/06/1989		01/10/1989		12/07/1990		05/10/1990		24/02/1991	
01/10/1989		12/07/1990		05/10/1990		24/02/1991		12/12/1992	
केतु	29/06/1989	शुक्र	17/11/1989	सूर्य	16/07/1990	चंद्र	17/10/1990	राहु	03/06/1991
शुक्र	16/07/1989	सूर्य	01/12/1989	चंद्र	23/07/1990	मंगल	25/10/1990	गुरु	29/08/1991
सूर्य	21/07/1989	चंद्र	25/12/1989	मंगल	28/07/1990	राहु	15/11/1990	शनि	11/12/1991
चंद्र	29/07/1989	मंगल	10/01/1990	राहु	10/08/1990	गुरु	04/12/1990	बुध	14/03/1992
मंगल	04/08/1989	राहु	22/02/1990	गुरु	21/08/1990	शनि	27/12/1990	केतु	21/04/1992
राहु	19/08/1989	गुरु	01/04/1990	शनि	04/09/1990	बुध	16/01/1991	शुक्र	08/08/1992
गुरु	01/09/1989	शनि	16/05/1990	बुध	16/09/1990	केतु	24/01/1991	सूर्य	10/09/1992
शनि	17/09/1989	बुध	25/06/1990	केतु	21/09/1990	शुक्र	17/02/1991	चंद्र	04/11/1992
बुध	01/10/1989	केतु	12/07/1990	शुक्र	05/10/1990	सूर्य	24/02/1991	मंगल	12/12/1992

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
12/12/1992		20/07/1994		13/06/1996		24/02/1998		06/11/1998	
20/07/1994		13/06/1996		24/02/1998		06/11/1998		06/11/2000	
गुरु	28/02/1993	शनि	07/11/1994	बुध	09/09/1996	केतु	11/03/1998	शुक्र	08/03/1999
शनि	01/06/1993	बुध	13/02/1995	केतु	15/10/1996	शुक्र	22/04/1998	सूर्य	14/04/1999
बुध	23/08/1993	केतु	26/03/1995	शुक्र	27/01/1997	सूर्य	05/05/1998	चंद्र	14/06/1999
केतु	26/09/1993	शुक्र	19/07/1995	सूर्य	27/02/1997	चंद्र	26/05/1998	मंगल	26/07/1999
शुक्र	01/01/1994	सूर्य	23/08/1995	चंद्र	19/04/1997	मंगल	10/06/1998	राहु	13/11/1999
सूर्य	30/01/1994	चंद्र	20/10/1995	मंगल	26/05/1997	राहु	19/07/1998	गुरु	18/02/2000
चंद्र	20/03/1994	मंगल	29/11/1995	राहु	27/08/1997	गुरु	22/08/1998	शनि	13/06/2000
मंगल	23/04/1994	राहु	12/03/1996	गुरु	17/11/1997	शनि	01/10/1998	बुध	24/09/2000
राहु	20/07/1994	गुरु	13/06/1996	शनि	24/02/1998	बुध	06/11/1998	केतु	06/11/2000

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
06/11/2000		13/06/2001		13/06/2002		24/02/2003		28/07/2004	
13/06/2001		13/06/2002		24/02/2003		28/07/2004		05/04/2006	
सूर्य	17/11/2000	चंद्र	14/07/2001	मंगल	28/06/2002	गुरु	04/05/2003	शनि	02/11/2004
चंद्र	05/12/2000	मंगल	04/08/2001	राहु	06/08/2002	शनि	26/07/2003	बुध	29/01/2005
मंगल	18/12/2000	राहु	28/09/2001	गुरु	09/09/2002	बुध	07/10/2003	केतु	06/03/2005
राहु	20/01/2001	गुरु	15/11/2001	शनि	19/10/2002	केतु	06/11/2003	शुक्र	16/06/2005
गुरु	18/02/2001	शनि	12/01/2002	बुध	24/11/2002	शुक्र	01/02/2004	सूर्य	17/07/2005
शनि	25/03/2001	बुध	05/03/2002	केतु	09/12/2002	सूर्य	27/02/2004	चंद्र	07/09/2005
बुध	25/04/2001	केतु	26/03/2002	शुक्र	21/01/2003	चंद्र	10/04/2004	मंगल	13/10/2005
केतु	08/05/2001	शुक्र	26/05/2002	सूर्य	03/02/2003	मंगल	11/05/2004	राहु	13/01/2006
शुक्र	13/06/2001	सूर्य	13/06/2002	चंद्र	24/02/2003	राहु	28/07/2004	गुरु	05/04/2006

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
05/04/2006		09/10/2007		24/05/2008		04/03/2010		15/09/2010	
09/10/2007		24/05/2008		04/03/2010		15/09/2010		05/08/2011	
बुध	23/06/2006	केतु	23/10/2007	शुक्र	09/09/2008	सूर्य	14/03/2010	चंद्र	12/10/2010
केतु	25/07/2006	शुक्र	29/11/2007	सूर्य	11/10/2008	चंद्र	30/03/2010	मंगल	31/10/2010
शुक्र	25/10/2006	सूर्य	11/12/2007	चंद्र	04/12/2008	मंगल	10/04/2010	राहु	18/12/2010
सूर्य	21/11/2006	चंद्र	30/12/2007	मंगल	11/01/2009	राहु	09/05/2010	गुरु	31/01/2011
चंद्र	06/01/2007	मंगल	12/01/2008	राहु	19/04/2009	गुरु	04/06/2010	शनि	23/03/2011
मंगल	08/02/2007	राहु	15/02/2008	गुरु	14/07/2009	शनि	05/07/2010	बुध	08/05/2011
राहु	01/05/2007	गुरु	16/03/2008	शनि	25/10/2009	बुध	02/08/2010	केतु	27/05/2011
गुरु	14/07/2007	शनि	21/04/2008	बुध	25/01/2010	केतु	13/08/2010	शुक्र	20/07/2011
शनि	09/10/2007	बुध	24/05/2008	केतु	04/03/2010	शुक्र	15/09/2010	सूर्य	05/08/2011

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
05/08/2011		20/03/2012		25/10/2013		28/10/2015		13/08/2017	
20/03/2012		25/10/2013		28/10/2015		13/08/2017		10/05/2018	
मंगल	19/08/2011	राहु	15/06/2012	शनि	18/02/2014	बुध	28/01/2016	केतु	29/08/2017
राहु	22/09/2011	गुरु	01/09/2012	बुध	02/06/2014	केतु	07/03/2016	शुक्र	13/10/2017
गुरु	22/10/2011	शनि	03/12/2012	केतु	15/07/2014	शुक्र	24/06/2016	सूर्य	26/10/2017
शनि	27/11/2011	बुध	24/02/2013	शुक्र	14/11/2014	सूर्य	27/07/2016	चंद्र	18/11/2017
बुध	29/12/2011	केतु	30/03/2013	सूर्य	20/12/2014	चंद्र	19/09/2016	मंगल	03/12/2017
केतु	11/01/2012	शुक्र	05/07/2013	चंद्र	19/02/2015	मंगल	28/10/2016	राहु	13/01/2018
शुक्र	18/02/2012	सूर्य	03/08/2013	मंगल	03/04/2015	राहु	03/02/2017	गुरु	18/02/2018
सूर्य	01/03/2012	चंद्र	21/09/2013	राहु	22/07/2015	गुरु	01/05/2017	शनि	02/04/2018
चंद्र	20/03/2012	मंगल	25/10/2013	गुरु	28/10/2015	शनि	13/08/2017	बुध	10/05/2018

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
10/05/2018		19/06/2020		05/02/2021		26/02/2022		23/11/2022	
19/06/2020		05/02/2021		26/02/2022		23/11/2022		17/10/2024	
शुक्र	15/09/2018	सूर्य	01/07/2020	चंद्र	09/03/2021	मंगल	14/03/2022	राहु	07/03/2023
सूर्य	24/10/2018	चंद्र	20/07/2020	मंगल	01/04/2021	राहु	23/04/2022	गुरु	07/06/2023
चंद्र	27/12/2018	मंगल	02/08/2020	राहु	29/05/2021	गुरु	29/05/2022	शनि	25/09/2023
मंगल	10/02/2019	राहु	06/09/2020	गुरु	19/07/2021	शनि	11/07/2022	बुध	02/01/2024
राहु	06/06/2019	गुरु	07/10/2020	शनि	18/09/2021	बुध	18/08/2022	केतु	11/02/2024
गुरु	17/09/2019	शनि	12/11/2020	बुध	12/11/2021	केतु	03/09/2022	शुक्र	06/06/2024
शनि	17/01/2020	बुध	15/12/2020	केतु	04/12/2021	शुक्र	18/10/2022	सूर्य	10/07/2024
बुध	05/05/2020	केतु	29/12/2020	शुक्र	07/02/2022	सूर्य	31/10/2022	चंद्र	06/09/2024
केतु	19/06/2020	शुक्र	05/02/2021	सूर्य	26/02/2022	चंद्र	23/11/2022	मंगल	17/10/2024

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
17/10/2024		26/06/2026		02/02/2028		30/09/2028		21/08/2030	
26/06/2026		02/02/2028		30/09/2028		21/08/2030		16/03/2031	
गुरु	07/01/2025	बुध	17/09/2026	केतु	16/02/2028	शुक्र	23/01/2029	सूर्य	01/09/2030
शनि	15/04/2025	केतु	21/10/2026	शुक्र	27/03/2028	सूर्य	27/02/2029	चंद्र	18/09/2030
बुध	11/07/2025	शुक्र	27/01/2027	सूर्य	08/04/2028	चंद्र	25/04/2029	मंगल	30/09/2030
केतु	16/08/2025	सूर्य	25/02/2027	चंद्र	29/04/2028	मंगल	05/06/2029	राहु	31/10/2030
शुक्र	27/11/2025	चंद्र	15/04/2027	मंगल	13/05/2028	राहु	16/09/2029	गुरु	28/11/2030
सूर्य	28/12/2025	मंगल	19/05/2027	राहु	18/06/2028	गुरु	17/12/2029	शनि	30/12/2030
चंद्र	17/02/2026	राहु	15/08/2027	गुरु	20/07/2028	शनि	05/04/2030	बुध	29/01/2031
मंगल	25/03/2026	गुरु	01/11/2027	शनि	27/08/2028	बुध	12/07/2030	केतु	10/02/2031
राहु	26/06/2026	शनि	02/02/2028	बुध	30/09/2028	केतु	21/08/2030	शुक्र	16/03/2031

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
16/03/2031		24/02/2032		23/10/2032		06/07/2034		09/01/2036	
24/02/2032		23/10/2032		06/07/2034		09/01/2036		25/10/2037	
चंद्र	14/04/2031	मंगल	09/03/2032	राहु	24/01/2033	गुरु	17/09/2034	शनि	21/04/2036
मंगल	04/05/2031	राहु	15/04/2032	गुरु	17/04/2033	शनि	14/12/2034	बुध	23/07/2036
राहु	25/06/2031	गुरु	17/05/2032	शनि	24/07/2033	बुध	02/03/2035	केतु	30/08/2036
गुरु	10/08/2031	शनि	24/06/2032	बुध	20/10/2033	केतु	03/04/2035	शुक्र	18/12/2036
शनि	04/10/2031	बुध	28/07/2032	केतु	25/11/2033	शुक्र	04/07/2035	सूर्य	19/01/2037
बुध	21/11/2031	केतु	11/08/2032	शुक्र	09/03/2034	सूर्य	01/08/2035	चंद्र	15/03/2037
केतु	12/12/2031	शुक्र	21/09/2032	सूर्य	09/04/2034	चंद्र	16/09/2035	मंगल	22/04/2037
शुक्र	07/02/2032	सूर्य	03/10/2032	चंद्र	30/05/2034	मंगल	18/10/2035	राहु	30/07/2037
सूर्य	24/02/2032	चंद्र	23/10/2032	मंगल	06/07/2034	राहु	09/01/2036	गुरु	25/10/2037

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
25/10/2037		01/02/2038		13/11/2038		06/02/2039		28/06/2039	
01/02/2038		13/11/2038		06/02/2039		28/06/2039		05/10/2039	
केतु	31/10/2037	शुक्र	21/03/2038	सूर्य	17/11/2038	चंद्र	18/02/2039	मंगल	04/07/2039
शुक्र	16/11/2037	सूर्य	04/04/2038	चंद्र	24/11/2038	मंगल	26/02/2039	राहु	19/07/2039
सूर्य	21/11/2037	चंद्र	28/04/2038	मंगल	29/11/2038	राहु	19/03/2039	गुरु	01/08/2039
चंद्र	30/11/2037	मंगल	14/05/2038	राहु	12/12/2038	गुरु	07/04/2039	शनि	17/08/2039
मंगल	05/12/2037	राहु	26/06/2038	गुरु	23/12/2038	शनि	30/04/2039	बुध	31/08/2039
राहु	20/12/2037	गुरु	03/08/2038	शनि	06/01/2039	बुध	20/05/2039	केतु	05/09/2039
गुरु	03/01/2038	शनि	17/09/2038	बुध	18/01/2039	केतु	28/05/2039	शुक्र	22/09/2039
शनि	18/01/2038	बुध	27/10/2038	केतु	23/01/2039	शुक्र	21/06/2039	सूर्य	27/09/2039
बुध	01/02/2038	केतु	13/11/2038	शुक्र	06/02/2039	सूर्य	28/06/2039	चंद्र	05/10/2039

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
05/10/2039		17/06/2040		30/01/2041		27/10/2041		26/06/2042	
17/06/2040		30/01/2041		27/10/2041		26/06/2042		14/09/2044	
राहु	13/11/2039	गुरु	17/07/2040	शनि	14/03/2041	बुध	30/11/2041	शुक्र	08/11/2042
गुरु	17/12/2039	शनि	22/08/2040	बुध	21/04/2041	केतु	14/12/2041	सूर्य	18/12/2042
शनि	26/01/2040	बुध	23/09/2040	केतु	07/05/2041	शुक्र	24/01/2042	चंद्र	24/02/2043
बुध	02/03/2040	केतु	07/10/2040	शुक्र	21/06/2041	सूर्य	05/02/2042	मंगल	12/04/2043
केतु	17/03/2040	शुक्र	14/11/2040	सूर्य	04/07/2041	चंद्र	25/02/2042	राहु	12/08/2043
शुक्र	29/04/2040	सूर्य	25/11/2040	चंद्र	27/07/2041	मंगल	11/03/2042	गुरु	28/11/2043
सूर्य	12/05/2040	चंद्र	14/12/2040	मंगल	12/08/2041	राहु	16/04/2042	शनि	05/04/2044
चंद्र	02/06/2040	मंगल	27/12/2040	राहु	21/09/2041	गुरु	18/05/2042	बुध	29/07/2044
मंगल	17/06/2040	राहु	30/01/2041	गुरु	27/10/2041	शनि	26/06/2042	केतु	14/09/2044

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
14/09/2044		16/05/2045		26/06/2046		06/04/2047		05/04/2049	
16/05/2045		26/06/2046		06/04/2047		05/04/2049		14/01/2051	
सूर्य	26/09/2044	चंद्र	19/06/2045	मंगल	12/07/2046	राहु	24/07/2047	गुरु	01/07/2049
चंद्र	17/10/2044	मंगल	12/07/2045	राहु	24/08/2046	गुरु	30/10/2047	शनि	12/10/2049
मंगल	31/10/2044	राहु	11/09/2045	गुरु	01/10/2046	शनि	22/02/2048	बुध	12/01/2050
राहु	06/12/2044	गुरु	04/11/2045	शनि	15/11/2046	बुध	05/06/2048	केतु	18/02/2050
गुरु	08/01/2045	शनि	07/01/2046	बुध	25/12/2046	केतु	17/07/2048	शुक्र	07/06/2050
शनि	15/02/2045	बुध	06/03/2046	केतु	10/01/2047	शुक्र	16/11/2048	सूर्य	09/07/2050
बुध	22/03/2045	केतु	30/03/2046	शुक्र	27/02/2047	सूर्य	23/12/2048	चंद्र	01/09/2050
केतु	05/04/2045	शुक्र	05/06/2046	सूर्य	13/03/2047	चंद्र	22/02/2049	मंगल	09/10/2050
शुक्र	16/05/2045	सूर्य	26/06/2046	चंद्र	06/04/2047	मंगल	05/04/2049	राहु	14/01/2051

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
14/01/2051		24/02/2053		14/01/2055		26/10/2055		07/01/2056	
24/02/2053		14/01/2055		26/10/2055		07/01/2056		07/05/2056	
शनि	17/05/2051	बुध	01/06/2053	केतु	31/01/2055	सूर्य	29/10/2055	चंद्र	17/01/2056
बुध	03/09/2051	केतु	12/07/2053	शुक्र	19/03/2055	चंद्र	04/11/2055	मंगल	24/01/2056
केतु	18/10/2051	शुक्र	04/11/2053	सूर्य	03/04/2055	मंगल	09/11/2055	राहु	11/02/2056
शुक्र	23/02/2052	सूर्य	08/12/2053	चंद्र	26/04/2055	राहु	20/11/2055	गुरु	27/02/2056
सूर्य	02/04/2052	चंद्र	04/02/2054	मंगल	13/05/2055	गुरु	29/11/2055	शनि	18/03/2056
चंद्र	05/06/2052	मंगल	16/03/2054	राहु	24/06/2055	शनि	11/12/2055	बुध	04/04/2056
मंगल	20/07/2052	राहु	27/06/2054	गुरु	01/08/2055	बुध	21/12/2055	केतु	11/04/2056
राहु	13/11/2052	गुरु	27/09/2054	शनि	15/09/2055	केतु	25/12/2055	शुक्र	01/05/2056
गुरु	24/02/2053	शनि	14/01/2055	बुध	26/10/2055	शुक्र	07/01/2056	सूर्य	07/05/2056

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 0 मास 4 दिन

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
19/10/1979		23/10/1979		23/10/1996		23/10/2006		23/10/2025	
23/10/1979		23/10/1996		23/10/2006		23/10/2025		23/10/2037	
	00/00/0000	बुध	27/06/1982	शनि	26/09/1997	गुरु	25/02/2010	राहु	22/02/2027
	00/00/0000	शनि	23/01/1984	गुरु	30/06/1999	राहु	06/04/2012	शुक्र	23/06/2029
	00/00/0000	गुरु	19/01/1987	राहु	09/08/2000	शुक्र	16/12/2015	सूर्य	22/02/2030
	00/00/0000	राहु	09/12/1988	शुक्र	20/07/2002	सूर्य	05/01/2017	चंद्र	23/10/2031
	00/00/0000	शुक्र	30/03/1992	सूर्य	08/02/2003	चंद्र	27/08/2019	मंगल	12/09/2032
	00/00/0000	सूर्य	10/03/1993	चंद्र	30/06/2004	मंगल	22/01/2021	बुध	03/08/2034
	19/10/1979	चंद्र	21/07/1995	मंगल	27/03/2005	बुध	19/01/2024	शनि	13/09/2035
चंद्र	23/10/1979	मंगल	23/10/1996	बुध	23/10/2006	शनि	23/10/2025	गुरु	23/10/2037

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष	
23/10/2037		23/10/2058		23/10/2064		23/10/2079	
23/10/2058		23/10/2064		23/10/2079		19/10/2087	
शुक्र	22/11/2041	सूर्य	22/02/2059	चंद्र	23/11/2066	मंगल	27/05/2080
सूर्य	22/01/2043	चंद्र	23/12/2059	मंगल	02/01/2068	बुध	30/08/2081
चंद्र	23/12/2045	मंगल	03/06/2060	बुध	14/05/2070	शनि	27/05/2082
मंगल	14/07/2047	बुध	13/05/2061	शनि	03/10/2071	गुरु	23/10/2083
बुध	02/11/2050	शनि	02/12/2061	गुरु	24/05/2074	राहु	12/09/2084
शनि	12/10/2052	गुरु	23/12/2062	राहु	23/01/2076	शुक्र	03/04/2086
गुरु	23/06/2056	राहु	23/08/2063	शुक्र	23/12/2078	सूर्य	12/09/2086
राहु	23/10/2058	शुक्र	23/10/2064	सूर्य	23/10/2079	चंद्र	19/10/2087

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र	
19/10/1979	
23/10/1979	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	19/10/1979
सूर्य	23/10/1979

बुध - बुध	
23/10/1979	
27/06/1982	
बुध	25/03/1980
शनि	24/06/1980
गुरु	13/12/1980
राहु	31/03/1981
शुक्र	07/10/1981
सूर्य	01/12/1981
चंद्र	15/04/1982
मंगल	27/06/1982

बुध - शनि	
27/06/1982	
23/01/1984	
शनि	19/08/1982
गुरु	28/11/1982
राहु	31/01/1983
शुक्र	23/05/1983
सूर्य	24/06/1983
चंद्र	12/09/1983
मंगल	24/10/1983
बुध	23/01/1984

बुध - गुरु	
23/01/1984	
19/01/1987	
गुरु	02/08/1984
राहु	01/12/1984
शुक्र	02/07/1985
सूर्य	31/08/1985
चंद्र	30/01/1986
मंगल	21/04/1986
बुध	10/10/1986
शनि	19/01/1987

बुध - राहु	
19/01/1987	
09/12/1988	
राहु	06/04/1987
शुक्र	18/08/1987
सूर्य	25/09/1987
चंद्र	30/12/1987
मंगल	19/02/1988
बुध	07/06/1988
शनि	10/08/1988
गुरु	09/12/1988

बुध - शुक्र	
09/12/1988	
30/03/1992	
शुक्र	01/08/1989
सूर्य	07/10/1989
चंद्र	23/03/1990
मंगल	21/06/1990
बुध	28/12/1990
शनि	19/04/1991
गुरु	17/11/1991
राहु	30/03/1992

बुध - सूर्य	
30/03/1992	
10/03/1993	
सूर्य	18/04/1992
चंद्र	05/06/1992
मंगल	01/07/1992
बुध	24/08/1992
शनि	25/09/1992
गुरु	25/11/1992
राहु	02/01/1993
शुक्र	10/03/1993

बुध - चंद्र	
10/03/1993	
21/07/1995	
चंद्र	08/07/1993
मंगल	10/09/1993
बुध	24/01/1994
शनि	13/04/1994
गुरु	12/09/1994
राहु	17/12/1994
शुक्र	03/06/1995
सूर्य	21/07/1995

बुध - मंगल	
21/07/1995	
23/10/1996	
मंगल	24/08/1995
बुध	04/11/1995
शनि	17/12/1995
गुरु	07/03/1996
राहु	27/04/1996
शुक्र	25/07/1996
सूर्य	20/08/1996
चंद्र	23/10/1996

शनि - शनि	
23/10/1996	
26/09/1997	
शनि	23/11/1996
गुरु	21/01/1997
राहु	28/02/1997
शुक्र	05/05/1997
सूर्य	24/05/1997
चंद्र	09/07/1997
मंगल	04/08/1997
बुध	26/09/1997

शनि - गुरु	
26/09/1997	
30/06/1999	
गुरु	17/01/1998
राहु	29/03/1998
शुक्र	01/08/1998
सूर्य	06/09/1998
चंद्र	04/12/1998
मंगल	21/01/1999
बुध	02/05/1999
शनि	30/06/1999

शनि - राहु	
30/06/1999	
09/08/2000	
राहु	14/08/1999
शुक्र	01/11/1999
सूर्य	24/11/1999
चंद्र	19/01/2000
मंगल	18/02/2000
बुध	22/04/2000
शनि	30/05/2000
गुरु	09/08/2000

शनि - शुक्र	
09/08/2000	
20/07/2002	
शुक्र	25/12/2000
सूर्य	03/02/2001
चंद्र	12/05/2001
मंगल	04/07/2001
बुध	24/10/2001
शनि	29/12/2001
गुरु	02/05/2002
राहु	20/07/2002

शनि - सूर्य	
20/07/2002	
08/02/2003	
सूर्य	01/08/2002
चंद्र	29/08/2002
मंगल	13/09/2002
बुध	15/10/2002
शनि	03/11/2002
गुरु	08/12/2002
राहु	31/12/2002
शुक्र	08/02/2003

शनि - चंद्र	
08/02/2003	
30/06/2004	
चंद्र	20/04/2003
मंगल	27/05/2003
बुध	15/08/2003
शनि	01/10/2003
गुरु	29/12/2003
राहु	24/02/2004
शुक्र	01/06/2004
सूर्य	30/06/2004

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र	
30/06/2004		27/03/2005		23/10/2006		25/02/2010		06/04/2012	
27/03/2005		23/10/2006		25/02/2010		06/04/2012		16/12/2015	
मंगल	20/07/2004	बुध	26/06/2005	गुरु	26/05/2007	राहु	22/05/2010	शुक्र	24/12/2012
बुध	31/08/2004	शनि	18/08/2005	राहु	09/10/2007	शुक्र	19/10/2010	सूर्य	09/03/2013
शनि	25/09/2004	गुरु	27/11/2005	शुक्र	02/06/2008	सूर्य	30/11/2010	चंद्र	13/09/2013
गुरु	12/11/2004	राहु	30/01/2006	सूर्य	09/08/2008	चंद्र	18/03/2011	मंगल	22/12/2013
राहु	12/12/2004	शुक्र	22/05/2006	चंद्र	25/01/2009	मंगल	14/05/2011	बुध	22/07/2014
शुक्र	03/02/2005	सूर्य	23/06/2006	मंगल	26/04/2009	बुध	12/09/2011	शनि	24/11/2014
सूर्य	18/02/2005	चंद्र	10/09/2006	बुध	04/11/2009	शनि	22/11/2011	गुरु	20/07/2015
चंद्र	27/03/2005	मंगल	23/10/2006	शनि	25/02/2010	गुरु	06/04/2012	राहु	16/12/2015

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि	
16/12/2015		05/01/2017		27/08/2019		22/01/2021		19/01/2024	
05/01/2017		27/08/2019		22/01/2021		19/01/2024		23/10/2025	
सूर्य	07/01/2016	चंद्र	19/05/2017	मंगल	04/10/2019	बुध	13/07/2021	शनि	19/03/2024
चंद्र	29/02/2016	मंगल	29/07/2017	बुध	24/12/2019	शनि	22/10/2021	गुरु	10/07/2024
मंगल	29/03/2016	बुध	28/12/2017	शनि	09/02/2020	गुरु	02/05/2022	राहु	19/09/2024
बुध	29/05/2016	शनि	27/03/2018	गुरु	10/05/2020	राहु	01/09/2022	शुक्र	22/01/2025
शनि	03/07/2016	गुरु	13/09/2018	राहु	06/07/2020	शुक्र	01/04/2023	सूर्य	27/02/2025
गुरु	09/09/2016	राहु	29/12/2018	शुक्र	14/10/2020	सूर्य	01/06/2023	चंद्र	27/05/2025
राहु	22/10/2016	शुक्र	04/07/2019	सूर्य	11/11/2020	चंद्र	30/10/2023	मंगल	14/07/2025
शुक्र	05/01/2017	सूर्य	27/08/2019	चंद्र	22/01/2021	मंगल	19/01/2024	बुध	23/10/2025

राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
23/10/2025		22/02/2027		23/06/2029		22/02/2030		23/10/2031	
22/02/2027		23/06/2029		22/02/2030		23/10/2031		12/09/2032	
राहु	16/12/2025	शुक्र	07/08/2027	सूर्य	07/07/2029	चंद्र	17/05/2030	मंगल	16/11/2031
शुक्र	21/03/2026	सूर्य	23/09/2027	चंद्र	09/08/2029	मंगल	01/07/2030	बुध	06/01/2032
सूर्य	17/04/2026	चंद्र	19/01/2028	मंगल	27/08/2029	बुध	05/10/2030	शनि	06/02/2032
चंद्र	23/06/2026	मंगल	22/03/2028	बुध	05/10/2029	शनि	30/11/2030	गुरु	03/04/2032
मंगल	29/07/2026	बुध	04/08/2028	शनि	27/10/2029	गुरु	18/03/2031	राहु	09/05/2032
बुध	14/10/2026	शनि	21/10/2028	गुरु	09/12/2029	राहु	24/05/2031	शुक्र	11/07/2032
शनि	28/11/2026	गुरु	20/03/2029	राहु	05/01/2030	शुक्र	20/09/2031	सूर्य	29/07/2032
गुरु	22/02/2027	राहु	23/06/2029	शुक्र	22/02/2030	सूर्य	23/10/2031	चंद्र	12/09/2032

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
12/09/2032		03/08/2034		13/09/2035		23/10/2037		22/11/2041	
03/08/2034		13/09/2035		23/10/2037		22/11/2041		22/01/2043	
बुध	30/12/2032	शनि	09/09/2034	गुरु	26/01/2036	शुक्र	09/08/2038	सूर्य	16/12/2041
शनि	03/03/2033	गुरु	20/11/2034	राहु	21/04/2036	सूर्य	31/10/2038	चंद्र	13/02/2042
गुरु	03/07/2033	राहु	04/01/2035	शुक्र	18/09/2036	चंद्र	26/05/2039	मंगल	17/03/2042
राहु	18/09/2033	शुक्र	24/03/2035	सूर्य	31/10/2036	मंगल	13/09/2039	बुध	23/05/2042
शुक्र	30/01/2034	सूर्य	15/04/2035	चंद्र	15/02/2037	बुध	05/05/2040	शनि	01/07/2042
सूर्य	09/03/2034	चंद्र	11/06/2035	मंगल	13/04/2037	शनि	20/09/2040	गुरु	14/09/2042
चंद्र	13/06/2034	मंगल	11/07/2035	बुध	12/08/2037	गुरु	10/06/2041	राहु	01/11/2042
मंगल	03/08/2034	बुध	13/09/2035	शनि	23/10/2037	राहु	22/11/2041	शुक्र	22/01/2043

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु	
22/01/2043		23/12/2045		14/07/2047		02/11/2050		12/10/2052	
23/12/2045		14/07/2047		02/11/2050		12/10/2052		23/06/2056	
चंद्र	19/06/2043	मंगल	03/02/2046	बुध	20/01/2048	शनि	07/01/2051	गुरु	07/06/2053
मंगल	06/09/2043	बुध	03/05/2046	शनि	11/05/2048	गुरु	12/05/2051	राहु	04/11/2053
बुध	21/02/2044	शनि	25/06/2046	गुरु	09/12/2048	राहु	30/07/2051	शुक्र	24/07/2054
शनि	30/05/2044	गुरु	03/10/2046	राहु	22/04/2049	शुक्र	15/12/2051	सूर्य	07/10/2054
गुरु	03/12/2044	राहु	05/12/2046	शुक्र	13/12/2049	सूर्य	23/01/2052	चंद्र	13/04/2055
राहु	31/03/2045	शुक्र	25/03/2047	सूर्य	18/02/2050	चंद्र	01/05/2052	मंगल	21/07/2055
शुक्र	25/10/2045	सूर्य	26/04/2047	चंद्र	05/08/2050	मंगल	23/06/2052	बुध	19/02/2056
सूर्य	23/12/2045	चंद्र	14/07/2047	मंगल	02/11/2050	बुध	12/10/2052	शनि	23/06/2056

शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध	
23/06/2056		23/10/2058		22/02/2059		23/12/2059		03/06/2060	
23/10/2058		22/02/2059		23/12/2059		03/06/2060		13/05/2061	
राहु	26/09/2056	सूर्य	30/10/2058	चंद्र	05/04/2059	मंगल	04/01/2060	बुध	27/07/2060
शुक्र	10/03/2057	चंद्र	16/11/2058	मंगल	28/04/2059	बुध	30/01/2060	शनि	28/08/2060
सूर्य	27/04/2057	मंगल	25/11/2058	बुध	15/06/2059	शनि	14/02/2060	गुरु	27/10/2060
चंद्र	23/08/2057	बुध	14/12/2058	शनि	13/07/2059	गुरु	13/03/2060	राहु	05/12/2060
मंगल	25/10/2057	शनि	25/12/2058	गुरु	04/09/2059	राहु	31/03/2060	शुक्र	10/02/2061
बुध	08/03/2058	गुरु	16/01/2059	राहु	08/10/2059	शुक्र	02/05/2060	सूर्य	01/03/2061
शनि	26/05/2058	राहु	29/01/2059	शुक्र	06/12/2059	सूर्य	11/05/2060	चंद्र	18/04/2061
गुरु	23/10/2058	शुक्र	22/02/2059	सूर्य	23/12/2059	चंद्र	03/06/2060	मंगल	13/05/2061

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
13/05/2061		02/12/2061		23/12/2062		23/08/2063		23/10/2064	
02/12/2061		23/12/2062		23/08/2063		23/10/2064		23/11/2066	
शनि	01/06/2061	गुरु	08/02/2062	राहु	19/01/2063	शुक्र	14/11/2063	चंद्र	05/02/2065
गुरु	07/07/2061	राहु	23/03/2062	शुक्र	07/03/2063	सूर्य	08/12/2063	मंगल	03/04/2065
राहु	30/07/2061	शुक्र	06/06/2062	सूर्य	21/03/2063	चंद्र	05/02/2064	बुध	31/07/2065
शुक्र	07/09/2061	सूर्य	27/06/2062	चंद्र	24/04/2063	मंगल	08/03/2064	शनि	10/10/2065
सूर्य	18/09/2061	चंद्र	20/08/2062	मंगल	12/05/2063	बुध	14/05/2064	गुरु	21/02/2066
चंद्र	16/10/2061	मंगल	18/09/2062	बुध	19/06/2063	शनि	22/06/2064	राहु	16/05/2066
मंगल	31/10/2061	बुध	17/11/2062	शनि	12/07/2063	गुरु	05/09/2064	शुक्र	11/10/2066
बुध	02/12/2061	शनि	23/12/2062	गुरु	23/08/2063	राहु	23/10/2064	सूर्य	23/11/2066

चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु	
23/11/2066		02/01/2068		14/05/2070		03/10/2071		24/05/2074	
02/01/2068		14/05/2070		03/10/2071		24/05/2074		23/01/2076	
मंगल	23/12/2066	बुध	17/05/2068	शनि	30/06/2070	गुरु	21/03/2072	राहु	31/07/2074
बुध	24/02/2067	शनि	05/08/2068	गुरु	27/09/2070	राहु	06/07/2072	शुक्र	26/11/2074
शनि	03/04/2067	गुरु	04/01/2069	राहु	22/11/2070	शुक्र	09/01/2073	सूर्य	30/12/2074
गुरु	13/06/2067	राहु	09/04/2069	शुक्र	01/03/2071	सूर्य	04/03/2073	चंद्र	24/03/2075
राहु	29/07/2067	शुक्र	24/09/2069	सूर्य	29/03/2071	चंद्र	16/07/2073	मंगल	08/05/2075
शुक्र	15/10/2067	सूर्य	11/11/2069	चंद्र	08/06/2071	मंगल	25/09/2073	बुध	12/08/2075
सूर्य	07/11/2067	चंद्र	11/03/2070	मंगल	15/07/2071	बुध	24/02/2074	शनि	08/10/2075
चंद्र	02/01/2068	मंगल	14/05/2070	बुध	03/10/2071	शनि	24/05/2074	गुरु	23/01/2076

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
23/01/2076		23/12/2078		23/10/2079		27/05/2080		30/08/2081	
23/12/2078		23/10/2079		27/05/2080		30/08/2081		27/05/2082	
शुक्र	17/08/2076	सूर्य	09/01/2079	मंगल	08/11/2079	बुध	07/08/2080	शनि	24/09/2081
सूर्य	15/10/2076	चंद्र	20/02/2079	बुध	12/12/2079	शनि	19/09/2080	गुरु	10/11/2081
चंद्र	12/03/2077	मंगल	15/03/2079	शनि	01/01/2080	गुरु	09/12/2080	राहु	10/12/2081
मंगल	30/05/2077	बुध	02/05/2079	गुरु	09/02/2080	राहु	29/01/2081	शुक्र	01/02/2082
बुध	14/11/2077	शनि	30/05/2079	राहु	04/03/2080	शुक्र	28/04/2081	सूर्य	16/02/2082
शनि	20/02/2078	गुरु	22/07/2079	शुक्र	15/04/2080	सूर्य	24/05/2081	चंद्र	26/03/2082
गुरु	27/08/2078	राहु	25/08/2079	सूर्य	27/04/2080	चंद्र	27/07/2081	मंगल	15/04/2082
राहु	23/12/2078	शुक्र	23/10/2079	चंद्र	27/05/2080	मंगल	30/08/2081	बुध	27/05/2082

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 0 वर्ष 0 मास 11 दिन

सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
19/10/1979	**31/10/1979**	**31/10/1987**	**30/10/1988**	**30/10/1990**
31/10/1979	**31/10/1987**	**30/10/1988**	**30/10/1990**	**30/10/1993**
00/00/0000	संक 10/08/1981	मंग 10/11/1987	पिंग 09/12/1988	धांय 30/01/1991
00/00/0000	मंग 30/10/1981	पिंग 30/11/1987	धांय 08/02/1989	भ्राम 31/05/1991
00/00/0000	पिंग 10/04/1982	धांय 30/12/1987	भ्राम 30/04/1989	भद्रि 31/10/1991
00/00/0000	धांय 10/12/1982	भ्राम 09/02/1988	भद्रि 10/08/1989	उल्क 30/04/1992
00/00/0000	भ्राम 31/10/1983	भद्रि 31/03/1988	उल्क 10/12/1989	सिद्ध 29/11/1992
00/00/0000	भद्रि 09/12/1984	उल्क 31/05/1988	सिद्ध 01/05/1990	संक 31/07/1993
19/10/1979	उल्क 10/04/1986	सिद्ध 10/08/1988	संक 10/10/1990	मंग 30/08/1993
उल्क 31/10/1979	सिद्ध 31/10/1987	संक 30/10/1988	मंग 30/10/1990	पिंग 30/10/1993

भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष
30/10/1993	**30/10/1997**	**30/10/2002**	**30/10/2008**	**31/10/2015**
30/10/1997	**30/10/2002**	**30/10/2008**	**31/10/2015**	**31/10/2023**
भ्राम 10/04/1994	भद्रि 11/07/1998	उल्क 31/10/2003	सिद्ध 11/03/2010	संक 10/08/2017
भद्रि 30/10/1994	उल्क 11/05/1999	सिद्ध 30/12/2004	संक 30/09/2011	मंग 30/10/2017
उल्क 01/07/1995	सिद्ध 30/04/2000	संक 01/05/2006	मंग 10/12/2011	पिंग 10/04/2018
सिद्ध 10/04/1996	संक 10/06/2001	मंग 01/07/2006	पिंग 30/04/2012	धांय 10/12/2018
संक 01/03/1997	मंग 31/07/2001	पिंग 30/10/2006	धांय 29/11/2012	भ्राम 31/10/2019
मंग 10/04/1997	पिंग 09/11/2001	धांय 01/05/2007	भ्राम 09/09/2013	भद्रि 09/12/2020
पिंग 30/06/1997	धांय 10/04/2002	भ्राम 30/12/2007	भद्रि 30/08/2014	उल्क 10/04/2022
धांय 30/10/1997	भ्राम 30/10/2002	भद्रि 30/10/2008	उल्क 31/10/2015	सिद्ध 31/10/2023

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
31/10/2023		30/10/2024		30/10/2026		30/10/2029		30/10/2033	
30/10/2024		30/10/2026		30/10/2029		30/10/2033		30/10/2038	
मंग	10/11/2023	पिंग	09/12/2024	धांय	30/01/2027	भ्राम	10/04/2030	भद्रि	11/07/2034
पिंग	30/11/2023	धांय	08/02/2025	भ्राम	31/05/2027	भद्रि	30/10/2030	उल्क	11/05/2035
धांय	30/12/2023	भ्राम	30/04/2025	भद्रि	31/10/2027	उल्क	01/07/2031	सिद्ध	30/04/2036
भ्राम	09/02/2024	भद्रि	10/08/2025	उल्क	30/04/2028	सिद्ध	10/04/2032	संक	10/06/2037
भद्रि	31/03/2024	उल्क	10/12/2025	सिद्ध	29/11/2028	संक	01/03/2033	मंग	31/07/2037
उल्क	31/05/2024	सिद्ध	01/05/2026	संक	31/07/2029	मंग	10/04/2033	पिंग	09/11/2037
सिद्ध	10/08/2024	संक	10/10/2026	मंग	30/08/2029	पिंग	30/06/2033	धांय	10/04/2038
संक	30/10/2024	मंग	30/10/2026	पिंग	30/10/2029	धांय	30/10/2033	भ्राम	30/10/2038

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
30/10/2038		30/10/2044		31/10/2051		31/10/2059		30/10/2060	
30/10/2044		31/10/2051		31/10/2059		30/10/2060		30/10/2062	
उल्क	31/10/2039	सिद्ध	11/03/2046	संक	10/08/2053	मंग	10/11/2059	पिंग	09/12/2060
सिद्ध	30/12/2040	संक	30/09/2047	मंग	30/10/2053	पिंग	30/11/2059	धांय	08/02/2061
संक	01/05/2042	मंग	10/12/2047	पिंग	10/04/2054	धांय	30/12/2059	भ्राम	30/04/2061
मंग	01/07/2042	पिंग	30/04/2048	धांय	10/12/2054	भ्राम	09/02/2060	भद्रि	10/08/2061
पिंग	30/10/2042	धांय	29/11/2048	भ्राम	31/10/2055	भद्रि	31/03/2060	उल्क	10/12/2061
धांय	01/05/2043	भ्राम	09/09/2049	भद्रि	09/12/2056	उल्क	31/05/2060	सिद्ध	01/05/2062
भ्राम	30/12/2043	भद्रि	30/08/2050	उल्क	10/04/2058	सिद्ध	10/08/2060	संक	10/10/2062
भद्रि	30/10/2044	उल्क	31/10/2051	सिद्ध	31/10/2059	संक	30/10/2060	मंग	30/10/2062

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
30/10/2062		30/10/2065		30/10/2069		30/10/2074		30/10/2080	
30/10/2065		30/10/2069		30/10/2074		30/10/2080		19/10/2087	
धांय	30/01/2063	भ्राम	10/04/2066	भद्रि	11/07/2070	उल्क	31/10/2075	सिद्ध	11/03/2082
भ्राम	31/05/2063	भद्रि	30/10/2066	उल्क	11/05/2071	सिद्ध	30/12/2076	संक	30/09/2083
भद्रि	31/10/2063	उल्क	01/07/2067	सिद्ध	30/04/2072	संक	01/05/2078	मंग	10/12/2083
उल्क	30/04/2064	सिद्ध	10/04/2068	संक	10/06/2073	मंग	01/07/2078	पिंग	30/04/2084
सिद्ध	29/11/2064	संक	01/03/2069	मंग	31/07/2073	पिंग	30/10/2078	धांय	29/11/2084
संक	31/07/2065	मंग	10/04/2069	पिंग	09/11/2073	धांय	01/05/2079	भ्राम	09/09/2085
मंग	30/08/2065	पिंग	30/06/2069	धांय	10/04/2074	भ्राम	30/12/2079	भद्रि	30/08/2086
पिंग	30/10/2065	धांय	30/10/2069	भ्राम	30/10/2074	भद्रि	30/10/2080	उल्क	19/10/2087

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय		धांय - भ्राम	
10/12/2025		01/05/2026		10/10/2026		30/10/2026		30/01/2027	
01/05/2026		10/10/2026		30/10/2026		30/01/2027		31/05/2027	
सिद्ध	06/01/2026	संक	06/06/2026	मंग	11/10/2026	धांय	07/11/2026	भ्राम	12/02/2027
संक	07/02/2026	मंग	10/06/2026	पिंग	12/10/2026	भ्राम	17/11/2026	भद्रि	01/03/2027
मंग	11/02/2026	पिंग	19/06/2026	धांय	13/10/2026	भद्रि	30/11/2026	उल्क	21/03/2027
पिंग	19/02/2026	धांय	03/07/2026	भ्राम	16/10/2026	उल्क	15/12/2026	सिद्ध	14/04/2027
धांय	02/03/2026	भ्राम	21/07/2026	भद्रि	18/10/2026	सिद्ध	02/01/2027	संक	11/05/2027
भ्राम	18/03/2026	भद्रि	12/08/2026	उल्क	22/10/2026	संक	22/01/2027	मंग	14/05/2027
भद्रि	07/04/2026	उल्क	08/09/2026	सिद्ध	26/10/2026	मंग	25/01/2027	पिंग	21/05/2027
उल्क	01/05/2026	सिद्ध	10/10/2026	संक	30/10/2026	पिंग	30/01/2027	धांय	31/05/2027

धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक		धांय - मंग	
31/05/2027		31/10/2027		30/04/2028		29/11/2028		31/07/2029	
31/10/2027		30/04/2028		29/11/2028		31/07/2029		30/08/2029	
भद्रि	21/06/2027	उल्क	30/11/2027	सिद्ध	11/06/2028	संक	22/01/2029	मंग	01/08/2029
उल्क	17/07/2027	सिद्ध	04/01/2028	संक	28/07/2028	मंग	29/01/2029	पिंग	02/08/2029
सिद्ध	15/08/2027	संक	14/02/2028	मंग	03/08/2028	पिंग	12/02/2029	धांय	05/08/2029
संक	18/09/2027	मंग	19/02/2028	पिंग	15/08/2028	धांय	04/03/2029	भ्राम	08/08/2029
मंग	22/09/2027	पिंग	29/02/2028	धांय	01/09/2028	भ्राम	31/03/2029	भद्रि	12/08/2029
पिंग	01/10/2027	धांय	16/03/2028	भ्राम	25/09/2028	भद्रि	04/05/2029	उल्क	17/08/2029
धांय	14/10/2027	भ्राम	05/04/2028	भद्रि	25/10/2028	उल्क	13/06/2029	सिद्ध	23/08/2029
भ्राम	31/10/2027	भद्रि	30/04/2028	उल्क	29/11/2028	सिद्ध	31/07/2029	संक	30/08/2029

धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क		भ्राम - सिद्ध	
30/08/2029		30/10/2029		10/04/2030		30/10/2030		01/07/2031	
30/10/2029		10/04/2030		30/10/2030		01/07/2031		10/04/2032	
पिंग	03/09/2029	भ्राम	17/11/2029	भद्रि	09/05/2030	उल्क	10/12/2030	सिद्ध	25/08/2031
धांय	08/09/2029	भद्रि	10/12/2029	उल्क	11/06/2030	सिद्ध	26/01/2031	संक	27/10/2031
भ्राम	14/09/2029	उल्क	06/01/2030	सिद्ध	21/07/2030	संक	21/03/2031	मंग	04/11/2031
भद्रि	23/09/2029	सिद्ध	06/02/2030	संक	04/09/2030	मंग	28/03/2031	पिंग	20/11/2031
उल्क	03/10/2029	संक	14/03/2030	मंग	10/09/2030	पिंग	11/04/2031	धांय	14/12/2031
सिद्ध	15/10/2029	मंग	19/03/2030	पिंग	21/09/2030	धांय	01/05/2031	भ्राम	14/01/2032
संक	28/10/2029	पिंग	28/03/2030	धांय	08/10/2030	भ्राम	28/05/2031	भद्रि	23/02/2032
मंग	30/10/2029	धांय	10/04/2030	भ्राम	30/10/2030	भद्रि	01/07/2031	उल्क	10/04/2032

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भ्राम - संक		भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय		भद्रि - भद्रि	
10/04/2032		01/03/2033		10/04/2033		30/06/2033		30/10/2033	
01/03/2033		10/04/2033		30/06/2033		30/10/2033		11/07/2034	
संक	21/06/2032	मंग	02/03/2033	पिंग	15/04/2033	धांय	10/07/2033	भद्रि	04/12/2033
मंग	30/06/2032	पिंग	04/03/2033	धांय	21/04/2033	भ्राम	24/07/2033	उल्क	16/01/2034
पिंग	18/07/2032	धांय	07/03/2033	भ्राम	30/04/2033	भद्रि	10/08/2033	सिद्ध	06/03/2034
धांय	14/08/2032	भ्राम	12/03/2033	भद्रि	12/05/2033	उल्क	30/08/2033	संक	01/05/2034
भ्राम	19/09/2032	भद्रि	17/03/2033	उल्क	25/05/2033	सिद्ध	23/09/2033	मंग	08/05/2034
भद्रि	03/11/2032	उल्क	24/03/2033	सिद्ध	10/06/2033	संक	20/10/2033	पिंग	22/05/2034
उल्क	27/12/2032	सिद्ध	01/04/2033	संक	28/06/2033	मंग	23/10/2033	धांय	13/06/2034
सिद्ध	01/03/2033	संक	10/04/2033	मंग	30/06/2033	पिंग	30/10/2033	भ्राम	11/07/2034

भद्रि - उल्क		भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग		भद्रि - पिंग	
11/07/2034		11/05/2035		30/04/2036		10/06/2037		31/07/2037	
11/05/2035		30/04/2036		10/06/2037		31/07/2037		09/11/2037	
उल्क	30/08/2034	सिद्ध	19/07/2035	संक	29/07/2036	मंग	11/06/2037	पिंग	05/08/2037
सिद्ध	29/10/2034	संक	06/10/2035	मंग	10/08/2036	पिंग	14/06/2037	धांय	14/08/2037
संक	04/01/2035	मंग	16/10/2035	पिंग	01/09/2036	धांय	18/06/2037	भ्राम	25/08/2037
मंग	13/01/2035	पिंग	05/11/2035	धांय	05/10/2036	भ्राम	24/06/2037	भद्रि	08/09/2037
पिंग	30/01/2035	धांय	04/12/2035	भ्राम	19/11/2036	भद्रि	01/07/2037	उल्क	25/09/2037
धांय	24/02/2035	भ्राम	13/01/2036	भद्रि	14/01/2037	उल्क	10/07/2037	सिद्ध	15/10/2037
भ्राम	30/03/2035	भद्रि	02/03/2036	उल्क	23/03/2037	सिद्ध	19/07/2037	संक	06/11/2037
भद्रि	11/05/2035	उल्क	30/04/2036	सिद्ध	10/06/2037	संक	31/07/2037	मंग	09/11/2037

भद्रि - धांय		भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक	
09/11/2037		10/04/2038		30/10/2038		31/10/2039		30/12/2040	
10/04/2038		30/10/2038		31/10/2039		30/12/2040		01/05/2042	
धांय	22/11/2037	भ्राम	03/05/2038	उल्क	30/12/2038	सिद्ध	21/01/2040	संक	17/04/2041
भ्राम	09/12/2037	भद्रि	31/05/2038	सिद्ध	11/03/2039	संक	25/04/2040	मंग	30/04/2041
भद्रि	30/12/2037	उल्क	04/07/2038	संक	31/05/2039	मंग	07/05/2040	पिंग	27/05/2041
उल्क	24/01/2038	सिद्ध	12/08/2038	मंग	10/06/2039	पिंग	31/05/2040	धांय	07/07/2041
सिद्ध	23/02/2038	संक	26/09/2038	पिंग	01/07/2039	धांय	05/07/2040	भ्राम	30/08/2041
संक	29/03/2038	मंग	02/10/2038	धांय	31/07/2039	भ्राम	21/08/2040	भद्रि	06/11/2041
मंग	02/04/2038	पिंग	13/10/2038	भ्राम	10/09/2039	भद्रि	20/10/2040	उल्क	26/01/2042
पिंग	10/04/2038	धांय	30/10/2038	भद्रि	31/10/2039	उल्क	30/12/2040	सिद्ध	01/05/2042

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मेष 1 वर्ष 9 मास 26 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : उ०फाल्गुनी - 4 अपसव्य
देह : वृश्चिक जीव : मीन

मेष 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष	
19/10/1979		15/08/1981		15/08/1991		15/08/1998		15/08/2014	
15/08/1981		15/08/1991		15/08/1998		15/08/2014		15/08/2023	
	00/00/0000	धनु	15/08/1982	वृश्चि	10/02/1992	तुला	07/03/2001	कन्या	07/06/2015
	00/00/0000	वृश्चि	28/04/1983	तुला	25/03/1993	कन्या	15/08/2002	सिंह	18/11/2015
	00/00/0000	तुला	02/12/1984	कन्या	10/11/1993	सिंह	03/06/2003	कर्क	09/10/2017
	00/00/0000	कन्या	27/10/1985	सिंह	18/03/1994	कर्क	13/10/2006	मिथु	31/07/2018
	00/00/0000	सिंह	28/04/1986	कर्क	06/09/1995	मिथु	21/03/2008	वृष	08/01/2020
	19/10/1979	कर्क	03/06/1988	मिथु	23/04/1996	वृष	13/10/2010	मेष	26/08/2020
कर्क	15/11/1979	मिथु	27/04/1989	वृष	06/06/1997	मेष	26/11/2011	धनु	20/07/2021
मिथु	02/07/1980	वृष	03/12/1990	मेष	02/12/1997	धनु	02/07/2013	वृश्चि	07/03/2022
वृष	15/08/1981	मेष	15/08/1991	धनु	15/08/1998	वृश्चि	15/08/2014	तुला	15/08/2023

सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष	
15/08/2023		15/08/2028		15/08/2049		15/08/2058		15/08/2074	
15/08/2028		15/08/2049		15/08/2058		15/08/2074		00/00/0000	
सिंह	15/11/2023	कर्क	11/01/2033	मिथु	07/06/2050	वृष	07/03/2061	मेष	10/02/2075
कर्क	02/12/2024	मिथु	03/12/2034	वृष	15/11/2051	मेष	20/04/2062	धनु	24/10/2075
मिथु	16/05/2025	वृष	13/04/2038	मेष	02/07/2052	धनु	26/11/2063	वृश्चि	20/04/2076
वृष	04/03/2026	मेष	02/10/2039	धनु	26/05/2053	वृश्चि	08/01/2065	तुला	03/06/2077
मेष	10/07/2026	धनु	07/11/2041	वृश्चि	12/01/2054	तुला	01/08/2067	कन्या	19/01/2078
धनु	08/01/2027	वृश्चि	28/04/2043	तुला	22/06/2055	कन्या	08/01/2069	सिंह	27/05/2078
वृश्चि	16/05/2027	तुला	06/09/2046	कन्या	12/04/2056	सिंह	27/10/2069	कर्क	19/10/2079
तुला	03/03/2028	कन्या	27/07/2048	सिंह	24/09/2056	कर्क	07/03/2073		00/00/0000
कन्या	15/08/2028	सिंह	15/08/2049	कर्क	15/08/2058	मिथु	15/08/2074		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - वृष		सिंह - मेष		सिंह - धनु		सिंह - वृश्चि		सिंह - तुला	
16/05/2025		04/03/2026		10/07/2026		08/01/2027		16/05/2027	
04/03/2026		10/07/2026		08/01/2027		16/05/2027		03/03/2028	
वृष	01/07/2025	मेष	13/03/2026	धनु	28/07/2026	वृश्चि	17/01/2027	तुला	02/07/2027
मेष	22/07/2025	धनु	25/03/2026	वृश्चि	10/08/2026	तुला	07/02/2027	कन्या	28/07/2027
धनु	20/08/2025	वृश्चि	03/04/2026	तुला	08/09/2026	कन्या	18/02/2027	सिंह	12/08/2027
वृश्चि	09/09/2025	तुला	24/04/2026	कन्या	24/09/2026	सिंह	24/02/2027	कर्क	12/10/2027
तुला	26/10/2025	कन्या	05/05/2026	सिंह	03/10/2026	कर्क	23/03/2027	मिथु	07/11/2027
कन्या	21/11/2025	सिंह	12/05/2026	कर्क	11/11/2026	मिथु	04/04/2027	वृष	24/12/2027
सिंह	06/12/2025	कर्क	08/06/2026	मिथु	27/11/2026	वृष	24/04/2027	मेष	14/01/2028
कर्क	05/02/2026	मिथु	19/06/2026	वृष	26/12/2026	मेष	03/05/2027	धनु	12/02/2028
मिथु	04/03/2026	वृष	10/07/2026	मेष	08/01/2027	धनु	16/05/2027	वृश्चि	03/03/2028

सिंह - कन्या		कर्क - कर्क		कर्क - मिथु		कर्क - वृष		कर्क - मेष	
03/03/2028		15/08/2028		11/01/2033		03/12/2034		13/04/2038	
15/08/2028		11/01/2033		03/12/2034		13/04/2038		02/10/2039	
कन्या	18/03/2028	कर्क	19/07/2029	मिथु	14/03/2033	वृष	17/06/2035	मेष	20/05/2038
सिंह	26/03/2028	मिथु	11/12/2029	वृष	03/07/2033	मेष	11/09/2035	धनु	13/07/2038
कर्क	30/04/2028	वृष	26/08/2030	मेष	20/08/2033	धनु	12/01/2036	वृश्चि	20/08/2038
मिथु	15/05/2028	मेष	16/12/2030	धनु	28/10/2033	वृश्चि	07/04/2036	तुला	14/11/2038
वृष	10/06/2028	धनु	26/05/2031	वृश्चि	16/12/2033	तुला	20/10/2036	कन्या	01/01/2039
मेष	21/06/2028	वृश्चि	16/09/2031	तुला	05/04/2034	कन्या	07/02/2037	सिंह	28/01/2039
धनु	08/07/2028	तुला	31/05/2032	कन्या	06/06/2034	सिंह	10/04/2037	कर्क	21/05/2039
वृश्चि	19/07/2028	कन्या	23/10/2032	सिंह	11/07/2034	कर्क	23/12/2037	मिथु	08/07/2039
तुला	15/08/2028	सिंह	11/01/2033	कर्क	03/12/2034	मिथु	13/04/2038	वृष	02/10/2039

कर्क - धनु		कर्क - वृश्चि		कर्क - तुला		कर्क - कन्या		कर्क - सिंह	
02/10/2039		07/11/2041		28/04/2043		06/09/2046		27/07/2048	
07/11/2041		28/04/2043		06/09/2046		27/07/2048		15/08/2049	
धनु	18/12/2039	वृश्चि	14/12/2041	तुला	10/11/2043	कन्या	07/11/2046	सिंह	15/08/2048
वृश्चि	09/02/2040	तुला	10/03/2042	कन्या	29/02/2044	सिंह	12/12/2046	कर्क	04/11/2048
तुला	11/06/2040	कन्या	28/04/2042	सिंह	30/04/2044	कर्क	06/05/2047	मिथु	09/12/2048
कन्या	19/08/2040	सिंह	25/05/2042	कर्क	13/01/2045	मिथु	07/07/2047	वृष	08/02/2049
सिंह	26/09/2040	कर्क	14/09/2042	मिथु	03/05/2045	वृष	25/10/2047	मेष	07/03/2049
कर्क	06/03/2041	मिथु	02/11/2042	वृष	15/11/2045	मेष	13/12/2047	धनु	14/04/2049
मिथु	14/05/2041	वृष	26/01/2043	मेष	09/02/2046	धनु	20/02/2048	वृश्चि	11/05/2049
वृष	14/09/2041	मेष	05/03/2043	धनु	12/06/2046	वृश्चि	08/04/2048	तुला	11/07/2049
मेष	07/11/2041	धनु	28/04/2043	वृश्चि	06/09/2046	तुला	27/07/2048	कन्या	15/08/2049

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - मिथु		मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - धनु		मिथु - वृश्चि	
15/08/2049		07/06/2050		15/11/2051		02/07/2052		26/05/2053	
07/06/2050		15/11/2051		02/07/2052		26/05/2053		12/01/2054	
मिथु	10/09/2049	वृष	30/08/2050	मेष	01/12/2051	धनु	04/08/2052	वृश्चि	12/06/2053
वृष	28/10/2049	मेष	06/10/2050	धनु	24/12/2051	वृश्चि	27/08/2052	तुला	18/07/2053
मेष	18/11/2049	धनु	27/11/2050	वृश्चि	09/01/2052	तुला	18/10/2052	कन्या	08/08/2053
धनु	17/12/2049	वृश्चि	03/01/2051	तुला	15/02/2052	कन्या	17/11/2052	सिंह	20/08/2053
वृश्चि	07/01/2050	तुला	28/03/2051	कन्या	06/03/2052	सिंह	03/12/2052	कर्क	07/10/2053
तुला	23/02/2050	कन्या	15/05/2051	सिंह	18/03/2052	कर्क	10/02/2053	मिथु	28/10/2053
कन्या	22/03/2050	सिंह	10/06/2051	कर्क	05/05/2052	मिथु	12/03/2053	वृष	03/12/2053
सिंह	06/04/2050	कर्क	28/09/2051	मिथु	26/05/2052	वृष	03/05/2053	मेष	20/12/2053
कर्क	07/06/2050	मिथु	15/11/2051	वृष	02/07/2052	मेष	26/05/2053	धनु	12/01/2054

मिथु - तुला		मिथु - कन्या		मिथु - सिंह		मिथु - कर्क		वृष - वृष	
12/01/2054		22/06/2055		12/04/2056		24/09/2056		15/08/2058	
22/06/2055		12/04/2056		24/09/2056		15/08/2058		07/03/2061	
तुला	06/04/2054	कन्या	18/07/2055	सिंह	21/04/2056	कर्क	16/02/2057	वृष	12/01/2059
कन्या	23/05/2054	सिंह	02/08/2055	कर्क	25/05/2056	मिथु	19/04/2057	मेष	18/03/2059
सिंह	18/06/2054	कर्क	03/10/2055	मिथु	09/06/2056	वृष	07/08/2057	धनु	20/06/2059
कर्क	07/10/2054	मिथु	30/10/2055	वृष	05/07/2056	मेष	25/09/2057	वृश्चि	24/08/2059
मिथु	23/11/2054	वृष	16/12/2055	मेष	17/07/2056	धनु	03/12/2057	तुला	21/01/2060
वृष	15/02/2055	मेष	06/01/2056	धनु	02/08/2056	वृश्चि	20/01/2058	कन्या	14/04/2060
मेष	24/03/2055	धनु	04/02/2056	वृश्चि	14/08/2056	तुला	10/05/2058	सिंह	31/05/2060
धनु	16/05/2055	वृश्चि	25/02/2056	तुला	09/09/2056	कन्या	12/07/2058	कर्क	13/12/2060
वृश्चि	22/06/2055	तुला	12/04/2056	कन्या	24/09/2056	सिंह	15/08/2058	मिथु	07/03/2061

वृष - मेष		वृष - धनु		वृष - वृश्चि		वृष - तुला		वृष - कन्या	
07/03/2061		20/04/2062		26/11/2063		08/01/2065		01/08/2067	
20/04/2062		26/11/2063		08/01/2065		01/08/2067		08/01/2069	
मेष	05/04/2061	धनु	18/06/2062	वृश्चि	24/12/2063	तुला	06/06/2065	कन्या	17/09/2067
धनु	16/05/2061	वृश्चि	29/07/2062	तुला	28/02/2064	कन्या	29/08/2065	सिंह	13/10/2067
वृश्चि	13/06/2061	तुला	30/10/2062	कन्या	05/04/2064	सिंह	15/10/2065	कर्क	01/02/2068
तुला	18/08/2061	कन्या	22/12/2062	सिंह	25/04/2064	कर्क	30/04/2066	मिथु	19/03/2068
कन्या	24/09/2061	सिंह	20/01/2063	कर्क	20/07/2064	मिथु	23/07/2066	वृष	11/06/2068
सिंह	14/10/2061	कर्क	23/05/2063	मिथु	26/08/2064	वृष	19/12/2066	मेष	18/07/2068
कर्क	08/01/2062	मिथु	14/07/2063	वृष	30/10/2064	मेष	23/02/2067	धनु	09/09/2068
मिथु	14/02/2062	वृष	16/10/2063	मेष	28/11/2064	धनु	27/05/2067	वृश्चि	16/10/2068
वृष	20/04/2062	मेष	26/11/2063	धनु	08/01/2065	वृश्चि	01/08/2067	तुला	08/01/2069

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृश्चिक 8 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृश्चिक 8 वर्ष	
19/10/1979	
19/10/1987	
तुला	18/06/1980
कन्या	17/02/1981
सिंह	18/10/1981
कर्क	19/06/1982
मिथु	17/02/1983
वृष	19/10/1983
मेष	18/06/1984
मीन	17/02/1985
कुंभ	18/10/1985
मक	19/06/1986
धनु	17/02/1987
वृश्चि	19/10/1987

तुला 12 वर्ष	
19/10/1987	
19/10/1999	
वृश्चि	18/10/1988
धनु	18/10/1989
मक	19/10/1990
कुंभ	19/10/1991
मीन	18/10/1992
मेष	18/10/1993
वृष	19/10/1994
मिथु	19/10/1995
कर्क	18/10/1996
सिंह	18/10/1997
कन्या	19/10/1998
तुला	19/10/1999

कन्या 11 वर्ष	
19/10/1999	
19/10/2010	
तुला	18/09/2000
वृश्चि	19/08/2001
धनु	19/07/2002
मक	19/06/2003
कुंभ	19/05/2004
मीन	19/04/2005
मेष	20/03/2006
वृष	17/02/2007
मिथु	18/01/2008
कर्क	18/12/2008
सिंह	18/11/2009
कन्या	19/10/2010

सिंह 10 वर्ष	
19/10/2010	
18/10/2020	
कन्या	19/08/2011
तुला	18/06/2012
वृश्चि	19/04/2013
धनु	17/02/2014
मक	19/12/2014
कुंभ	19/10/2015
मीन	18/08/2016
मेष	19/06/2017
वृष	19/04/2018
मिथु	17/02/2019
कर्क	19/12/2019
सिंह	18/10/2020

कर्क 10 वर्ष	
18/10/2020	
19/10/2030	
मिथु	19/08/2021
वृष	19/06/2022
मेष	19/04/2023
मीन	18/02/2024
कुंभ	18/12/2024
मक	18/10/2025
धनु	19/08/2026
वृश्चि	19/06/2027
तुला	19/04/2028
कन्या	17/02/2029
सिंह	18/12/2029
कर्क	19/10/2030

मिथुन 4 वर्ष	
19/10/2030	
19/10/2034	
वृष	17/02/2031
मेष	19/06/2031
मीन	19/10/2031
कुंभ	18/02/2032
मक	18/06/2032
धनु	18/10/2032
वृश्चि	17/02/2033
तुला	19/06/2033
कन्या	18/10/2033
सिंह	17/02/2034
कर्क	19/06/2034
मिथु	19/10/2034

वृष 5 वर्ष	
19/10/2034	
19/10/2039	
मेष	20/03/2035
मीन	19/08/2035
कुंभ	18/01/2036
मक	18/06/2036
धनु	18/11/2036
वृश्चि	19/04/2037
तुला	18/09/2037
कन्या	17/02/2038
सिंह	19/07/2038
कर्क	19/12/2038
मिथु	20/05/2039
वृष	19/10/2039

मेष 3 वर्ष	
19/10/2039	
19/10/2042	
वृष	18/01/2040
मिथु	19/04/2040
कर्क	19/07/2040
सिंह	18/10/2040
कन्या	17/01/2041
तुला	19/04/2041
वृश्चि	19/07/2041
धनु	18/10/2041
मक	18/01/2042
कुंभ	19/04/2042
मीन	19/07/2042
मेष	19/10/2042

मीन 7 वर्ष	
19/10/2042	
18/10/2049	
मेष	20/05/2043
वृष	19/12/2043
मिथु	19/07/2044
कर्क	17/02/2045
सिंह	18/09/2045
कन्या	19/04/2046
तुला	18/11/2046
वृश्चि	19/06/2047
धनु	18/01/2048
मक	18/08/2048
कुंभ	19/03/2049
मीन	18/10/2049

कुम्भ 6 वर्ष	
18/10/2049	
19/10/2055	
मीन	19/04/2050
मेष	19/10/2050
वृष	19/04/2051
मिथु	19/10/2051
कर्क	19/04/2052
सिंह	18/10/2052
कन्या	19/04/2053
तुला	18/10/2053
वृश्चि	19/04/2054
धनु	19/10/2054
मक	19/04/2055
कुंभ	19/10/2055

मकर 5 वर्ष	
19/10/2055	
18/10/2060	
धनु	19/03/2056
वृश्चि	18/08/2056
तुला	17/01/2057
कन्या	19/06/2057
सिंह	18/11/2057
कर्क	19/04/2058
मिथु	18/09/2058
वृष	17/02/2059
मेष	20/07/2059
मीन	19/12/2059
कुंभ	19/05/2060
मक	18/10/2060

धनु 8 वर्ष	
18/10/2060	
18/10/2068	
वृश्चि	19/06/2061
तुला	17/02/2062
कन्या	19/10/2062
सिंह	19/06/2063
कर्क	18/02/2064
मिथु	18/10/2064
वृष	19/06/2065
मेष	17/02/2066
मीन	19/10/2066
कुंभ	19/06/2067
मक	18/02/2068
धनु	18/10/2068

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - धनु		कर्क - वृश्चि		कर्क - तुला		कर्क - कन्या		कर्क - सिंह	
18/10/2025		19/08/2026		19/06/2027		19/04/2028		17/02/2029	
19/08/2026		19/06/2027		19/04/2028		17/02/2029		18/12/2029	
वृश्चि	13/11/2025	तुला	13/09/2026	वृश्चि	15/07/2027	तुला	14/05/2028	कन्या	14/03/2029
तुला	08/12/2025	कन्या	08/10/2026	धनु	09/08/2027	वृश्चि	08/06/2028	तुला	09/04/2029
कन्या	02/01/2026	सिंह	03/11/2026	मक	03/09/2027	धनु	04/07/2028	वृश्चि	04/05/2029
सिंह	28/01/2026	कर्क	28/11/2026	कुंभ	29/09/2027	मक	29/07/2028	धनु	29/05/2029
कर्क	22/02/2026	मिथु	24/12/2026	मीन	24/10/2027	कुंभ	23/08/2028	मक	24/06/2029
मिथु	20/03/2026	वृष	18/01/2027	मेष	18/11/2027	मीन	18/09/2028	कुंभ	19/07/2029
वृष	14/04/2026	मेष	12/02/2027	वृष	14/12/2027	मेष	13/10/2028	मीन	13/08/2029
मेष	09/05/2026	मीन	10/03/2027	मिथु	08/01/2028	वृष	07/11/2028	मेष	08/09/2029
मीन	04/06/2026	कुंभ	04/04/2027	कर्क	02/02/2028	मिथु	03/12/2028	वृष	03/10/2029
कुंभ	29/06/2026	मक	29/04/2027	सिंह	28/02/2028	कर्क	28/12/2028	मिथु	29/10/2029
मक	24/07/2026	धनु	25/05/2027	कन्या	24/03/2028	सिंह	23/01/2029	कर्क	23/11/2029
धनु	19/08/2026	वृश्चि	19/06/2027	तुला	19/04/2028	कन्या	17/02/2029	सिंह	18/12/2029

कर्क - कर्क		मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - मीन		मिथु - कुंभ	
18/12/2029		19/10/2030		17/02/2031		19/06/2031		19/10/2031	
19/10/2030		17/02/2031		19/06/2031		19/10/2031		18/02/2032	
मिथु	13/01/2030	मेष	29/10/2030	वृष	28/02/2031	मेष	29/06/2031	मीन	29/10/2031
वृष	07/02/2030	मीन	08/11/2030	मिथु	10/03/2031	वृष	09/07/2031	मेष	08/11/2031
मेष	04/03/2030	कुंभ	18/11/2030	कर्क	20/03/2031	मिथु	20/07/2031	वृष	18/11/2031
मीन	30/03/2030	मक	28/11/2030	सिंह	30/03/2031	कर्क	30/07/2031	मिथु	28/11/2031
कुंभ	24/04/2030	धनु	08/12/2030	कन्या	09/04/2031	सिंह	09/08/2031	कर्क	09/12/2031
मक	19/05/2030	वृश्चि	19/12/2030	तुला	19/04/2031	कन्या	19/08/2031	सिंह	19/12/2031
धनु	14/06/2030	तुला	29/12/2030	वृश्चि	29/04/2031	तुला	29/08/2031	कन्या	29/12/2031
वृश्चि	09/07/2030	कन्या	08/01/2031	धनु	10/05/2031	वृश्चि	08/09/2031	तुला	08/01/2032
तुला	04/08/2030	सिंह	18/01/2031	मक	20/05/2031	धनु	18/09/2031	वृश्चि	18/01/2032
कन्या	29/08/2030	कर्क	28/01/2031	कुंभ	30/05/2031	मक	29/09/2031	धनु	28/01/2032
सिंह	23/09/2030	मिथु	07/02/2031	मीन	09/06/2031	कुंभ	09/10/2031	मक	07/02/2032
कर्क	19/10/2030	वृष	17/02/2031	मेष	19/06/2031	मीन	19/10/2031	कुंभ	18/02/2032

मिथु - मक		मिथु - धनु		मिथु - वृश्चि		मिथु - तुला		मिथु - कन्या	
18/02/2032		18/06/2032		18/10/2032		17/02/2033		19/06/2033	
18/06/2032		18/10/2032		17/02/2033		19/06/2033		18/10/2033	
धनु	28/02/2032	वृश्चि	29/06/2032	तुला	28/10/2032	वृश्चि	27/02/2033	तुला	29/06/2033
वृश्चि	09/03/2032	तुला	09/07/2032	कन्या	07/11/2032	धनु	09/03/2033	वृश्चि	09/07/2033
तुला	19/03/2032	कन्या	19/07/2032	सिंह	18/11/2032	मक	19/03/2033	धनु	19/07/2033
कन्या	29/03/2032	सिंह	29/07/2032	कर्क	28/11/2032	कुंभ	29/03/2033	मक	29/07/2033
सिंह	08/04/2032	कर्क	08/08/2032	मिथु	08/12/2032	मीन	09/04/2033	कुंभ	08/08/2033
कर्क	19/04/2032	मिथु	18/08/2032	वृष	18/12/2032	मेष	19/04/2033	मीन	19/08/2033
मिथु	29/04/2032	वृष	28/08/2032	मेष	28/12/2032	वृष	29/04/2033	मेष	29/08/2033
वृष	09/05/2032	मेष	08/09/2032	मीन	07/01/2033	मिथु	09/05/2033	वृष	08/09/2033
मेष	19/05/2032	मीन	18/09/2032	कुंभ	17/01/2033	कर्क	19/05/2033	मिथु	18/09/2033
मीन	29/05/2032	कुंभ	28/09/2032	मक	28/01/2033	सिंह	29/05/2033	कर्क	28/09/2033
कुंभ	08/06/2032	मक	08/10/2032	धनु	07/02/2033	कन्या	08/06/2033	सिंह	08/10/2033
मक	18/06/2032	धनु	18/10/2032	वृश्चि	17/02/2033	तुला	19/06/2033	कन्या	18/10/2033

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - सिंह		मिथु - कर्क		मिथु - मिथु		वृष - मेष		वृष - मीन	
18/10/2033		17/02/2034		19/06/2034		19/10/2034		20/03/2035	
17/02/2034		19/06/2034		19/10/2034		20/03/2035		19/08/2035	
कन्या	29/10/2033	मिथु	27/02/2034	वृष	29/06/2034	वृष	31/10/2034	मेष	02/04/2035
तुला	08/11/2033	वृष	09/03/2034	मेष	09/07/2034	मिथु	13/11/2034	वृष	14/04/2035
वृश्चि	18/11/2033	मेष	20/03/2034	मीन	19/07/2034	कर्क	26/11/2034	मिथु	27/04/2035
धनु	28/11/2033	मीन	30/03/2034	कुंभ	29/07/2034	सिंह	08/12/2034	कर्क	10/05/2035
मक	08/12/2033	कुंभ	09/04/2034	मक	09/08/2034	कन्या	21/12/2034	सिंह	22/05/2035
कुंभ	18/12/2033	मक	19/04/2034	धनु	19/08/2034	तुला	03/01/2035	कन्या	04/06/2035
मीन	28/12/2033	धनु	29/04/2034	वृश्चि	29/08/2034	वृश्चि	15/01/2035	तुला	17/06/2035
मेष	08/01/2034	वृश्चि	09/05/2034	तुला	08/09/2034	धनु	28/01/2035	वृश्चि	29/06/2035
वृष	18/01/2034	तुला	19/05/2034	कन्या	18/09/2034	मक	10/02/2035	धनु	12/07/2035
मिथु	28/01/2034	कन्या	30/05/2034	सिंह	28/09/2034	कुंभ	22/02/2035	मक	25/07/2035
कर्क	07/02/2034	सिंह	09/06/2034	कर्क	08/10/2034	मीन	07/03/2035	कुंभ	06/08/2035
सिंह	17/02/2034	कर्क	19/06/2034	मिथु	19/10/2034	मेष	20/03/2035	मीन	19/08/2035

वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु		वृष - वृश्चि		वृष - तुला	
19/08/2035		18/01/2036		18/06/2036		18/11/2036		19/04/2037	
18/01/2036		18/06/2036		18/11/2036		19/04/2037		18/09/2037	
मीन	01/09/2035	धनु	31/01/2036	वृश्चि	01/07/2036	तुला	30/11/2036	वृश्चि	01/05/2037
मेष	13/09/2035	वृश्चि	13/02/2036	तुला	14/07/2036	कन्या	13/12/2036	धनु	14/05/2037
वृष	26/09/2035	तुला	25/02/2036	कन्या	26/07/2036	सिंह	26/12/2036	मक	27/05/2037
मिथु	09/10/2035	कन्या	09/03/2036	सिंह	08/08/2036	कर्क	07/01/2037	कुंभ	08/06/2037
कर्क	21/10/2035	सिंह	22/03/2036	कर्क	21/08/2036	मिथु	20/01/2037	मीन	21/06/2037
सिंह	03/11/2035	कर्क	03/04/2036	मिथु	02/09/2036	वृष	02/02/2037	मेष	04/07/2037
कन्या	16/11/2035	मिथु	16/04/2036	वृष	15/09/2036	मेष	14/02/2037	वृष	17/07/2037
तुला	28/11/2035	वृष	29/04/2036	मेष	28/09/2036	मीन	27/02/2037	मिथु	29/07/2037
वृश्चि	11/12/2035	मेष	11/05/2036	मीन	11/10/2036	कुंभ	12/03/2037	कर्क	11/08/2037
धनु	24/12/2035	मीन	24/05/2036	कुंभ	23/10/2036	मक	24/03/2037	सिंह	24/08/2037
मक	06/01/2036	कुंभ	06/06/2036	मक	05/11/2036	धनु	06/04/2037	कन्या	05/09/2037
कुंभ	18/01/2036	मक	18/06/2036	धनु	18/11/2036	वृश्चि	19/04/2037	तुला	18/09/2037

वृष - कन्या		वृष - सिंह		वृष - कर्क		वृष - मिथु		वृष - वृष	
18/09/2037		17/02/2038		19/07/2038		19/12/2038		20/05/2039	
17/02/2038		19/07/2038		19/12/2038		20/05/2039		19/10/2039	
तुला	01/10/2037	कन्या	02/03/2038	मिथु	01/08/2038	वृष	31/12/2038	मेष	01/06/2039
वृश्चि	13/10/2037	तुला	15/03/2038	वृष	14/08/2038	मेष	13/01/2039	मीन	14/06/2039
धनु	26/10/2037	वृश्चि	27/03/2038	मेष	26/08/2038	मीन	26/01/2039	कुंभ	27/06/2039
मक	08/11/2037	धनु	09/04/2038	मीन	08/09/2038	कुंभ	07/02/2039	मक	09/07/2039
कुंभ	20/11/2037	मक	22/04/2038	कुंभ	21/09/2038	मक	20/02/2039	धनु	22/07/2039
मीन	03/12/2037	कुंभ	04/05/2038	मक	03/10/2038	धनु	05/03/2039	वृश्चि	04/08/2039
मेष	16/12/2037	मीन	17/05/2038	धनु	16/10/2038	वृश्चि	17/03/2039	तुला	16/08/2039
वृष	28/12/2037	मेष	30/05/2038	वृश्चि	29/10/2038	तुला	30/03/2039	कन्या	29/08/2039
मिथु	10/01/2038	वृष	11/06/2038	तुला	10/11/2038	कन्या	12/04/2039	सिंह	11/09/2039
कर्क	23/01/2038	मिथु	24/06/2038	कन्या	23/11/2038	सिंह	24/04/2039	कर्क	24/09/2039
सिंह	04/02/2038	कर्क	07/07/2038	सिंह	06/12/2038	कर्क	07/05/2039	मिथु	06/10/2039
कन्या	17/02/2038	सिंह	19/07/2038	कर्क	19/12/2038	मिथु	20/05/2039	वृष	19/10/2039

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	92%	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	78%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	73%	धनार्जन, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	67%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	64%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम, सुख
गोमेद	राहु	44%	व्यावसायिक हानि, व्यय
माणिक्य	सूर्य	41%	व्यय, व्यावसायिक हानि
पन्ना	बुध	0%	व्यय, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

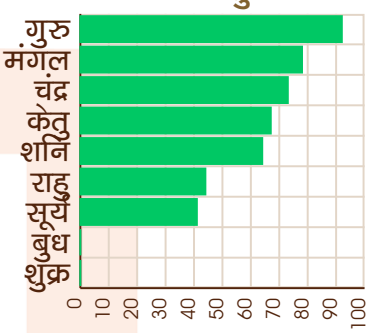

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	29/10/1979	58%	80%	84%	0%	98%	0%	52%	19%	55%
चंद्र	28/10/1989	52%	86%	78%	0%	92%	0%	64%	19%	55%
मंगल	28/10/1996	52%	80%	91%	0%	98%	0%	64%	19%	73%
राहु	29/10/2014	16%	61%	66%	0%	92%	0%	70%	59%	55%
गुरु	29/10/2030	52%	80%	84%	0%	100%	0%	64%	44%	67%
शनि	28/10/2049	16%	61%	66%	0%	92%	0%	77%	53%	55%
बुध	29/10/2066	52%	61%	78%	6%	92%	0%	64%	44%	67%
केतु	28/10/2073	16%	61%	84%	0%	92%	0%	52%	19%	80%
शुक्र	28/10/2093	16%	61%	78%	0%	92%	4%	70%	53%	73%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पुखराज आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मोती, लहसुनिया एवं नीलम रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद व माणिक्य रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पन्ना व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंड़ली में गुरु दशम भाव में स्थित है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करना आपके लिए शुभदायक रहेगा। यह रत्न आपको चरित्रवान और स्वतंत्र विचारक बनाएगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको विवेकी, न्यायी और सत्यवादी भी बनाएगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको शास्त्रों का विधिवत ज्ञान होगा। पुखराज रत्न आपको उत्तम वाहनों का सुख देगा। भूमि सुख और भूमि के माध्यम से खूब लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने माता-पिता का अत्यधिक आदर करने वाले बनेंगे। आप खूब धन कमाकर, ऐश्वर्यवान, सुखी और समृद्ध बनेंगे। आप सुंदर वस्त्र और आभूषणों से युक्त होंगे।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीयेश और पंचमेश है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज शुभ फलदायक रत्न है। पुखराज रत्न धारण से संतान सुख प्राप्त हो सकते है। इसकी शुभता से आप धनी और सम्मानित व्यक्ति बन सकते है। पुखराज रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में संतोषप्रद लाभ दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप भाग्यशाली, धर्मपरायण और प्रसन्न रहने वाले व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते है। पुखराज रत्न आपको महत्वाकांक्षी, उदार, आत्मविश्वासी और व्यावहारिक बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और षष्ठेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आपका रोगों से बचाव हो सकता है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने व्यक्तित्व को बेहतर कर सकते है। यह रत्न आपके क्रोध भाव में कमी कर आपको विनम्र बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। मूंगे रत्न की शुभता से आपकी ऊर्जा शक्ति, जोश, उत्साह, साहस तथा पहल क्षमता का विकास हो सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए षष्ठेश का रत्न भी होने के कारण आपको रोग, ऋण और कोर्ट कचहरी के मामलों में मनोकूल सफलता दे सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में चंद्र नवमेश है। अपने भाग्य को बली करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न धारण करने से आपके रुके हुए कार्य पूर्ण होने लगेंगे। किसी कारणवश आपकी जो योजनाएं रुकी हुई है वो फिर से शुरु हो सकती है। रत्न शुभता से आपका ग्रहस्थ जीवन सुखमय होगा। रत्न प्रभाव से आपको व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप की धार्मिक आस्था प्रबल होगी। जिसके फलस्वरूप आपके पूर्वजन्मों के दोषों का निराकरण हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः

का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया या इसके उपरत्न धारण करने चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको धन-धान्य से समृद्ध करेगा। आप अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलता के साथ करेंगे। आपका उत्साह भाव देखते ही बनेगा। माता सुख में कुछ कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप चंचल स्वभाव के हो सकते है। देश विदेश से धनार्जन योगा। पैतृक धन में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। घर भूमि भवन के विषयों से सुख की प्राप्ति होगी। लहसुनिया रत्न धारण से केतु ग्रह की शुभता बढ़ती है और अशुभता कम होती है।

केतु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दशम भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न शुभता से आप सदा प्रसन्न रहने वाले, पुण्यकर्म करने वाले, लोगों के प्रेम-पात्र और माननीय बनेंगे। रत्न शुभता से आप नीतिज्ञ, नम्र स्वभाव वाले और महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं। यह रत्न आपको परिश्रमी और चतुर भी बनाएगा। नीलम रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति को बढ़ाएगा। पराक्रम भाव की वृद्धि करेगा। आपको कार्यक्षेत्र में धीरे-धीरे प्रगति प्राप्त होगी। लडाई-झगडे और युद्ध में विजयी होंगे। नीलम रत्न जीवन में उच्च पद देगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश है। शनि शुभता प्राप्त करने के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है। नीलम रत्न आपको दूरदर्शिता, पुरुषार्थ एवं छोटे भाई बहनों का सुख प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपको मातृ सुख दे सकता है। रत्न शुभता से आप भूमि व संपति से पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपके शत्रुओं को परास्त कर सकता है। पिता से आपके संबंध सुधारने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न आपको यात्राओं के भरपूर अवसर प्रदान कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करने पर आजीविका क्षेत्र में अत्यंत अभिमानी, कुसंगति में रहने वाले, व्यर्थ विवादी एवं धन व्ययी हो सकते है। यह रत्न आपको मन संताप दे सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आप लोक निन्दित, परधन-लोभी, चिन्तातुर तथा क्रूर हो सकते है। आपको अपमान का सामना करना पड़ सकता है। गोमेद रत्न पहनने पर आपके द्वारा अनियमित व्यय हो सकते है। बुद्धि का सहयोग न मिलना, पर्यटनशील, पितृ-सुखहीन एवं अनियमित काम करने वाले व्यक्ति भी यह रत्न आपको बना सकता है। गोमेद रत्न दण्डाधिकारी के द्वारा आपको कष्ट दे सकता है। शत्रुओं के कारण संकटों का सामना आपको करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके संतान सुख में कमी कर सकता है।

राहु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। अतः

गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते है। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते है। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते है। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में सूर्य दशमेश है। कुंडली के अन्य अशुभ योगों के प्रभाव के कारण सूर्य अपने शुभफल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य आपको पिता, पद, प्रतिष्ठा और सामाजिक क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में दिक्कतें दे सकता है। अपने पद प्रतिष्ठा को मजबूत करने पर आपका ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित हो सकता है। रत्न प्रभाव से कार्यक्षेत्र में आपकी प्रवृति कठोर शासक की हो सकती है। यह रत्न आपको अत्यधिक महत्वाकांक्षी बना सकता है। सरकारी पक्ष से सहयोग की कमी का अनुभव समय-समय पर होगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपको अधिकार सत्ता देकर कुछ अंहकारी भी बना सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको जीवन के कुछ सुनहरे अवसरों को खोना पड सकता है। बौद्धिक योग्यता की कमी का अनुभव आपको समय समय पर हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा किए गये नियोजन कार्य असफल हो सकते है। समझ बूझ की कमी भी आपको अवगत हो सकती है। पन्ना रत्न पहनने पर आपको शेयर बाजार से जुड़े क्षेत्रों में हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपके द्वारा संचित धन आपके काम न आकर दूसरों के काम ज्यादा आ सकता है। बुध रत्न पन्ना आपमें व्यवहारिकता की भी कमी कर सकता है। पिता के स्नेह में कमी की स्थितियां भी यह रत्न आपमें बना सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में बुध एकादशेश और अष्टमेश है। आपकी

कुंडली में बुध का अष्टमेश होना शुभफलदायी नहीं है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपकी विचारधारा नकारात्मक हो सकती है। रत्न धारण करने पर आप धन संचय कला में निपुण होने पर भी अपनी आदतों और शौक के कारण आर्थिक कठिनाईयों में पड़ सकते है। यह रत्न आपको आय और लाभ क्षेत्रों में प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है। पन्ना रत्न आपकी बौद्धिक योग्यता में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपकी इच्छापूर्ति में कमी हो सकती है। आपको शुभचिन्तकों का अभाव हो सकता है। यह रत्न आपकी संभावित प्राप्तियों को अवरुद्ध कर सकता है। सभी प्रकार के लाभों की प्राप्तियों में भी यह रत्न विलम्ब कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आपका वैवाहिक जीवन तनाव युक्त हो सकता है। हीरा रत्न आपके व्ययों को सौंदर्य विषयों पर केन्द्रित कर सकता है। इसके साथ ही रत्न प्रभाव से आपके व्यय ग्रहस्थ जीवन के सुख प्राप्ति से संबंधी हो सकते है। विदेश गमन, शयन सुख को भी यह रत्न प्रभावित कर रहा है। हीरा रत्न आपके मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को बाधित कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हो सकता है कि आपका धन-धान्य, आय एवं उन्नति आशातीत न हों। यह भी संभावित है कि आप अपने जीवन साथी का समय पर साथ न दे पाएं। दायित्वों के निर्वाह में आपसे कहीं कुछ त्रुटि हो सकती है। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ कमजोर हो सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शुक्र सप्तमेश और द्वादशेश है। शुक्र ग्रह को शुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए प्रतिकूल फलदायक हो सकता है। यह रत्न आपको मानसिक रूप से परेशान कर सकता है। हीरा रत्न आपको कामी और विलासी बना सकता है। आपके अधिकतर व्यय वैवाहिक जीवन पर मुख्यतः केन्द्रित हो सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपका अपने जीवन साथी से मतभेद हो सकता है। रत्न की अनुकूलता आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में भी कमी कर सकती है। यह रत्न आपको साझेदारी व्यवसायों में हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको शुक्र जनित व्यवसायों में हानि हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु
(29/10/2014 - 29/10/2030)

गुरु की दशा में आपका पुखराज, मूंगा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, नीलम व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(29/10/2030 - 28/10/2049)

शनि की दशा में आपका पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, मोती, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(28/10/2049 - 29/10/2066)

बुध की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, नीलम, मोती व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(29/10/2066 - 28/10/2073)

केतु की दशा में आपका पुखराज, मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, माणिक्य, पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(28/10/2073 - 28/10/2093)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, नीलम, मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त

करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, हीरा व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

सूर्य - 29/10/1979

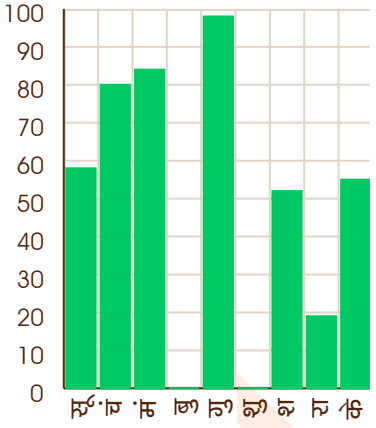

चन्द्र - 28/10/1989

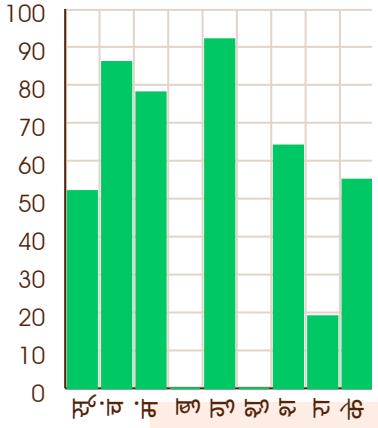

मंगल - 28/10/1996

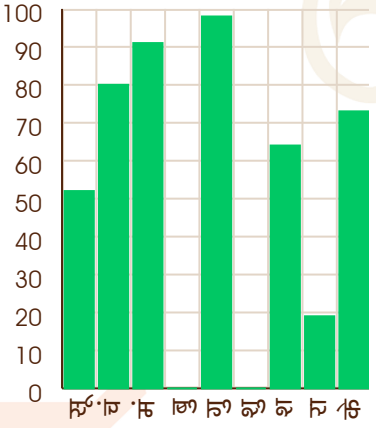

राहु - 29/10/2014

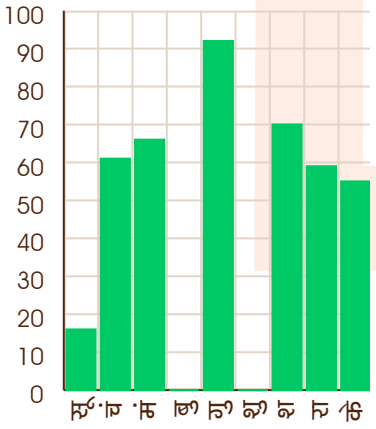

गुरु - 29/10/2030

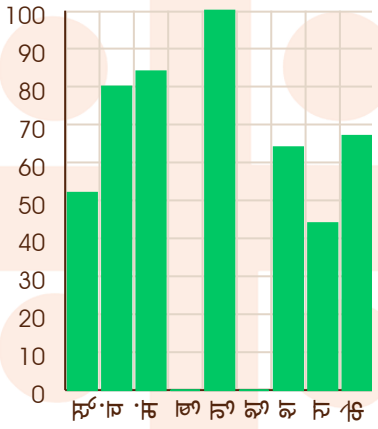

शनि - 28/10/2049

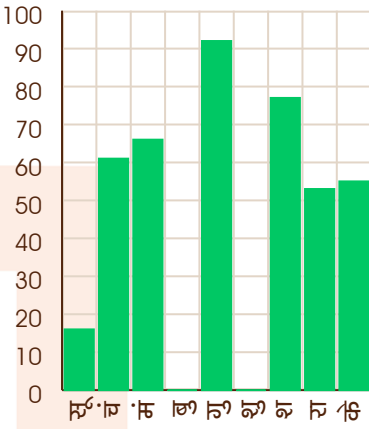

बुध - 29/10/2066

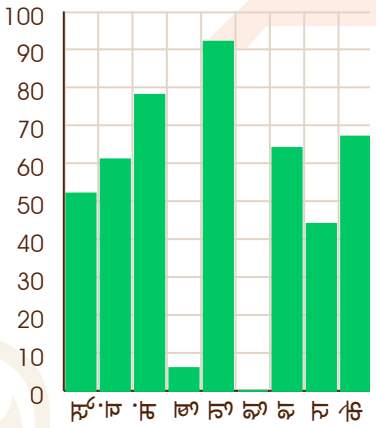

केतु - 28/10/2073

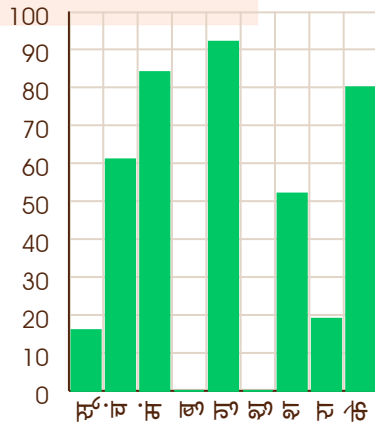

शुक्र - 28/10/2093

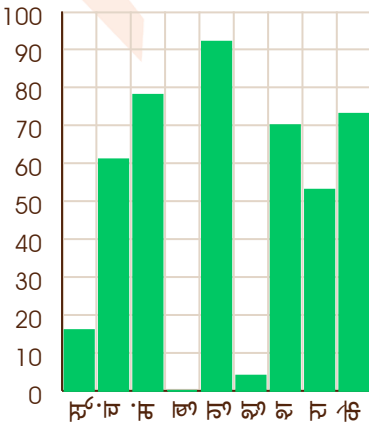

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मून स्टोन

आपका जन्म वृश्चिक राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह मंगल होता है। मून स्टोन रत्न चंद्रमा ग्रह के लिये धारण किया जाता है और चंद्रमा वृश्चिक राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि चंद्रमा की कर्क राशि वृश्चिक लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी जातक द्वारा किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृश्चिक राशि के लग्न वाले जातकों को मून स्टोन रत्न धारण करके चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मून स्टोन रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मून स्टोन को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मून स्टोन चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मून स्टोन को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है। मून स्टोन को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ऊँ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही,

सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मून स्टोन की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मून स्टोन की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृश्चिक लग्न वाले जातक यदि मून स्टोन की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृश्चिक लग्न की हैं। वृश्चिक लग्न के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व पर मंगल का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। स्वभाव में उग्रता होने के कारण आप नेतृत्व शक्ति अच्छी है, परन्तु स्थिर राशि लग्न में होने के कारण आपके जीवन में स्थिरता रहती हैं। आप हर कार्य को टिक कर करते हैं। जल तत्व होने के कारण जिस तरह जल कभी बहुत शान्त और कभी उसमें उग्रता आने पर सब-कुछ तहस-नहस कर देता है वहीं बातें आपमें भी पायी जाती हैं। इसलिए आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखना चाहिए क्योंकि ऐसे में अक्सर आप अपना ही नुकसान कर बैठते हैं।

आप बहुत जल्दी घुल-मिल जाते हैं और सभी के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं।

आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है और कुछ भी भूलते नहीं है। व आपकी सहन शक्ति बहुत है। आपके स्वभाव में क्रोध रहता है परन्तु दिल के नरम हैं। आपको अनुशासनहीनता पसंद नहीं है। उदारता का गुण आपमें है। आप चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुक प्रकृति के हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। तथा कुंडली के विशेष अशुभ भावों की श्रेणी में आते हैं। छठा स्थान दुस्थान है। व उपचय भाव हैं। छठे भाव का स्वामी और छठे भाव में बैठे ग्रह दोनों बुरा फल देते हैं। षष्ठ भाव से शत्रु, रोग, चिंता, ऋण और विमाता का विचार किया जाता हैं। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है।

अष्टम भाव में स्थित होने वाले ग्रहों का अपना और अपने स्वामित्व वाले भावों के बलों का नाश हो जाता हैं। तथा इस भाव का स्वामी अष्टमेश जिस भाव में बैठता हैं। उस भाव के फलों का नाश करता हैं। व जिस भाव का स्वामी अपने स्थान से अष्टम स्थान में स्थित होता हैं। उस भाव के फलों की हानि होती हैं। कुंडली का द्वादश भाव व्यय का पर्याय हैं। यह भाव हानियां, टैक्स, निद्रा, शैया भोग, शत्रु, अवनति, विदेश यात्रा का भाव हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के स्वामी मंगल है। लग्नेश व षष्ठेश मंगल आपके शरीर में शक्ति व आत्मबल की अल्प वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाग्य व कर्म के मार्ग में रुकावटें, प्रतिष्ठा में न्यूनता, व्यय अधिक, विदेश स्थानों से लाभ दे सकता हैं।

बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रह विछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रहविछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट, परेशानियों के साथ लाभ प्राप्ति दे सकता है।

आपके लग्न के लिए शुक्र सप्तमेश व द्वादशेश हैं। द्वादश में शुक्र की राशी तुला होने से आप धार्मिक, धर्म के प्रति निष्ठा, बचपन कष्टमय, स्वजनों तथा मित्रों से लाभ, व्यय अनियंत्रित, शान-शौकत का प्रदर्शन, क्षीण नेत्र ज्योति, नौकरी में अधिक लाभ प्राप्त दे सकता हैं।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग

करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते है, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखे। जीवन साथी की भावनाओँ को आहात करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 4, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	19/10/1979-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	कम खर्च
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति है अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से अलग रहता है। माता-पिता का स्नेह अधिक नहीं मिलता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर नुकसान पहुँचाते रहते हैं। नाना-नानी या दादा-दादी का प्रायः वियोग होता है। इस योग के प्रभाव से सन्तान कभी अस्वस्थ हो जाते हैं और जातक चिन्ता व परेशानी के घेरे में आ जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। नौकरी व्यवसाय में भी कभी कुछ व्यवधान उपस्थित हो जाता है पर कालान्तर में वह स्वतः नष्ट हो जाता है। जातक को भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है और सरकारी अधिकारियों से कभी अनबन भी हो जाती है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी अशान्त या कष्टमय हो जाता है। घर में सुख-शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। सुख-प्राप्ति के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है और मित्र गण समय पर धोखा दे जाते हैं। परिणामस्वरूप जातक को आंशिक रूप में नुकसान उठाना पड़ता है। आय में कमी रहती है। फलस्वरूप आर्थिक संकट समय-समय पर घेर लेता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है जिसमें जातक को विशेष रूप से प्रसिद्धि मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्धानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 19 है। एक एवं नौ के योग से आपका मूलांक 1 होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है। अंक नौ का स्वामी मंगल है। इन दोनों ही ग्रहों का प्रभाव आप पर आयेगा। मूलांक एक के प्रभाववश आप सूर्य के समान समाज में लोकप्रिय होंगे। बहुतों का पालन करेंगे। उच्च महत्वाकांक्षाएं आपके अन्दर अधिक रहेंगी। संघर्ष, साहस एवं धैर्य से आप अपनी इच्छाओं की पूर्ति करेंगे। जीवन में आप कई उच्च सफलताएं प्राप्त करेंगे। एकाध कार्यों में रुकावट भी आयेगी, जिसे आप सूर्य मंगल के प्रभाववश अपनी मेहनत, धैर्य एवं साहस से पार कर लेंगे।

अंक नौ के स्वामी मंगल के प्रभाव से आपमें अदम्य साहस रहेगा तथा आपकी हमेशा शत्रुओं को जीतने की इच्छा बलवती रहेगी। शत्रु के सामने आप हथियार नहीं डालेंगे और येन केन प्रकारेण शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। कभी-कभी आप दुःसाहस करेंगे। जिसका फल आपको ठीक नहीं मिलेगा। क्रोध से आपको हानि अधिक होगी। अतः क्रोध से हमेशा बचना आपके लिये हितकर रहेगा।

आपकी विचारधारा स्वतंत्र स्वभाव की रहेगी। इससे आपको किसी के आधीन कार्य करने में असुविधा महसूस होगी। जबकि स्वतंत्र प्रभार वाले कार्यों में आप तन मन धन से सेवा करेंगे और नाम तथा यश प्राप्त करेंगे। आपको अपने रोजगार-व्यापार में स्वतंत्र प्रभार वाले क्षेत्रों का चुनाव करना प्रगति में सहायक होगा। सामाजिक एवं संगठन के क्षेत्र में आप मुखिया के समान कार्य करेंगे एवं स्वयं की योजनानुसार कार्य करने पर आपको अच्छी ख्याति एवं लाभ प्राप्त होगा। सूर्य एवं मंगल का मिला जुला प्रभाव आपको उच्चता प्राप्त करायेगा।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले स्पष्ट वक्ता होंगे। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे। आपका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होगा अर्थात आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार धारा पर निर्भीक चलेंगे। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी। एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगे। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगे। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगे, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका भाग्यांक 1 है, जो आपका मूंलाक भी है। इसका स्वामी सूर्य ग्रह है। मूलांक एवं भाग्यांक एक ही होने से आपके अंदर सूर्य के गुण-अवगुणों की मात्रा द्विगुणित हो

जाएगी। इसके प्रभाववश आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति काफी अच्छी तरह होगी एवं स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति का विस्तार होगा। आपके अधिसंख्य कार्य मूलांक 1 के प्रभाव से संचालित होंगे। भाग्य के संबंध में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे एवं अपनी मेहनत तथा लगन से समाज में अपनी यश पताका फहराएंगे। आप समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान करेंगे एवं अपने अनुयायियों को सही मार्गदर्शन देंगे।

भाग्यांक 1 तथा मूलांक 1 के प्रभाववश आपका भाग्योदय 19 वर्ष की अवस्था से विकसित होते हुए 28 वें वर्ष की अवस्था में उच्चतम रहेगा एवं 37 वें वर्ष में पूर्ण भाग्योदय को प्राप्त करेंगे।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपका मूलांक भाग्यांक एक ही होने से मूलांक भाग्यांक के फलों में द्विगुणित वृद्धि होगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन्, या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8, होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिन आपके लिये विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु आपको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः आप यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी माह की 5, 6, 14, 15, 23, एवं 24 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उक्त तरीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक होगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं आपकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उक्त मूलांक वाली महिलाओं से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखों में हुआ हो वे सभी स्त्रियां आपके लिए सहायक एवं लाभ पूर्ण रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। आप यथासंभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में लें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल तो आप हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो आपका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

वास्तु एवं निवास

आपके ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, कॉम्प्लैक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। आपकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। आपके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों का समावेश आपके कपड़ों में होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि आप पीला, सुनहरी या भूरा रखेंगे तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

शुभ वाहन नं

यदि आप वाहन आदि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण के लिए नंबर आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा।

आपका मूलांक 1 है। अतः आपके लिए अंक 1,4,8, अच्छे रहेंगे। इसलिए आपके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 रहेगा, जो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। आपकी यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4, या 8 हैं तो आपकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

हृदय पक्ष आपका कमजोर रहेगा तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट आपको अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा - कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे आप सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से आपको हर समय सावधान रहना चाहिए। रोग, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन नमक रहित एक समय भोजन करना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडिकल स्टोर, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार-व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

व्रतोपवास

आपको रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें । भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब आपको स्वयं अनुभव होगा कि आप विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां आपसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

माणिक आपका प्रधान रत्न है। माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लालड़ी, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन, लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप सूर्योपासना करें तथा उगते सूर्य का दर्शन करते हुए नित्य एक लोटा अर्घ्य (रोली, चावल जल में डाल कर) ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस किया को करने पर आप विभिन्न रोंगो तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ी स्वर्ण अंगूठी के दर्शन कर लें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए, सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य गायत्री मंत्र - आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

वनस्पति धारण

आप रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ लाकर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक रविवार को एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ सूर्य के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिलाकर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

योग्य व्यक्ति के लिए सूर्य की शांति हेतु सूर्य के पदार्थ गेहूं, गुड़, रक्त चंदन, लाल वस्त्र, सोना, माणिक्य आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु सूर्य यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केसर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में वृश्चिक लग्न में हुआ था। आपके जन्म के समय मेदिनीय क्षितिज पर कन्या राशि का नवमांश एवं वृश्चिक राशि का द्रेष्काण भी उदित था। यह नक्षत्रीय समन्वयन इसका सूचक है कि आप वैदेशिक यात्रा करेंगे। यदि आप अपने कार्य कुशलता को समुचित रूप से प्रस्तुत किया तो ऐसी आशा है कि आपको विदेश में पुनर्वासित होने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है। सामान्यतया यह अस्थिरता का प्रतीक है कि आप अनेको बार वैदेशिक भ्रमण करेंगे क्योंकि आपमें अत्यंत ही भ्रमण करने की लालशा विद्य मान है।

आपका जनसामान्य के साथ अपरिवर्तनीय कपट पूर्ण व्यवहार होता रहेगा। आप प्रसन्नचित मुद्रा में अति मधुर भाषा में महत्वपूर्ण बाते करेंगे। आप सदैव विभिन्न प्रकार से अनेक मनोदशा से युक्त हृदय को संतुष्ट करने वाली बातें करेंगे। आप किसी भी व्यक्ति के साथ व्यवसायिक व्यवहार से ऊपर उठने अर्थात् उन्नति करने के उद्देश्य से बात करने के पश्चात यह महसूस करते हैं।

आप अपनी व्यवसायिक उन्नति एवं अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए किसी भी प्रकार का आचरण कर किसी भी हद तक जा सकते हैं।

आप सांसारिक सुखों की प्राप्ति एवं प्रसन्नता हेतु अच्छी प्रकार से विज्ञ हैं। आप अपने लाभदायक उपलब्धि हेतु तथा धन संचय हेतु अपने संबंधित व्यक्तियों को व्यवहार में लाएंगे। एक बार यदि धन प्राप्ति में सफल हो गए तो पुनः अपने संबंधी अथवा मित्रों को किसी भी प्रकार से सहायता करने में कोई अनिच्छा नहीं दिखाएंगे।

व्यवसायों में आपके लिए अनुकूल पेशा फिल्म अभिनेता, माइनिंग अभियंत्रिकी का पद उत्तम एवं लाभप्रद होगा। आप कृषि कार्य, कृषि उत्पादन एवं तेल इंजिन आदि का व्यवसाय करेंगे।

आप सदैव अपने परिवार की अच्छी सेवा किस तरह से किया जाए। ऐसा चिंतन करते हैं। आप किसी भी प्रकार की दुर्भावनाओं को त्याग कर अनेक प्रकार से अतिरिक्त समय निकाल कर अपने पारिवारिक सदस्यों की प्रसन्नता देना ही अपना लक्ष्य समझेंगे। आप एक समझदार, सहायक पत्नी एवं उदीयमान संतान को प्राप्त करने के संबंध में भाग्यशाली हैं। यदि आप अपने लिए जीवन संगिनी का चयन करना चाहें तो जिस जातक का जन्म वृश्चिक, मीन, कर्क, मकर, वृष तथा कन्या राशि में हुआ हों उनके साथ आपका सामंजस्य पूर्ण जीवन व्यतीत हो सकता हैं।

आप परिष्कृत ढंग से किसी भी प्रकार की कपटपूर्ण युक्ति में विश्वास रखते हो। इस प्रकार आप अपने धन का थोड़ा बहुत अंश भी अपव्यय कर दिए तो परिणाम स्वरूप आपको धन का अभाव हो जाएगा। अतः कुछ भी बचत करना चाहिए। यदि आप अपने अतिरिक्त अपव्ययकारी आदतों का त्याग नहीं कर सकें तो आपके बैंक में यथेष्ठ धन जमा नहीं हो

सकेगा।

आपके लिए अनुकूल व्यवसाय इंजिनीयरिंग, कृषि कार्य, चर्मोउद्योग एवं तेल इंजिन का कार्य व्यवसाय आदि लाभकारी प्रतीत होता है। उपरोक्त व्यवसायों में अपनी अभिरूचि के अनुसार व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। इन व्यवसायों में जिस व्यवसाय से आप संबंधित हैं उसे भी करते रहने से लाभ होगा। यदि आप अभिनय के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करें अथवा साहस करे तो यह कार्य भी अनुकूल हैं। वैसे स्वर्ण माइंस का कार्य अथवा स्वर्ण जेवरात बनाने का कार्य भी कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परंतु कुछ वर्षो के बाद ऐसी आशंका है कि आप कुछ रोगों से आक्रांत हो सकते है। यथा ग्रंथि रोग एवं अनिंद्रा रोग का दुष्प्रभाव पड़ सकता है। अस्तु आपको पहले ही सुरक्षात्मक कदम उठाना उत्तम है।

साप्ताहिक दिनों में आपका भाग्यशाली दिन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार, है। आपके लिए वास्तव में शुक्रवार, बुधवार एवं शनिवार का दिन अनुकूल नही है।

आपके लिए अंकों में लाभदायक एवं समय को अनुकूल बनाने वाला अंक 1, 2, 3, 4, 7 एवं 9 अंक है। परंतु अंक 5, 6 एवं 8 अंक त्यागनीय है।

आपके लिए रंगों में सफेद रंग, हरा एवं नीला रंग अनुकूल नहीं हैं। स्पष्टतः आपके लिए रंग पीला, लाल, नारंगी, एवं क्रीम रंग अनुकूल एवं मनभावन है।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक

दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, कोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी ,न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्मसमय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यता वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होते हैं। इनमें शारीरिक बल की प्रचुरता रहती है अतः परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ये अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग में सम्माननीय समझे जाते हैं। ये अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं तथा आत्मिक शक्ति की भी इनमें प्रबलता रहती है।

धन संग्रह के प्रति भी इनकी रूचि रहती है तथा धर्नाजन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित में इनकी विशेष रूचि रहती है तथा इस क्षेत्र में उनको सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। निर्भीकता तथा लगनशीलता का भी भाव आप में विद्यमान होगा। अतः कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। विज्ञान गणित या मेडिकल के क्षेत्र में आप विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे। धनसंग्रह में भी आपकी रूचि होगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग असुविधा महसूस करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भावना से नहीं बल्कि बुद्धि द्वारा संचालित होंगे। अतः सामान्य रूप से आप प्रसन्नतापूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि की प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे मानसिक शांति भी बनी रहेगी। पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही आप में विद्यमान होगा तथा इन गुणों से आप अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। इससे आप धनैश्वर्य अर्जित करेंगे तथा अन्य भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिनका आप आनंदपूर्वक उपभोग करेंगे परन्तु यदा कदा तेजस्विता के स्थान पर उग्रता या क्रोध का असमय प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानियां उत्पन्न होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव अवश्य रहेगा परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में आप लोकप्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको वांछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर मिलता रहेगा इस प्रकार आप स्वस्थ बलवान पराक्रमी तेजस्वी धनसंग्रह कर्ता एवं परिश्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपुरूषार्थ से जीवन में इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरूष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रूचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरूष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी अच्छी रहेगी एवं किसी भी विषय का ज्ञान आसानी से प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके लिए वे कर्तव्य परायण तथा आज्ञाकारी होंगे तथा आपका भी उनके प्रति गहरा लगाव रहेगा। पारिवारिक शान्ति एवं खुशहाली के लिए आप एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आप एक पराक्रमी तथा साहसी पुरूष होंगे तथा परिश्रमशील कार्यो को करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप नीति के भी ज्ञाता होंगे एवं मंत्रणा या सलाह संबंधी कार्य आसानी से सम्पन्न करेंगे। सांसारिक परेशानियों एवं समस्याओं का समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे तथा किसी भी कार्य को तब तक सम्पन्न करेंगे जब तक कि उसमें सफलता प्राप्त न कर लें। जीवन में संचार साधनों यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन संबंधी सुविधाएं अर्जित करेंगे तथा इनका उपभोग करते समय स्वयं को अन्य जनों से श्रेष्ठ अनुभूति करेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी गहरी रूचि रहेगी। समस्त भौतिक सुखों का भी उपभोग करेंगे। आपकी समय समय पर दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करेंगे। साथ ही इनसे आपको ख्याति प्राप्त होगी तथा सामाजिक सम्मान में भी वृद्धि होगी। समाचार पत्र तथा अन्य सूचना संबंधी लेखों को आप चाव से पढ़ेंगे तथा रिक्त समय में आप इसका पूर्ण सदुपयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त आप बातचीत एवं विचार से शांत प्रकृति, पुत्र.पौत्र से युक्त, गुरू तथा मित्र प्रेमी, धनवान तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा केतु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित हैं। अतः इसके प्रभाव से सांसारिक सुखों की प्राप्ति में आपको असुविधाओं का सामना करना पडेगा तथा भौतिक एवं आधुनिक सुख संसाधन भी काफी परिश्रम के उपरांत ही प्राप्त होंगे लेकिन आप एक परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति हें। अतः अपने इन गुणों से आप अपना सांसारिक कार्य-सलापों को सम्पन्न करेंगे इससे सन्तुष्टि बनी रहेगी।

जीवन में यद्यपि आप चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे परंतु इससे आपको काफी पराक्रम एवं परिश्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। नाना या नानी से भी आपको नयूनाधिक मात्रा में चल या अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको हमेशा दूर ही रहना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

आपका आवास मध्यम होगा परंतु इसमें आवश्यक सुख-सुविधाएं विद्यमान होंगी। यह भौतिक उपकरणों से भी युक्त होगा। घर की स्वच्छता के प्रति आप सतर्क होंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर मध्यम कालोनी में होगा परंतु पड़ोसियों से संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी विलम्ब से ही प्राप्त होगा तथा वाहन भी सामान्य ही होगा।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से सभी लोगों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगी। परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे परंतु यदा कदा क्रोध का प्रदर्शन करने से किसी को भी उनसे अनावश्यक परेशानी हो सकती है लेकिन यह अल्प कालिक होगा। आपके प्रति उनके मन में स्नेहभाव होगा तथा समय समय पर नैतिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी लेकिन आप दोनों के मध्य मतभेदों की बहुमता होगी तथा सामंजस्य की प्रवृति का अभाव होगा जिससे संबंधों में तनाव रहेगा। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

अध्ययन के क्षेत्र में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पडेगा तथापि छोटी कक्षाओं में अनुकूल सफलता मिल सकती है परंतु स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं व्यवधानों का सामना करना पडेगा लेकिन यदि आप स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा आदि करें तो इससे आपको अनुकूल सफलता मिल सकती है क्योकि आप परिश्रमी व्यक्ति है। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी।

नैसर्गिक पापी ग्रह केतु की शनि की राशि में चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से मध्यावस्था में आपको रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप खान-पान का उचित ध्यान रखें तथा ऐसे पदार्थो का सेवन न करें जिनसे उपरोक्त

समस्याएं पैदा होती हो तो उनसे आप सुरक्षित होंगे तथा समय प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने सम्स्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की भी क्षमता विद्यमान होगी जिससे आपको वांछित सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा आपके इस गुण से अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे। आप अपनी तीव्र बुद्धि से कठिन से कठिन समस्याओं का भी उचित समय पर समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि कम ही होगी लेकिन आधुनिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान या तकनीकी क्षेत्र में आप पूर्ण रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इन क्षेत्रों में आप कोई शोध कार्य या नवीन सिद्धांत के प्रतिपादन में भी समर्थ हो सकते है। इस प्रकार अपनी विद्वता से आप समाज में सम्मान जनक स्तर अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में मीन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में यद्यपि आपकी रूचि कम होगी परन्तु आपका प्रेम भावुकता से हीन होगा तथा इससे आदर्शवादिता, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि कोण होगा एवं भावनात्मक आकर्षण की ही प्रबलता होगी। अतः आप प्रेम- प्रसंग में सफल भी हो सकते है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान एवं आदर का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी समान्यतया वे तत्पर होंगे परन्तु वे स्वतन्त्र प्रवृति के होंगे अतः यदा-कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते है। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चपहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। वृद्धावस्था में बच्चों से आपको प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सेवा एवं सहयोग भी मिलता रहेगा जिससे आप वृद्धावस्था में सुख की अनुभूति करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी सिद्ध होंगे तथा प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में विशेष उन्नति का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा दीक्षा का आधुनिक परिवेश में प्रबन्ध करेंगे तथा किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे जिससे वे जीवन में अच्छी उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके आपकी आकाक्षांओं को पूर्ण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अपने कार्यो में निपुण एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा वे भी उन्हें वांछित स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपके विरोधी या शत्रु कोई उच्चाधिकारी या उच्च व्यक्ति होंगे। साथ ही आपके शत्रुओं की संख्या भी अधिक रहेगी तथा समाज में प्रत्येक क्षेत्र में आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। यद्यपि आपके सेवक सभी अच्छे एवं ईमानदार होंगे परन्तु यदा कदा उनकी चोरी की आदत से आप किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आपके गुप्त रहस्यों के बारे में भी वे जानकारी रखेंगे तथा अवसरानुकूल अन्य जनों के समक्ष आपके रहस्यों को उजागर करेंगे जिससे मान सम्मान में न्यूनता आएगी। आप अत्यधिक व्ययशील प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से धन व्यय करेंगे इससे यदा कदा आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा तथा कर्ज आदि भी लेना पड़ेगा। साथ ही ऋणदाता आप पर कोई मुकद्दमा भी दायर कर सकते है क्योंकि आप आसानी से ऋण वापस नहीं कर पाएंगे। अतः ऋण लेने की प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही अन्य फौजदारी मामलों में भी आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है लेकिन अत्यधिक परिश्रम एवं समय के बाद आपको इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

आपके मामा और मामियों का स्वभाव अच्छा रहेगा तथा समाज में वे सम्मानीय रहेंगे। लेकिन वे अल्पमात्रा में कंजूस प्रवृत्ति के होंगे अतः जितना अपनत्व या लगाव प्रदर्शित करेंगे उसके विपरीत अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त कार्य प्रारंभ में सहयोग न करके अन्त में सहयोग करेंगे। साथ ही आपके मुकद्दमे भी सामान्य रूप से चलते रहेंगे। इस प्रकार न्यूनधिक रूप से आप मुकद्दमे से संबध रखेंगे तथा अन्त में आपको इनमें सफलता प्राप्त होगी तथा मान सम्मान में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त खान पान में भी आपको यथोचित परहेज रखना चाहिए अन्यथा रक्त विकार संबन्धी परेशानियां हो सकती है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। वह पराक्रमी साहसी तथा व्यावहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होंगी परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। नैतिकता के प्रति भी उनकी रूचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्टता एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रूचिशील होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में वृष राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथोचित समय पर होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे ।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म विज्ञान में अत्यधिक रूचिशील रहेंगे। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में भी श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आपकी पूर्वाभास शक्ति उत्तम रहेगी तथा अन्तर्प्रज्ञा के द्वारा भविष्यवाणी करने में समर्थ होंगे। वास्तव में संसार की असमान्य बातों में आपकी प्रगाढ़ रूचि रहेगी तथा इन विषयों पर समय समय पर कार्य करते रहेंगे। इसके साथ ही ज्यौतिष या आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सम्मान भी मिल सकता है।

आपको अपने वृद्धजनों से पैतृक सम्पत्ति में जमीन जायदाद की प्राप्ति होगी तथा काफी चल एवं अचल सम्पत्ति आपके नाम रहेगी जिससे आप पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। आपात्काल में बिना किसी कार्य को किए हुए अपनी जायदाद को बेचकर आर्थिक सुदृढ़ता भी प्राप्त कर सकते है। साथ ही आपका जीवन भी आराम से व्यतीत होगा तथा समस्त सुख सुविधाओं से युक्त रहेंगे। शादी आदि के अवसर पर आपको काफी मात्रा में आपकी मांग पर दहेज की प्राप्ति होगी। इसमें धन आभूषण वाहन तथा अन्य आधुनिक उपहार होंगे। बीमे आदि से भी आपको लाभ होगा तथा इसकी एजेंसी के द्वारा आप अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। आपके जीवन में चोरी डकैती या अन्य दुर्घटनाएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इससे आपको कोई विशेष हानि या परेशानी नहीं होगी। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक भाग्यवादी पुरूष होंगे। आप अपने को अन्य जनों के समक्ष आवश्यकता से अधिक धार्मिक प्रदर्शित करने की कोशिश करेंगे तथा पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का अनुपालन करेंगे। साथ ही भगवान के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा दैनिक पूजा या अन्य प्रकार से आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त कर सकते हैं लेकिन यदा कदा इसमें उदासीनता का भाव भी रखेंगे। अतः दैनिक पूजन कार्यक्रम में व्यवधान रहेगा।

आप उच्चशिक्षा प्राप्त करने के उत्सुक रहेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अध्यात्मिक, तंत्र मंत्र एवं ज्यौतिष आदि का अध्ययन भी कर सकते हैं। साथ ही सन्तवाणी का भी ध्यान से श्रवण करेंगे। आपकी प्रवृति परिवर्तनीय होगी। अतः आप समयानुसार अपने शब्दों या वादों को परिवर्तन करेंगे। आप कई तीर्थ स्थानों की यात्राएं भी सम्पन्न कर सकते है तथा अपने धर्म के समस्त पवित्र ग्रंथों का श्रद्धा पूर्वक अध्ययन करेंगे। जीवन में समय समय पर लम्बी यात्राएं सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित धनार्जन भी होगा परन्तु अपनी प्रवृति एवं आर्थिक मामलों में संकीर्णता के कारण यदा कदा आपके मान सम्मान में न्यूनता भी आएगी।

आप एक आदर्श तथा प्रसिद्धि व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप कई बार धमार्थ कुछ दान देने की सोचेंगे परन्तु वास्तव में यह दिखावा होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को करना पसंद नहीं करेंगे जिसमें धन का व्यय होता हो परन्तु अपने पर आप आवश्यकताओं से अधिक व्यय करेंगे लेकिन अन्य जनों की सेवा या सहायता के लिए कुछ भी नहीं करेंगे। पौत्रों से आपको सुख एवं आनन्द प्राप्त होगा वास्तव में आप पूर्वजन्मों के पुण्यों से ही इस जीवन में सुख ऐश्वर्य की अनुभूति कर रहें है लेकिन अगले जीवन के लिए भी आपको कुछ करने की ओर प्रवृत होना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक प्रवृति से युक्त उपवासकर्ता, तीर्थ स्थलों की यात्रा करने वाले तथा धर्म के प्रति श्रद्धालु रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। साथ ही शनि भी दशम भाव में ही स्थित है। सिंह राशि अग्नि तत्व एवं शनि वायुतत्व प्रधान है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा एवं श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय करने के भी इच्छुक होंगे तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा सफलता अर्जित करने में भी समर्थ होंगे।

शनि की दशमभाव में सिंह राशि की स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका के क्षेत्र वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं पेट्रोलियम विभाग, सरकारी या अर्द्धसरकारी क्षेत्रों में कार्य, भारी उद्योग या फैक्टरी कर्मचारी, संदेश वाहक, रासायानिक क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। साथ ही सिंह राशि के प्रभाव से राजनीति के क्षेत्र में भी आपको वांछित सफलता एवं उन्नति की प्राप्ति हो सकती है। अतः आपका यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए इससे आप प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए लोहे का कार्य, प्रिंटिग प्रेस, भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, खेती बागवानी, शराब का व्यापार तथा मोटे धान्यों के क्रय विक्रय का कार्य शुभ एवं लाभदायक रहेगा। यदि आप व्यापार करने के इच्छुक है तो आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापारिक कार्यो को प्रारंभ करें। इनसे आपको वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा अन्यत्र भी सन्तुष्टि बनी रहेगी।

दशम भाव में शनि के प्रभाव से जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही सामाजिक संस्थाओं यथा क्लब आदि में भी आप सम्मानित सदस्य हो सकते है। लेकिन सम्मान एवं यश की प्राप्ति में आपको किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रमपूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। साथ ही वे यदा कदा क्रोध के भाव का भी अनावश्यक प्रदर्शन कर सकते है। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं अपनत्व की भावना होगी तथा उच्चशिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य नागरिक बनाएंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी अपने कार्य कलापों से पिता को सन्तुष्ट रखने के लिए यत्नशील होंगे। लेकिन आपके परस्पर संबंधों में मधुरता की न्यूनता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेद भी बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे का सहयोग कम ही लेंगे। अतः आपस में सामंजस्य का भाव बनाए रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी पुरूष होंगे तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं तथा उमंगें विद्यमान रहेंगी। चूंकि आप एक पराक्रमी तथा परिश्रमी पुरूष होंगे अतः जीवन में आपकी अधिकाशं आकांक्षाएं पूर्ण हो जाएंगी। आपकी कुंडली में आर्थिक महत्वाकांक्षा की प्रबलता रहेगी साथ ही विभिन्न प्रकार से धन अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी। आप लेखन कार्य, ज्यौतिष, कमीशन एजेंट, गणित या शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हो सकते है अथवा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही व्यापार के द्वारा भी आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही उनकी आपके प्रति स्नेह एवं पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा एवं आपको सुख दुख में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा अवसरनुकूल माता की तरह आपका पालन पोषण तथा मार्ग निर्देशन करेंगी।

आप मित्र मंडली के मध्य अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा आपके सभी मित्र चतुर चालाक एवं शिक्षित होंगे। अवस्था के साथ साथ मित्रों के आप पथ प्रदर्शन भी करेंगे तथा वे आपसे हमेशा सलाह लेते रहेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी सामान्यतया उच्च रहेगा तथा अपने समाज के मध्य प्रतिष्ठित एवं आदरणीय समझे जाएंगे। साथ ही अन्य जनों की सेवा एवं परोपकार संबंधी कार्यो को भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य क्षेत्रों में भी उन्नतिशील रहेंगे तथा धन ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़, धन ,वाहन एवं व्यापार आदि से उच्च स्थिति में रहेंगे। साथ ही आप एक अधिकारी स्तर के व्यक्ति होंगे तथा सुदंर घर से भी युक्त रहेंगे आपकी आय निरन्तर होती रहेगी क्योंकि आपको धनार्जन करना अच्छी तरह आता है। आपके सरकारी या अर्धसरकारी बांडो या संस्थाओं में पूंजीनिवेश रहेगा जिससे समय समय पर पूर्ण लाभ होगा। साथ ही आप एक ईमानदार उद्योगपति भी हो सकते है। आप आजीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में आय स्रोत भी प्रशस्त होंगे। आपकी बचत उत्तम रहेगी तथा अपने कुशलता से धनार्जन करके बचत भी करेंगे।

आपका रहन सहन तथा खान पान उच्च स्तर का रहेगा तथा इसी स्तर को हमेशा बनाएं रखेंगे लेकिन आपको इसमें अत्यधिक व्यय करना पड़ेगा। आपको स्वादिष्ट एवं महंगा भोजन करना भी पसन्द रहेगा जिसके लिए आप अच्छे होटलों में भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त मित्रों आदि पर भी आप मुक्त भाव से व्यय करेंगे।

आपकी यात्राएं भी सामान्यतया होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होगी ये यात्राएं कार्य वश या भ्रमण के लिए होंगी क्योंकि आपको अच्छे स्थानों की सैर करना तथा अच्छे दृश्य देखना अच्छा लगता है। इस प्रकार आप प्रसन्नता पूर्वक धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

नक्षत्रफल

आप उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए है अतः आपकी जन्म राशि कन्या तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका गण मनुष्य, नाडी आद्य, वर्ण वैश्य, योनि गो तथा मूषक वर्ग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म का प्रथमाक्षर "पी" या "पि" से प्रारम्भ होगा। यथा- पीयूष, पीताम्बर।

आपके मन में दया एवं करूणा का भाव स्वभाव से ही विद्यमान रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपमे विद्यमान रहेगी। आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपके चाल चलन से प्रभावित रहेंगे। आप अपने कोमल स्वभाव तथा अच्छे आचरण के द्वारा समाज मे पूर्ण रूप से सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। साथ ही बुद्धि भी तीव्र होगी। इसी से आप समस्त कार्यो को पूर्ण रूप से सम्पन्न करने में सफल होंगे। आप राज्य या सेना के किसी प्रभाव पद को भी अपनी योग्यता से प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। आपके सभी कार्य धैर्य पूर्वक होंगे तथा सामाजिक जनों से आपके संबंध मित्रतापूर्ण रहेंगे।

दाता दयालु सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपते प्रधानः।
धीरोऽत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, शीलवान, कीर्तिवान राजमंत्री, स्वभाव से कोमल तथा धैर्यधारण करने वाला होता है।

जीवन में आप विभिन्न प्रकार के भौतिक एवं संसारिक सुखों का उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा समाज से पूर्ण मान सम्मान प्राप्त करेंगे। आप कृतज्ञता के सद्गुण से भी सुशोभित रहेंगे तथा दूसरे के द्वारा अपने ऊपर किए गये उपकार को अवश्य ही मानेंगे। साथ ही आप एक विद्वान के गुणों से भी युक्त रहेंगे।

भोगी चोत्तरफाल्गुनीभजनितो कृतज्ञः सुधीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक भोगी सम्माननीय, कृतज्ञ तथा विद्वान होता है।

समाज मे आप सभी वर्गो के मध्य समान रूप से लोक प्रियता प्राप्त करेंगे तथा अपने सुस्वभाव के द्वारा सबके मन मे अपने लिए स्थान बनाएंगे। आप अर्थकरी विद्या के ज्ञाता होगे तथा उसी के द्वारा धनार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त सब प्रकार के सुखों से युक्त होकर आप अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभागद्वितीयफाल्गुन्यां।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्या से धन प्राप्त करने वाला, भोगी तथा सुखी होता है।

आप अत्यन्त ही सहनशील प्रकृति के व्यक्ति रहेंगे तथा दुःखो एवं सुखों का शांत चित से सम्मान करेंगे। दुःख में अनावश्यक दुःखी होना तथा सुख में अनावश्यक सुखी होना आपकी प्रवृति नहीं होगी। साथ ही आप साहसी होंगे तथा वीरता के गुणों से भी सुशोभित रहेंगे। आपके जीवन के सभी कार्य साहसपूर्ण ढंग से सफल होंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जो लोगों को अच्छी लगेगी तथा सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। निशाने बाजी की कला मे भी आप अत्यन्त प्रवीण होंगे। आप में एक महानयोद्धा के लक्षण भी दृष्टिगोचर होंगे तथा आपका समाजिक व्यवहार अत्यन्त ही प्रियकर एवं प्रंशसनीय रहेगा।

दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थ पण्डितः।
उत्तराफाल्गुनी जातो महायोद्धा जनप्रियः।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सहनशील वीर तथा मधुर बोलने वाला, धनुष बाण विद्या में निपुण, महायोद्धा तथा सर्वसाधारण का प्रिय होता है।

इन्द्रियों पर सर्वप्रकार से नियंत्रण करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। आपका चित्त हमेशा शांत रहेगा तथा चंचलता का इसमे सर्वथा अभाव रहेगा एवं अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा आप सर्वत्र मान सम्मान अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे।

दान्तः शान्तो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदस्य पारगः।
उत्तराफाल्गुनिजातो महाबुद्धिर्जनः प्रियः।।
जातकदीपिका

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक इन्द्रियों को वश में करने वाला, शान्त स्वभाव से युक्त, मधुर बोलने वाला, धनुर्वेद में पारंगत, महान बुद्धिमान तथा जनता का प्रिय होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यों में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्य मान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरुष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही

वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

कन्या राशि में जन्म लेने के कारण आपके हाथ लम्बे होंगे तथा शरीर के अन्य प्रमुख अंग कान, दान्त तथा नाक भी दर्शनीय रहेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा कई धार्मिक संस्थाओं के संचालक या उच्च पदाधिकारी रहेंगे। आपके मन मे धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास का भाव रहेगा। आप अपने भाषण मे मृदु एवं प्रियवाणी का उपयोग करेंगे तथा अन्य लोगों को प्रभावित करने मे समर्थ रहेंगे। आप सत्य का पालन करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे तथा शुद्धता का भी विशेष ध्यान रखेंगे। आप अपने समस्त जीवन के कार्यों को धैर्य पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपके मन मे दूसरों की भलाई के लिए कार्य करने की इच्छा रहेगी तथा परोपकार के कार्यों मे अपना पूर्ण सहयोग अर्पण करेंगे। देखने में आपका सौन्दर्य दर्शनीय तथा आकर्षक रहेगा तथा सुख ऐश्वर्य एवं वैभव का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी कन्या सन्तति अधिक होगी तथा पुत्र सन्तति अल्प रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णो।
विद्वानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जामयी दृष्टि से युक्त होकर गमन करेंगे तथा भुजाएं एवं स्कंधभाग भी आपके शिथिलता को प्राप्त होंगे। आप अपने जीवन काल में विविध प्रकार के सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर उसका उपभोग करेंगे। आपका शरीर कोमल रहेगा तथा विभिन्न प्रकार की कलाओं के प्रति आप की रूचि बनी रहेगी। साथ ही आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी। नाना प्रकार के शास्त्रों के विषय में भी आपको अच्छा ज्ञान रहेगा तथा स्त्रियों के प्रति आपके मन में तीव्राकर्षण रहेगा। साथ ही आप अपने जीवन में किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र के मकान एवं धन का उपयोग करने वाले होंगे तथा उससे भी सुख की प्राप्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त आप बाहर देश विदेश में भी निवास करने वाले होंगे।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

स्त्रीवर्ग को आप अपनी हास्यमयी कियाओं से आर्कषित करने तथा प्रसन्न रखने मे सफलता प्राप्त करेंगे। स्वभाव से आप सुशील तथा सरल रहेंगे तथा सत्कार्यों को सम्पन्न

करने मे भी विशेषतया कार्यशील रहेंगे। साथ ही आप भाग्यवान पुरूष भी होंगे ।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आप की बुद्धि स्वच्छ एवं निर्मल रहेगी तथा किसी को भी धोखा देने की प्रवृति आपके मन मे नहीं रहेगी। लेखन कार्य के प्रति आपकी स्वाभाविक रूचि रहेगी। अतः लेखन मे आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही आपके चित्त में शान्ति रहेगी। लेकिन जीवन मे यदा कदा नेत्र कष्ट से कष्टानुभूति करेगे। गुरूजनों के प्रति आपके मन मे विशेष आदर का भाव रहेगा तथा उनके हित कार्यो में हमेशा तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलासी भी होंगे तथा भौतिक विलासमयी वस्तुओं पर खुले हाथों व्यय करेंगे तथा समस्त सुखसंसाधनों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। सज्जन लोगों के प्रति आपके मन मे सम्मान का भाव रहेगा तथा ये लोग भी आपसे पूर्णतया प्रसन्न रहेंगे। समाज में सभी लोगों के लिए आपके मन में स्नेह तथा प्रेम का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही संगीत एवं अभिनय के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा बडे यत्न से उसमे सफलता प्राप्त करेंगे। अपने जीवन काल में इनसे संबधित सस्थाओ से भी संबधित रहेंगे। आप अपने घर से दूर परदेश में भी निवास कर सकते हैं।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप आजीवन ऐश्वर्य वैभव युक्त जीवन व्यतीत करेंगे तथा सर्वप्रकार के सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। आपके मन में विषयवासनाओं संबधी भाव की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा आप इससे व्याकुलता का भी अनुभव करेंगे। समाज मे दूसरे लोगों से आप मधुर संबधों को बनाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही नाना प्रकार की विद्याओं तथा कलाओं के विषय में विस्तृत ज्ञानालोक से आप प्रकाशित रहेंगे।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति श्रद्धावान होंगे तथा श्रद्धापूर्वक इनका सत्कार तथा पूजार्चन करेंगे। यदा कदा आप में अभिमानी प्रवृति भी व्याप्त होगी तथा समाज में आप इसका प्रदर्शन करेंगे। दीन दुखियों के प्रति आपके मन में हमेशा करूणा का भाव विद्यमान रहेगा। आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे तथा बल का आप में अभाव नहीं रहेगा। आप एक बुद्धिमान पुरूष भी होंगे तथा समस्त कार्यो को बुद्धिमता से पूर्ण करेंगे। शरीर आपका कान्तिमय रहेगा एवं बहुत से लोग आपके द्वारा सुख को प्राप्त करेगे।

आप अपने जीवन काल में धन तथा मान सम्मान से युक्त रहेंगे आपको इनका कभी भी अभाव नहीं रहेगा। आपकी आखें देखने में बड़ी होंगी तथा शरीर भी गौर वर्ण से युक्त रहेगा। आप निशाने बाजी की कला में अत्यन्त चतुर रहेंगे। साथ ही समस्त नगरवासियों पर आप अपना पूर्ण प्रभाव स्थापित करने में सफल रहेंगे और उन्हें पूर्णतया वश में रखेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्री वर्ग के प्रति अत्यन्त ही आकर्षित रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आप एक उत्साही पुरूष होंगे तथा सदैव उत्साह से सम्पन्न रहकर अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही आपकी तार्किक शक्ति अति श्रेष्ठ होगी तथा वाद विवाद में सर्वदा उत्तम रहेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन

करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए भाद्रपद मास पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15, तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ नवगृहनिर्माण तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इन दिनों तथा समय समय में स्वास्थ्य के प्रति भी सतर्कता रखने की आवश्यकता है।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से गणेश चतुर्थी,

बुधवार के उपवास रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, हरित वस्त्र, मूंग की दाल, इत्यादि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी समस्त शारीरिक व्याकुलता दूर होंगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होगा एवं शुभ कार्यो में शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री मातृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर वजन में चांदी लेकर उसी दिन दरिया में बहा देवे।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या

मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधू बनना चाहो तो साधू न बन कर जागीरदार बनेंगे। आपको बड़े-बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगे। नौकरी-व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद रहेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगे। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिलेगा या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधवा स्त्री से संबंध होंगे, अमानत में खयानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाले होंगे। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों, लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी-व्यापार में नुकसान उठाएंगे। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधवा स्त्री से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खयानत न करें।

उपाय :

1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से विद्या का पूरा लाभ उठायेंगे जो आगे आने वाले समय में शुभ रहेगा। अगर आप रात्रि समय विद्या पढ़ें तो लाभ हो सकता है। आपके पास सुख के सब साधन उपलब्ध रहेंगे। सत्ता का श्रेष्ठतम फल प्राप्त होगा। 32 वर्ष की उम्र तक लगातार धन आता रहेगा। आपको स्त्रियों का सहयोग मिलेगा और स्त्री से लाभ प्राप्त होगा। आमदनी में बरकत होगी।

यदि आपने शुक्रवार विवाह किया या रात्रि समय विवाह के फेरे लिए, प्रभात समय

दान दिया या लिया, बुधवार को नया काम शुरु किया, शनिवार मकान मशीनरी खरीदी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से विद्या में रुकावट आयेगी। संतानोत्पत्ति में बाधा होगी या आपको पुत्र प्राप्ति में बाधा आ सकती है। कामशक्ति की दुर्बलता रहेगी (कामशक्ति में कमजोरी के समय किसी वैद्य की सलाह से सोना युक्त दवाईयां या दूध से बनी चीजों का इस्तेमाल करें)। आपकी माता देर से आपके पुत्र का सुख देखेंगी। आपकी स्त्री को जब बच्चा पैदा होने वाला हो तो आपकी माता वहां से कहीं और चली जाएं या आपकी स्त्री अपने मायके में बच्चा पैदा करे। आपकी माता जन्म के बाद आपके बच्चे को 43 दिन तक आखों से न देखें या हाथों में न उठायें कर तो आपकी माता और आपके बच्चे की लम्बी आयु रहेगी वरना एक की आयु क्षीण हो जाएगी। आपका या आपकी माता की आंखों के आप्रेशन का भय है। आपके दादी-माता से अधिक मधुर संबंध नहीं रहेगे। आप दुश्मन से परेशान रहेंगे। आपके जीवन में उत्थान-पतन के भी योग आ सकते हैं। आपके भाई-बंधु एवं संपत्ति पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. विद्या अधूरी न छोड़ें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. भैरों मंदिर में दूध चढ़ावें या मजदूर पेशा आदमी को दूध पिलायें।
2. माता का स्वास्थ्य खराब हो तो 11-11 खोये के पेड़े 11 बच्चों मे बांटें।
3. घर में छत के नीचे नदी का पानी रखें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में नौवें खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से आप बड़े ही भाग्यशाली हैं। आपको पैतृक संपत्ति का लाभ मिलेगा। आपकी 13-14 वर्ष की आयु में आपके पिता को बहुत बड़ा लाभ होगा। 28वें वर्ष की आयु में आप पूर्ण भाग्यशाली होंगे। आप एक योग्य प्रशासक होंगे। आपको धन कमाने के बहुत अच्छे अवसर मिलेंगे या अच्छी नौकरी या अच्छे व्यवसाय से धन इकट्ठा होगा। आपको भाई के साथ रहना शुभ होगा। आपको भाई की पत्नी से लाभ होगा। बड़े भाई के साथ व्यवसाय करने से लाभ होगा। आपको होटल, मिठाई आदि के व्यवसाय से बहुत लाभ हो सकता है। आपको पैसे के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। माता की सेहत अच्छी रहेगी और उसका सुख भी प्राप्त होगा। आपको पैतृक संपत्ति मिलेगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सत्ता पक्ष से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको धर्म-कर्म करते रहने से अच्छा फल मिलेगा। धर्म करने से तथा घर में उत्सव मनाने से भाग्य में वृद्धि होगी।

यदि आपने पिता से झगड़ा किया या पिता का विरोध किया, धर्म के खिलाफ काम

किया, समाज विरोधी काम किया, भाई और भाई की पत्नी से झगड़ा किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप कभी-कभी नास्तिकवाद की वकालत करेंगे। आप पर कोई बड़ा कलंक भी लग सकता है। आपके धर्म के विरुद्ध आचरण करने से बदनामी हो सकती है। अगर आप परदेश में रहेंगे तो दुःखी रहेंगे। आपकी कितनी भी ताकत हो, चाहे आपके पास बॉस का दर्जा हो आपको अपने से छोटे लोगों से मांग कर खाना पड़ेगा अर्थात् शेर को गीदड़ से मांग कर खाना पड़ेगा, ऐसी कहावत आप पर चरितार्थ होगी। सभा समाज में आपको अपनी गलतियों द्वारा तिरस्कृत होना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. परदेश में रिहाइश न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

उपाय :
1. भाई की पत्नी की सेवा करें।
2. लाल रंग का रुमाल पास रखें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से अच्छी स्थिति बन सकती है। वैसे आपको धन-संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। आपकी बहन-लड़की अपने ससुराल में ही सुखी रहकर बसेगी। मगर अपने पिता के घर में दुःखी रहेगी। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये-लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदा असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल करेगा। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगे। सट्टे-लाटरी का काम या दलाली के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता के धन पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा। कभी-कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता के लिए अशुभ होगा। आपकी पत्नी का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :
1. स्टैनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से जीवन निर्वाह के लिए आपको अकेले ही संघर्ष करना पड़ेगा। आप अपने पराक्रम से यशस्वी होंगे। आपको सोने, चांदी, कपड़े के काम में खूब लाभ होगा। कपड़े या दलाली के कामों से यश और अधिक धन मिलेगा। आप जीवन के 29वें वर्ष से सुख की ओर अग्रसर होंगे। आपको अपने लिए संघर्षरत रहना पड़ सकता है। आपको पिता की तरफ से जितना सहयोग चाहिए उतना सहयोग नहीं मिलेगा। दस्तकारी के कामों में खूब धन मिलेगा। आप धर्म में विश्वास रख कर नेकी के काम करेंगे। आपका गृहस्थ जीवन सामान्य रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। आप सरकारी विभाग से संबंधित यात्रा से हीरे-मोती पैदा करेंगे। विदेश की यात्रा से भी भरपूर लाभ मिलेगा। आप अपने पराक्रम से काम करके बहुत सुखी हो जाएंगे।

यदि आपके घर में या घर के पास सूखा पीपल का वृक्ष हुआ, विद्या अधूरी रही, ख्वाबी महल देखने शुरु किये तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से उम्र के 36 वर्ष के बाद धर्म के मंदिर में जाकर शीश झुकाने से बहुत लाभ होगा जिससे आपका भाग्य बदल जाएगा। आप चरित्रहीन औरतों के साथ रह कर बहुत दुःखी रहेंगे। आप चोरी और चरित्रहीनता से दूर रह कर, भाग्य के लिए अच्छा फल प्राप्त कर सकते हैं। दूसरों पर रहम करके दुःख उठाने के भागी होंगे। आपके यहां अग्निकांड न हो इसके लिए सतर्क रहना चाहिए। आपका संतान के साथ मनमुटाव रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सोना न बेचें।
2. पीले वस्त्र या सोना न पहनें।

उपाय :
1. गुरु-साधू की सेवा करें, पीपल को पानी से सीचें।
2. 43 दिन तांबे का पैसा बहते पानी में प्रवाह करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी ज्योतिष, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी। आप अपने परिवार का पोषण करेंगे। राज्य पक्ष से अच्छा लाभ मिलेगा। आप हर प्रकार से सुखी रहेंगे। स्त्री के माध्यम से जो भी कार्य संपन्न होते हैं वह आपके लिए अच्छा होगा। आपके काम के सुनिश्चित परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आड़े समय में मदद्गार होगी। आपके जीवन में तरक्की की बागडोर आपकी पत्नी के हाथ में होगी। आप औरत की इज्जत करेंगे इसका अच्छा फल मिलेगा। विवाह के बाद काफी धन मिलेगा। स्त्री का पूरा सुख मिलेगा। आप सदैव ही दूसरों की सेवा हेतु तत्पर रहेंगे। आप जवानी में अपना समय ऐशो आराम से बिताएंगे। आपके मन में वहम समाया हुआ रहेगा। आप चित्रकला प्रिय अथवा गायन प्रिय होंगे। आप धर्माचरण करके शुभ प्रभाव को अपनाएंगे। आपको खेती-बाड़ी का लाभ भी मिलेगा। आप बेरहम होंगे फिर भी आपका मान-सम्मान बरकरार रहेगा। आपके पास बहुत जायदाद होगी।

यदि आपने पत्नी से अच्छे संबंध न रखे या पत्नी की सेहत खराब के समय देखभाल न की, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप बूढ़े होने पर दूसरे लोगों को अपने जीवन में भुगती बातों को सुना कर समय बर्बाद करेंगे। पत्नी बीमार रहा करेगी तो आपका भाग्य अच्छा नहीं रहेगा। कन्या संतान का आपके जीवन पर बुरा प्रभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. पत्नी के स्वास्थ्य का विघेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. गाय दान करें।
2. देसी घी का दीपक जलावें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के दसवें खाने में शनि पड़ा है। जिसकी वजह से आप महत्वाकांक्षी होंगे। सरकार द्वारा लाभान्वित होंगे। आप दूसरों का सम्मान करेंगे तो आप भी सम्मानित होंगे। आयु के हर सातवें वर्ष में आपके धन में वृद्धि होगी। आयु का हर तीसरा वर्ष आपके लिए फायदेमंद रहेगा। सवारी का अच्छा फल मिलेगा। ससुराल पक्ष के धन में वृद्धि होगी। आप धर्मात्मा तो होंगे परंतु बुढ़ापे में आप निकम्मे हो जाएंगे। आप एक ही जगह पर स्थायी कार्य करेंगे तो अच्छा लाभ होगा। आप परिश्रमी और अपने हाथ से अपना भाग्य बनायेंगे। 39 वर्ष की आयु तक पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपके जीवन का 3रा, 5वां, 9वां, 21वां 33वां, 40वां एवं 57वां वर्ष में 10 गुनी तरक्की, इज्जत और धन-दौलत के लिए

लाभदायक समय रहेगा।

यदि आपने 48 वर्ष की आयु से पहले मकान बनाया, शराब-मछली का सेवन किया, चाल-चलन खराब किया, इधर-उधर भाग दौड़ करने वाली नौकरी-व्यापार किया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से यदि आप शराब सेवन नहीं करें तो निश्चय ही आपके भाग्य में उन्नति होगी। आपसे किसी की मृत्यु, आग्नेय शस्त्र या हथियार से हो ऐसी आशंका है। पत्नी के लिए कष्टकारक रहेगा। आपके गृहस्थ और ससुराल के लोग कष्ट में रहेंगे, माता-पिता को कष्टकारी होगा। शराब-मछली के सेवन से तरक्की-अवनति में बदलती रहेगी या बहुत हानि होगी। धन-सम्मान मिट्टी में मिल जाये, ऐसी शंका है। आपके जीवन का 27वां वर्ष हानिकारक हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मादक चीजों-द्रव्यों और शराब-मछली का सेवन न करें।
2. भाग-दौड़ के काम न करें।

उपाय :

1. हथियार पास न रखें।
2. सिर पर चोटी रखें या केसर का तिलक करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप शील संपन्न, अच्छे स्वभाव के, शूरवीर, साहसी होंगे। आपका हर काम सराहनीय होगा। आपके उच्च विचार होंगे। आपको सबसे यथोचित सम्मान मिलेगा। आप बड़े कारखाने के मालिक होकर या उच्च पद पर रह कर बहुत बड़ी संपत्ति कमाएंगे। आपके जीवन में राजयोग रहेगा और अच्छा सुख प्राप्त होने की उम्मीद है। आप निश्चित ही बड़े व्यापारी और धनवान होंगे। फिजूल के खर्चों से सावधान रहें। धन-दौलत का अच्छा असर रहेगा। सिर के बाल जल्दी सफेद हो जाएंगे मगर उनको डाई न करें। आपका चरित्र बहुत ऊंचा होगा।

यदि आपने अपना सिर नंगा रखा अर्थात् सिर पर टोपी/पगड़ी न रखी, मौके के आफिसर से झगड़ा किया, अपने परिवार को तोड़ा तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से माता-पिता को कष्ट की आशंका है। शरीर में कोई विकार उत्पन्न होगा। धन-संपत्ति का नुकसान हो सकता है। आपमें कोई न कोई व्यसन विद्यमान हो सकता है, सावधान रहें। आप अपने हाथों संपत्ति को बेच भी सकते हैं। आपकी तंगदिली से दूसरों के साथ बैर पैदा हो सकता है। परिवार के लोगों से अनबन रहेगी। माता के लिए कष्टकारक समय भी आ सकता है। आंखों पर बुरा असर पड़ने की आशंका है। सिर दर्द से आपकी परेशानी बढ़ सकती है। कोई काला आदमी आपकी धन-संपत्ति का नाश कर सकता है। ऊंची जगह से गिरने का भय, सरकारी अधिकारी से झगड़ा करने पर जुर्माने आदि

का भय, बीमारी पर धन का खर्च हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़े अर्थात् नंगा सिर न रखें।
2. मौके के अधिकारी से झगड़ा न करें।

उपाय :
1. सिर पर सफेद टोपी या शरबती पगड़ी टोपी जरूर पहनें।
2. जौ अंधेरी जगह में बोझ के नीचे दबायें।
3. मीठा भोजन अंधों को बांटें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के चाथे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप पूर्ण आस्तिक होंगे। हर काम धीरज के साथ करेंगे। सभी के साथ आपका व्यवहार सौहार्दपूर्ण रहेगा। आप आशावान, गुरु और पिता की सेवा में संलग्न, चरित्रवान और जो मिले उसी में संतोष प्राप्त करने वाले होंगे। आपकी कन्या भाग्यवान और आपके लिए लक्ष्मी स्वरूपा होगी। कन्या के जन्म के बाद आपका घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाएगा। आपको पिता का लम्बे समय तक सुख मिलेगा। आप पिता और गुरु की भक्ति करने वाले होंगे। आपको जायदाद संबंधी कानूनी समस्या खड़ी हो सकती है। आप स्वयं एवं आपके पुत्र दीर्घायु होंगे। आपको अच्छा भवन और उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा।

यदि आपने कुत्ते को मारा या किसी दूसरे से मरवाया, कुत्ता पानी में गिराया, कुल पुरोहित से झगड़ा किया या उससे नाता तोड़ा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो देर से संतान पैदा होगी या संतान सुख में कमी बताता है। पुत्र संतान की अपेक्षा कन्या संतान अधिक होंगी, ऐसी आशंका है। पुत्र जन्म के बाद माता को कष्ट की आशंका है। मधुमेह रोग की आशंका है। रीढ़ की हड्डी, पेशाब की बिमारी होगी ऐसी आशंका है। दुर्घटना या ऊपर से गिरने का भय है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. कुत्ते को चोट न मारें।
2. माता से दूर न रहें।

उपाय :
1. चने की दाल, केसर धर्मस्थान में देवें।
2. कुल गुरु या कुल पुरोहित का आशीर्वाद प्राप्त करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।वर्ष के पूर्वार्द्ध में अष्टम स्थान का गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बना रहा है अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने कार्य व्यवसाय में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करना चाहिए। आपके कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए सावधानी बरतें।

02 जून के बाद कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें आपका भाग्य साथ देगा। व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद दशमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी पदोन्नती भी होगी और आपको कार्यस्थल पर मान-सम्मान भी प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति के साथ-साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

02 जूनके बाद नवम स्थान का गुरु आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। आप इच्छित बचत कर पायेंगे। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यो में धन खर्च हो सकता है। आप बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। उनकी बीमारी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहींरहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

02 जून के बाद समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई-बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति में मददगार होगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके बच्चों कीउच्च शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। प्रथम संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा।आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

02 जून के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारिरीक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियो की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य के कारण पढ़ाई में व्यवधान बना रहेगा।

02 जून से इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा के लिए समय काफी अच्छा है। तकनिकि शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। बेरोजगार जातकोंको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। 02 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है। 31 अक्टूबर के बाद आपकी जन्म भूमि की यात्रा भी हो सकती है या पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा।पंचमस्थ शनि के प्रभाव से साधना, योग या मन्त्र सिद्धि के प्रति आप अधिक समर्पित होंगे। 02 जून के बाद आप किसी को गुरु बना कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं शान्ति प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा आर्थिक स्थिति को सुधारने में सफल रहेंगे। इस मास आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध होंगे। साथ ही इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा। इस समय आप मिष्ठान का उपभोग भी अधिक मात्रा में कर सकेंगे। इस मास आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा फलतः शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु वर्ग को पराजित करने में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे तथा वे आपसे भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो से भी आप धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी वांछित सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समाज में आपका यश व्याप्त रहेगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप उत्तम फल प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से भी आपको यथोचित मान सम्मान एवं यश प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी आप इस मास तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त भाइयों से आपको इस समय पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपके मानसिक विचार एवं संकल्प भी पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता भी अर्जित करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्टानुभूति होगी। साथ ही शत्रु वर्ग से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी इस समय आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा

अनावश्यक रूप से संबधों में तनाव विद्यमान रहेगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी हानि या मंदी के योग बनेंगे। साथ ही स्थान या कार्य क्षेत्र में परिर्वतन भी कर सकते है। समाज में भी अधिकाशं लोगों से आपके विवाद होते रहेंगे जिसके कारण उनसे कटुता का व्यवहार रहेगा फलतः आपके समाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि भी हो सकती है।

साथ ही इस मास गर्मी या पित्तादि दोषों से भी अस्वस्थ रहेंगे। इस समय किसी कारण से रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है। अतः इस समय आप सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की वृद्धि होगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस मास आप संतति पक्ष से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। इस समय आपके प्रभुत्व में भी वृद्धि होगी तथा अन्य लोग आपके प्रभुत्व को हृदय से स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों की भी आप श्रद्धा पूर्वक पूजन एवं सम्मान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होगी फलतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से भी वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की भी आप प्राप्ति कर सकते है। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः आप शारीरिक रूप से दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से उनकी तरफ से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे अतः मन में भी अशान्ति रहेगी। आपके घर में इस मास चोरी भी हो सकती है अतः चोरों से सावधान रहें। साथ ही अपने उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित भी किया जा सकता है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे तथा धन का व्यय भी अनावश्यक तथा अधिक होगा।साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा।संबधियों एवं मित्रों से आपके संबधों में तनाव रहेगा एवं समाज से भी आप अपने को उपेक्षित महसूस करेंगे। इसके

अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगी ।

साथ ही इस समय आप वातोत्पन्न रोगों से भी पीड़ित रहेंगे। अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त करेंगे अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं से भी चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्न रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में भी न्यूनता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मन में लोलुपता के भाव की प्रधानता रहेगी। अपने बन्धु एवं मित्रों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक तनाव तथा वैमनस्य का भाव बना रहेगा। साथ ही इस समय आपके मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से भी विवाद होते रहेंगे जिससे आप काफी दुःखी एवं अशान्त रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप वायु द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी एवं बाद में पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको धन हानि का योग बनता है अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को आप प्राप्त करेंगे। इस समय शत्रु पक्ष प्रबल होने से आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे साथ ही घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इस समय आप शारीरिक रूप से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं अन्य कई प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे। अतः शारीरिक बल की भी आप में न्यूनता रहेगी। इस मास में आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते है। आपके सांसारिक कार्यो में कई प्रकार से विध्न बाधाएं आएंगी अतः इन्हें समय पर पूर्ण करने में आप असमर्थ रहेंगे। साथ ही मुकद्दमें आदि कार्य में भी आपके धन का अपव्यय हो सकता है। अतः सोच समझकर बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे।अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या अन्य द्रव्यों को भी अर्जित कर सकेंगे जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकांश शुभ फल अर्जित करेंगे परन्तु अल्प मात्रा में अशुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेगा। साथ ही इस महीने में आप किसी धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का भी आयोजन कर सकते है। संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी तरफ से आपको कोई चिन्ता नहीं रहेगी साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में वृद्धि होगी एवं देवता तथा ब्राहमणों का आप श्रद्धा पूर्वक पूजन तथा सेवा करेंगे। समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में इस समय में पूर्ण वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा तथा लाभ दायक यात्रा का भी योग बनेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा ।मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको उचित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। इस समय आप समाज में सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

परन्तु इस मास में आप गर्मी या पित्तादि से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार का भय भी रहेगा अतः सावधानी तथा सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा सम्मान भी प्राप्त करेंगे तथा ये लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे।आपके कई विलम्बित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा मित्रों एवं बन्धुओं के मध्य आप की मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।साथ ही आपकी असफल आशाएं भी इस समय सिद्ध होगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस समय आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करने में सफल रहेंगे।आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में संपूर्ण मास धनार्जन होता रहेगा। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में वृद्धि होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे ।सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से लाभार्जन करने में भी इस मास में सफलता प्राप्त करेंगे ।शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन भी प्रसन्नता से युक्त रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन में भी आपकी तीव्र रूचि रहेगी। मित्रों तथा संबधियों से आपके संबध मधुर एवं घनिष्ठ रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास आपको वांछित द्रव्यों की प्राप्ति होगी जिसके उपभोग से आप सुखी तथा निश्चिंत रहेंगे। साथ ही बन्धु वर्ग में प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे आपके कई शुभ कार्य सिद्ध होंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश अर्जित करने में सफल रहेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त मध्यम रहेगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों के साथ में रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ तथा दुर्बल रहेंगे। इस मास में अत्यधिक परिश्रम के पश्चात भी आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि होती रहेगी तथा मित्रों एवं संबधियो से भी मधुर संबध नहीं रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आपको शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः महिला सहयोगियों से आप लाभार्जन करेंगे तथा आपकी बुद्धि में भी निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी फलतः उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। इसके साथ ही समाज एवं सामाजिक जनों से भी आप यश एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन से भी आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग निर्बल एवं आपसे पराजित रहेगा। इस समय आपके लाभ मार्ग भी उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं धनाभाव नहीं रहेगा। साथ ही व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में सफल रहेंगे इस मास में आपकी भाग्योन्नति भी होगी तथा तथा कई

शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा काफी समय से रुके हुए कार्य भी सम्पन्न हो जाएंगे। बन्धु एवं मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे एवं सम्सत सांसारिक कार्यो को आप अपने बुद्धिचातुर्य से सफल बनाएंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आप उचित सहयोग तथा लाभ भी अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों एवं उच्चाधिकार प्राप्त लोगों से सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय आपके आजिविका संबधी कार्य में भी उन्नति एवं दृढ़ता का आभास होगा तथा दूर समीप की कोई लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। साथ ही नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी आप प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। अतः आपके लिए यह मास शुभ रहेगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष तृतीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपको कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। इस वर्ष आपका भाग्य आपके साथ है इसलिए आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ेगा।

जून के बाद समय अति उत्तम है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। आपके कार्य व्यवसाय में समस्त शत्रुओं का दमन होगा। इस समय के अंतराल में आपके ब्राण्ड को पहचान भी लि सकती है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को भी लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भुमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। धन की अनुकूलता के कारण आप खर्च भी अधिक करेंगे। 26 नवम्बर के बाद अचानक आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी, जिससे आप आर्थिक स्थिति को और भी सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रवाभ से आपके समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ-चढ़ कर भाग लेंगे।

जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। परिवार में

परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अति उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गर्भाधान के लिए बहुत ही शुभ समय चल रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्रप्ति होगी। शिक्षा के प्रति इनकी रूचि बढ़ेगी व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है, क्योंकि भाग्य साथ नहीं देगा। अपने मेहनत के बल पर ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करना पड़ेगा। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद मौसम जनित बीमारी से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है परन्तु आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। इस समय नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार आपके लिए लाभप्रद रहेगा। जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठ कर टहलना आपके स्वास्थ्य के लिए अमृत सिद्ध होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। उनको करियर में सफलता मिलेगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी जो अधिक अनुकूल या उन्नति कारक होंगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ एवं अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और उस ज्ञान के माध्यम से परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नाान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में बहा दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही समाज से भी आप उचित मान सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं अपने कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप मिष्ठान अधिक मात्रा में भ क्षण करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक बल में वृद्धि होगी। इस समय आपके शत्रु क्षीण रहेंगे अतः उनका दमन करने में आप को सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इसके साथ ही व्यापार आदि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित होगी जिससे आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी अतः आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इस मास में किसी धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का भी आयोजन कर सकेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विभिन्न प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे साथ ही अन्य जनों की भलाई के लिए भी आप इस मास में कार्य करते रहेंगे। इस समय स्वास्थ्य भी सामान्य ही रहेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण ख्याति प्राप्त होगी। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी होंगे।अतः आप गर्मी या पित्तादि से उत्पन्न दोषों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही किसी प्रकार से रूधिर विकार की संभावना भी हो सकती है अतः शारीरिक सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखें तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे कष्ट अल्प मात्रा में हों।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथापि न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति करगें। आपके शत्रु भी इस मास प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजिविका संबधी कार्य में शिथिलता आएगी तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ नहीं होगा। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से आपका परस्पर वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अवश्य अर्जित करेंगे। अतः स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा इनसे आप सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि की भी प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार आपके लिए यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। अतः आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वबुद्धि बल से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे तथा पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप ज्ञानार्जन करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके अधिकाशं शुभ कार्य सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित लाभार्जन करने में सफल रहेंगे एवं समाज से भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। अतः मन से भी सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप वायु द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा इसके लिए आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। फलतः शरीर में कमजोरी रहेगी। इस मास में आपके शत्रु

भी बलवान रहेंगे जिससे वे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। फलतः आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको किसी भी प्रकार से दण्डित भी किया जा सकता है। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। आपके मित्रों एवं संबधियों से भी इस मास तनाव पूर्ण संबध रहेंगे तथा मनोकामनाएं भी अल्प मात्रा में पूर्ण होगी। इस समय मान हानि का भी योग बनता है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

इसके साथ ही इस मास में आप वायुजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा आग के द्वारा भी आपको धन हानि हो सकती है। अतः आपको पूर्ण रूप से सतर्क होकर अपना समय व्यतीत करना चाहिए।

जून 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही शत्रु पक्ष भी प्रबल रहेगा जिससे वे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे अतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस समय आपमें उत्साह के भाव की अल्पता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आप आर्थिक संकट भी प्राप्त कर सकते है। आपके मन में इस मास में लोभ के भाव की बहुलता रहेगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा मित्रों एवं बन्धु वर्ग से संबधों में इस समय तनाव रहेगा तथा मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। अतः हृदय से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही पारिवारिक तथा अन्य सामाजिक जनों से भी परस्पर वाद विवाद होते रहेंगे अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करना चाहिए जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं इनसे आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न रहेंगे।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा अतः इस समय शत्रु पक्ष से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही इस समय आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी तथा अनावश्यक व्यय भी होगा एवं शुभ कार्यो में विध्न बाधाएं भी उत्पन्न होंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी इस समय अच्छी नहीं रहेगी एवं धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा तथा इसके

अनुपालन में भी उपेक्षा का भाव रखेंगे। आप इस समय शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं कई प्रकार से कष्ट भी प्राप्त करेंगे जिससे आपकी शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। इस मास में आप दूर की किसी यात्रा को भी संम्पन्न कर सकते है। सांसारिक कार्यो में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन व्यय होगा अतः मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त दोष से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय किसी प्रकार का रक्त विकार भी हो सकता है तथा अग्नि आदि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सतर्कता पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें जिससे अनावश्यक कष्ट तथा बाधाएं उत्पन्न न हों।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप मात्रा में लाभार्जन करेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय से सम्पन्न हो जाएंगे। इस मास आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपका यश दूर दूर तक फैलेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य शीघ्र सम्पन्न होते रहेंगे। आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी करेंगे।साथ ही उच्चाधिकारियों से मान एवं सम्मान अर्जित करेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों से अत्यंत ही मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस प्रकार सम्पूर्ण मास विविध प्रकार के सुखों को उपभोग करते हुए व्यतीत करेंगे तथा समाज से यश भी अर्जित करेंगे।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके अधिकारी तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप पदोन्नति के अधिक अवसर प्राप्त करेंगे। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यो के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपकी ख्याति भी दूर दूर तक व्याप्त

रहेगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस महीने आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकते है तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप अन्य प्रकार से सुख तथा ऐश्वर्य अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा सुख पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगे। साथ ही सरकार तथा उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इसको प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग से भी आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति करेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे संतति पक्ष से भी आप सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। सामाजिक जनों के मध्य आप इस समय मान सम्मान प्राप्त करेंगे तथा आपके विलम्बित कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप धर्मानुपालन में भी प्रवृत रहेंगे एवं समाज में यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा। अतः इस समय आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। आप का इस मास में व्ययाधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त होगी। साथ ही स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अपने ही परिश्रम से सिद्ध हो सकेंगे फिर भी आपको पूर्ण सन्तुष्टि नहीं मिलेगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि के योग बनेंगे। मित्रों एवं संबधियों के मध्य आपके संबधों में तनाव रहेगा तथा इनसे आवश्यक सुख तथा सहयोग भी नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगे उसमें अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। शत्रुओं से भी आपके हृदय में नित्य चिन्ता तथा भय का वातावरण बना रहेगा। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यो में भी मनोवांछित सिद्धि नहीं मिलेगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप अपने श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के अवसर बनेंगे। इस मास में आपकी यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे साथ ही आपके लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप इस मास में धनार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सुख भी अर्जित होगा। इस समय सासारिक कार्यो को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा आदर प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं संतति से पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। अतः यह मास आपके लिए शुभ रहेगा।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके कार्य व्यवसाय में विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे। वरिष्ठ लोगों के सहयोग से आपके व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते है परन्तु वे आपका कुछ नही कर पाएंगे और आप अपने सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

24 जुलाई से आपका समय और बढ़िया हो रहा है। व्यापार में बढ़ोत्तरी के संकेत है। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार के विस्तार के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। लाभ में निरन्तरता बनी रहेगी। फरवरी के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आपको शत्रु पक्ष से धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

24 जुलाई से रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से आपको लाभ होगा। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ अनावश्यक व्यय करा सकता है परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नही पड़ेगा। निवेश के मामले में सावधान रहें। भाई-बहन या पुत्र के विवाह अवसर पर भी धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति व सहयोग का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय अचानक आपके परिवार में विषमता की स्थिति बन सकती है। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी पड़ेगी।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान के लिए उत्तम योग बन रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे।

गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह हो सकता है। मार्च से जून तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा उसके बाद फिर से अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे। फरवरी के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 मई के बाद आर्थिक स्थिति को लेकर कुछ चिंताएं हो सकती हैं। द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु छठे स्थान का शनि शीघ्र ही स्वस्थ भी कर देगा। 24 जुलाई से स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार मिल सकता है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप शत्रुओं को पछाड़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होती रहेंगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। गुरु ग्रह के प्रभाव से आप सामाजिक कार्यों हेतु यात्राएं कर सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर व तन्त्र-मन्त्र के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- माता-पिता की सेवा करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 29 मार्च के बाद समय और उत्तम हो रहा है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण आप व्यवसाय में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आप कोई नया व्यापार भी शुरू कर सकते हैं और इसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे।

25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वालों को कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। परिवार में खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाऐंगे। 29 मार्च से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव से आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय अनावश्यक खर्च से आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः अभी से कुछ अतिरिक्त धन संचय करें। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिसमें आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीयस्थ राहु के कारण आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अतः अच्छा यही

होगा की अपनी अपने सहन-शक्ति को बढ़ाएं। अन्यथा आपके संबंध खराब हो सकते हैं। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। आपके बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

29 मार्च के बाद घरेलू वातावरण में कुछ अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। वर्षान्त में सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 29 मार्च से गुरु का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है। उस के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। आपको संतानोत्पति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पढ़ाई-लिखाई भी प्रभावित हो सकती है। संतान को लगातार अथक प्रयास करने के बाद ही सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे और अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

25 अगस्त के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं यकृतजनित बीमारी से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को छोड़कर अपने करियर में आगे रहेंगे। 29 मार्च से विद्यार्थियों के लिए समय और भी अच्छा हो रहा है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती ही रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

25 अगस्त के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। नवम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको धार्मिक यात्रा भी कराएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को दान देना, भूखे को खाना खिलाना और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। धर्म पत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 17 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन के लिए अच्छा नहीं है। आपके संबंधों में खटास उत्पन्न हो सकती है। किसी भी नए रिश्ते की शुरुआत के लिए भी यह समय शुभ नहीं होगा। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

23 सितंबर के बाद आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी ले कर आ रहा है। साल की शुरुआत में निवेश करना सही नहीं होगा क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु जल्दबाजी में गलत फैसला करा सकता है। राहु के गोचर के बाद शारीरिक बीमारी दूर करने में आपका व्यय होगा।

इस समय आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि आने वाले समय में आर्थिक उन्नति किस प्रकार की जाए। क्योंकि 1 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश नहीं करना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में द्वितीस्थ राहु के प्रभाव से परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद-विवाद सामने आ सकते है। संयुक्त परिवार एकल परिवार में बंट सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान व प्रेम प्रणय के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी के बाद वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा।

मामा एवं अन्य संबंधियों को अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह समय बढ़िया रहेगा।

मई के बाद अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखे। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। सितम्बर के बाद समय बहुत बढ़िया रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

राहु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। मई से अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा। गलत संगत उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है।

स्वास्थ्य

इस साल आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका असर आपके जीवन पर पड़ेगा। इसलिए आपके लिए यह बहुत ही जरूरी है कि आप साल की शुरुआत से ही इस ओर ध्यान देना शुरू कर दें। छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी, या सर्दी-जुखाम से आपको परेशानी हो सकती है।

01 मई के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिससे आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ्य जीवन के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें। खान-पान का विशेष ध्यान रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठ है। छठे स्थान का शनि इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करा सकता है।

मई के बाद आप किसी विवाद अथवा कलह में न पड़े और ध्यान अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें, क्योंकि सारे मुख्य ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अस्थिरता बनी रहेगी। जिस व्यक्ति को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय आपकी यात्राएं अधिक सुखद व मनोरंजन से परिपूर्ण रहेंगी।यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

1 मई के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। विदेशी संपर्कों से आपको लाभ प्राप्त होगा। वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्यांकि राहु एवं शनि का गोचर आपके लिए अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, दान पुण्य, पूजा-पाठ, मंत्र जाप, यज्ञ, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु लग्न भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं लग्न भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्तर के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप उन सपनों को पूरा करने के लिए जी-तोड़ मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रह गोचर अनुकूल होने के कारण समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बहुत आसान होगा। आप अपने अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

9 अगस्त के बाद राहु का गोचर व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहा है। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ और लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्यों के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। 18 फरवरी के बाद द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

8 अगस्त के बाद आर्थिक समृद्धि में अचानक कमी आएगी। द्वादश स्थान का राहु कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिससे आपको आर्थिक कमी आ सकती है। अतः इस समय कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें और किसी को उधार पैसा न दें।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। 18 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक

लगाव बढ़ेगा।

8 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह का संयुक्त प्रभाव आपकी माता के लिए अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव आपको अच्छा नहीं लगेगा। आप सामाजिक गतिबिधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

8 अगस्त के बाद बच्चों के साथ प्रेम व मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ से ही आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है, जिससे आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका असर आपके जीवन पर तो पड़ेगा ही। आप किसी बड़े रोग से आहत नहीं होंगे लकिन कुछ परेशानियों का सामना जरुर करना पड़ सकता है।

राहु का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है अतः खुद को बीमारिओं से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। अपने जीवन में सही तालमेल बिठाने के लिए आवश्यक है कि आप खान-पान, योग, ध्यान या सुबह-सवेरे व्यायाम नियमित रूप से करें। 15 अक्टूबर के बाद आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है।

8 अगस्त के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि अभी की मेहनत आने वाले समय में रंग लाएगी और आप अपने लक्ष्य में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 8 अगस्त के बाद यात्रा करते समय या बाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है। क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं सप्तम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सकारात्मक रहेगा। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती हैं।

उत्तरार्द्धमेंसमय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। व्यावसायिक जीवन में अचानक व्यवधान आ सकता है। मई के बाद कार्यस्थल पर किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों से सलाह अवश्य लें।

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का उत्तरार्द्धसामान्यरहेगा।द्वादशस्थ राहु के कारण संचित धन में वृद्धि नहीं होगी। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आजाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय के अंतराल में आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थगुरुके प्रभाव से इस वर्ष आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगाजिससे पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 5 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिय समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपकी धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपकेसम्बन्धबिगड़ सकते हैं। 12 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह भी हो सकता है।

संतान

वर्षारम्भ आपकी संतान के लिए ठीक-ठाक रहेगा। आपके बच्चे अपने विवेक व बुद्धि से अपने उन्नति के मार्ग बनाएंगे। 5 मार्च से आपके दूसरे बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा।

मई के बाद आपकी प्रथम संतान के लिए समय प्रभावित हो रहा है। उस समय उनकी दिनचर्या व रहन-सहन पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए नहीं तो उनकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वे अपने लक्ष्य से भी भटक सकते हैं।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

मई के बाद आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय के लिए आप अपने आप को ऊर्जा रहित महसूस करेंगे।लेकिनकिसी स्वास्थ्य संबंधित बड़ी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप तनाव व चिंता मुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 5 मार्च के बाद भाग्य का पूर्ण सहयोग मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

5 मार्च के बाद विदेश में व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। विदेशी भाषा सीखने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भयात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 5 मार्च के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।मई के बाद से विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मई के बाद तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वादश भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं चुतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारण व्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु एकादशस्थ राहु के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपमें से जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में हैं उन्हें वर्षान्त में सफलता मिलेगी। आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। द्वितीयस्थ मंगल पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका धन व्यय हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं, नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

18 मार्च के बाद चतुर्थ में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने के योग बन रहे हैं। एकादस्थ राहु के कारण अचानक आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। पारिवारिक या मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में ही पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

18 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण का के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भवनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपके

माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। समाज में आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चे के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि वे विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

अष्टम स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

18 मार्च से समय उत्तम हो रहा है। केन्द्र स्थान में शुभ ग्रह की स्थिति प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुदृढ़ रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो एकादश स्थान का राहु आपको शीघ्र ही अच्छा कर देगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 18 मार्च के बाद नौकरी में अवसर मिलेंगे। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये यह समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं, तो यह समय आपके लिए शुभ है। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे निकलना चाहते हैं, तो अपनी नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव आदि कार्यों में आप बढ़-चढ के भाग लेंगे। 18 मार्च के बाद आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है, इस उद्देश्य को मानेंगे। दूसरे को भी यही उपदेश देकर कार्य करने के लिए प्रणीत करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष प्रातः शनिवार को धारण करें। आपको शनि की शुभता प्राप्त होगी।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 28 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने ग्राहक को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपके अच्छे कार्य के लिए आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान-संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव करते रहेंगे। कुछ लोगों को अपने नौकरों से ज्यादा नुकसान हो सकता है और कुछ लोगों को कम, लेकिन नुकसान का होना तय है। इसलिए आपको अपने नौकरों पर ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। मित्र अथवा साझेदार विश्वासघात कर सकते हैं या फालतू की रणनीतियों के कारण भी हानि होने की संभावना है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। धनागम के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घर परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बना रहेगा। इन सबके पीछे आपका ही

महत्वपुर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए बहुत ही लाभप्रद रहने वाला है। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में चतुर्थ स्थान पर राहु केतु का प्रभाव होने से अचानक परिवार में किसी प्रकार की परेशानी आ सकती है। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 28 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो उनके लिए यह समय अति श्रेष्ठ है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग हो सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। शनि के कारण घटना-दुर्घटना का योग लगातार बना हुआ है अतः यात्रा के दौरान और वाहन चलाते समय बहुत सावधान रहें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत ही श्रेष्ठ रहने वाला है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी, जिससे आपकी शारीरिक व्याधियां दूर होंगी। आप अपने दैनिक कार्य में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

28 मार्च के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं, उनके लिए यह समय अनुकूल है।

13 जुलाई के बाद रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आप को विदेश यात्रा करा सकती है। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। परन्तु 28 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होंगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध और उत्तम रहेगा। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- रुद्राक्ष की माला धारण करें एवं अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर उसका पूजन करें।
- शनि चालीसा का पाठ करें एवं काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि नवम भाव में और सिंह राशि का राहु दशम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आपको ज्यादा-से-ज्यादा मुनाफा होगा। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। लॉटरी, सट्टा इत्यादि कार्यों में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। आपको अच्छी सफलता मिल सकती है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको अपेक्षाकृत ज्यादा मुनाफा होने वाला है, लेकिन 6 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। जो लोग रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है।

कार्यों में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। कुछ प्रतिद्वन्दी आपके कार्यों में रूकावट डालने की कोशिश करेंगे। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। जिसमें अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग भी मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। परन्तु 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है।

भूमि, भवनादि खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें नही धोखा मिल सकता है। भूमि व वाहन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोइ बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोइ वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवरिक स्थिति बहुत बढ़िया नहीं रहेगी। अतः जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो

सकता है। अप्रैल के बाद अचानक आपके परिवार में कुछ परेशानियां आ सकती हैं। ऐसी स्थिति में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए एवं बड़े विवेक से काम लेना चाहिए।

6 अप्रैल के बाद माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। पिता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह समय अच्छा नहीं है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह सामाजिक मान-सम्मान में कमी करेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो उसका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। जिससे उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाए रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योग करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा। हरी पत्तेदार सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। उपरोक्त सामान्य बातों का पालन कर आप निश्चित तौर पर स्वास्थ्य के धनी हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने का योग बन रहा है। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 6 अप्रैल के बाद समय काफी शुभ है।

षष्ठस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी इच्छित व्यक्तियों को

मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। जो व्यक्ति अपना व्यवसाय करना चाहते हैं उनको ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। 6 अप्रैल के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

पूरे वर्ष छोटी-मोटी यात्राओं के साथ व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी। ये सब यात्राएं आपके लिए लाभदायक रहेंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जिससे आप संतुष्ट नहीं रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। 6 अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना या गरीबों को खाना खिलाने में आपको संतुष्टि मिलेगी या कह सकते हैं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने घर में श्वेतार्क गणपति स्थापित कर उसका पूजन करें एवं गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ॐ गं गणपतये नमः।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु छठे भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। षष्ठस्थ गुरु के कारण आपके कार्य व्यवसाय में कुछ शत्रु व्यवधान डाल सकते हैं। अतः बिना किसी पर विश्वास किये अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे तरीके से चलाएं।

15 अप्रैल के बाद आमदनी के नए-नए स्रोत मिलने की उम्मीद है। कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा, जिससे आपको व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। साझेदारी में काम कर रहे लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। 27 अगस्त के बाद दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपकी व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी कार्य से आपको प्रसन्न करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। परिवार में बीमारी के कारण भी आपके खर्चे अधिक होंगे, जिससे मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। परन्तु 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति बेहद शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

धनागम में निरंतरता होने के कारण पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवश करेंगे। तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर राहु

की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाती है। आपके माता-पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको शारीरिक परेशानी हो सकती है।

15 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। जिससे खुशी का माहौल बना रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु 27 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि अच्छी नहीं होती। अतः उस समय के अंतराल में आपको पारिवारिक मामलों को लेकर बहुत ही सावधान रहना चाहिए।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्षारम्भ में संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा।

15 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय बहुत ही अच्छा रहेगा। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी। छठे स्थान का गुरु छोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा।

15 अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य धीरे धीरे अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी, जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। षष्ठस्थ गुरु पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अवश्य सफलता मिलेगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको अप्रैल के पहले ही नौकरी मिल सकती है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं। उसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी।

15 अप्रैल के बाद सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से संबंधित यात्रा होगी। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। नवम स्थान का शनि भगवान के प्रति भक्ति का भाव उत्पन्न करेगा। जिससे आप मन्त्र पाठ, साधन और परमात्मा की भक्ति करेंगे। 15 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर और भी अच्छा हो रहा है। उस समय आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

साल का प्रारम्भ आपके लिए बहुत ही उत्तम रहेगा। कारोबारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा, लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छे लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा। इस अवधि मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा।

16 सितम्बर से आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण कोई भी कार्य करेंगे तो उस में सफलता मिलेगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि भवन वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं तो उसके लिए भी समय अनुकूल नहीं है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं, जिससे आप कुछ परेशान भी होंगे। अतः इस समय के अंतराल में अपना आत्म शक्ति बढ़ाएं। 16 सितम्बर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी रूप से आर्थिक उन्नति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपको भाईयों का

सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

26 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। सितम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

वर्षारम्भ आपकी संतान के लिए उत्तम रहेगा। उसके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं। आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

अप्रैल के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अष्टम स्थान का गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकता है, जिससे उसकी पढ़ाई लिखाई प्रभावित हो सकती है। परन्तु चिंता की कोई बाद नहीं है क्योंकि 16 सितम्बर के बाद समय फिर से शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

अप्रैल के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति कम होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं, जिससे आप अचानक बीमार हो सकते हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होगी। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत ही शुभ है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगा। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त कर आगे निकलेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। नवम स्थान के राहु लम्बी लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। परन्तु सारी यात्राएं अचानक होंगी। पूर्व निर्धारित कोई भी यात्रा नहीं कर पाएंगे। छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

26 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति रुचि बढ़ेगी। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्य भी करेंगे। अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे। तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र व साधन के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटें और वीरवार का व्रत करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं उसका नित्य पूजन करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं दशम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं नवम में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में कुछ व्यवधान आ सकते हैं। लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी समाधान निकाल लेंगे। मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। दशमस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वालों की पदोन्नति होगी। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है।

अक्टूबर के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तथा उसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी में हैं तो अनुकूल स्थान पर स्थानानान्तरण होगा। नौकरी व कार्य व्यवसाय में आप अच्छी उन्नति करेंगे। समय आपके लिए अनुकूल है फिर भी आपको सावधान रहना चाहिए क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अतः अपनी गुप्त बात सब किसी के साथ शेयर न करें तथा किसी पर अत्यधिक विश्वास भी न करें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। वर्ष के प्रारम्भ में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश सम्बन्धी व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें।

11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए शुभता का संकेत दे रहा है। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें क्योंकि पूरे वर्ष राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल रहेगा। अक्टूबर के बाद एक साथ शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में आपका धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। माता-पिता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे। उनके साथ झगड़ा होने की संभावना है। अतः थोड़ा सावधान रहें।

मई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। अक्टूबर के बाद आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माताजी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। भाई बहनों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। अतः उनको अच्छी सफलता मिलगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। अष्टमस्थ गुरु संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

11 मई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु एवं राहु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान रहेंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी होगी। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

11 मई से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे भी वृद्धि होगी जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह योगा व व्यायायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा। क्योंकि पूरे वर्ष राहु अष्टम स्थान में गोचर करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु शनि एवं राहु संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। 11 मई के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है।

इन यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपका मन कम ही लगेगा। 11 मई से गुरु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रवाहित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं। ऊँ गं गणपतये नमः मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

एकादश स्थान का शनि कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ है। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। 5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा आप सारे प्रतिद्वन्दियों को पीछे छोड़कर आगे निकल जाएंगे। यदि आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए और भी शुभ हो रहा है। राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। कानून से जुड़े लोगों, वकील, पुलिस आदि को अच्छा लाभ मिलेगा। आपसे उच्चाधिकारी व वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। भूमि, वाहन से संबंधित कार्य करने वाले लोगों को वांछित सफलता मिलेगी। 4 नवम्बर के बाद आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको उम्मीद से ज्यादा सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से धनागम के स्रोत बढ़ेंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की भी प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। निवेश के लिए यह समय बहुत ही शुभ है फिर भी यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक उन्नति के लिए और भी श्रेष्ठ हो रहा है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को विशेष लाभ मिलेगा। आपका व्यापार खूब चमकेगा। अकस्मात् धन मिलने का योग बन रहा है। संचित धन में वृद्धि होगी जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 4 नवम्बर के बाद शेयर बाजार, जुआ, सट्टा व लॉटरी इत्यादि से धन प्राप्ति का प्रबल योग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का

माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसमें सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। आपके माता पिता के लिए समय बहुत ही शुभ है। आपके अंदर कर्तव्यपरायणता का भाव भी विद्यामान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से आप परिवार की सुख शान्ति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे। आपके मन में माता पिता के प्रति विशेष स्नेह का भाव होगा। 5 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है सप्तम स्थान का राहु धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकता है जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। परन्तु जून के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद समय पूरा साल अनुकूल बना रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में एकादशस्थ शनि के प्रभाव से मान सम्मान व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप अपनी बुद्धिमत्ता एवं विद्वता से किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। जिससे आप अत्यधिक संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। 5 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। यह समय आपके बच्चों के लिए शुभ है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 13 जुलाई के बाद कुछ परेशानियां आ सकती हैं। लेकिन उसका हल आप निकाल लेंगे। 4 नवम्बर से संतान इच्छित व्यक्तियों को पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। 3 मार्च के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। उस समय अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य बहुत उत्तम नहीं रहेगा। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना है। लग्न स्थान राहु का प्रभाव होने के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। यदि आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी तथा करियर में अच्छी उन्नति करेंगे। 3 मार्च से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत ही उत्तम हो रहा है। शिक्षा

के क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

2 जून से अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 4 नवम्बर के बाद उन्नति के योग बन रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु लम्बी यात्राओं का योग कम ही बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। 3 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने घर में देशी घी का दीपक जलाएं तथा दुर्गा जी के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन चींटियों एवं चिड़ियों को दाना डालें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार का व्रत करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। नए उद्यमों या व्यवसायों में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। इस अवधि में वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। कुछ प्रतिस्पर्धी सामने आएंगे लेकिन उनसे आपको विशेष फर्क नहीं पड़ेगा। अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण विपरीत परिस्थितियों में भी आपकी मति भ्रमित नहीं होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। सत्ताधारी व्यक्तियों से संबंध मधुर होंगे और आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। योजनापूर्ण की हुई यात्रा से असीमित लाभ होगा। सप्तम स्थान का राहु अचानक कोई समस्या उत्पन्न कर सकता है, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। आमदनी के स्रोतों में वृद्धि होगी। फलस्वरूप धन संचय करने में सफलता मिलेगी। किसी सरकारी आदमी के सहयोग से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। कोई मुनाफे का बडा सौदा हाथ लग सकता है। वर्ष के आरम्भ में अचल सम्पत्ति मिलने का योग बन रहा हैं। किसी लॉटरी या बीमा के माध्यम से धन लाभ होने की उम्मीद है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आमदनी के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आपके पास कोई पुराना कर्ज है तो आपको उससे छुटकारा मिल सकता है। विदेश के माध्यम से या किसी दूर की यात्रा के माध्यम से धनार्जन होगा। यदि आपका पैसा कहीं रुका हुआ है तो थोड़े से प्रयास से उसकी प्राप्ति हो सकती है। जमीन जायदाद खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें तथा कागजी मामलों में किसी पर विश्वास न करें।

घर-परिवार, समाज

परिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। परिवार में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा तथा सुख और शान्ति का वातावरण बनेगा। भाई-बहनों की उन्नति तथा आपके उनके साथ सम्बंध और मधुर होंगे। दूर रहने वाले पारिवारिक सदस्य का घर आगमन अथवा उसके साथ सम्बंधों में सुधार होने से मन प्रसन्न होगा। सभी सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति

बहुत ही अच्छा रहेगा। यदि कोई अदालती केस चल रहा होगा तो उससे छुटकारा मिलेगा।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। आपके व्यक्तित्व आकर्षक होगा। मान सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 6 अप्रैल के बाद बच्चों को सफलता लिए अधिक प्रयास करना पड़ेगा। संतान का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, परन्तु जून के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़कर कार्य करेंगे। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत को सुधारने वाला रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसमजनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। यदि आप किसी पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो वर्षारम्भ में उससे भी छुटकारा मिल जाएगी। 6 अप्रैल से 28 जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद फिर से शुभ हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप मन को एकाग्र करने के लिए योग क्रियाएं भी कर सकते हैं। इससे आपमें उत्साह का संचार होगा और आप अपने स्वास्थ्य को अच्छा बनाए रखने में कामयाब रहेंगे। लेकिन सप्तमस्थ राहु की लग्न पर दृष्टि बीच बीच में छोटी मोटी बीमारियां व मानसिक अशांति दे सकती है। अपने माता पिता के स्वास्थ्य का ख्याल रखें। वर्षान्त में आपको नेत्र संबंधित पीड़ा हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण वांछित उन्नति मिलेगी। डॉक्टर, इंजीनियर व राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिलेगी। मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। आपको महत्वपूर्ण व गोपनीय कार्य करने का मौका मिल सकता है। व्यवसाय व नौकरी के सिलसिले में देश विदेश की यात्रा के योग निर्मित हो रहे हैं। आप मनचाहे स्थान पर तबादला कराने में सफल होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी। वर्षान्त में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में आप एक कर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे अर्थात् कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह साम मन्दिर जाना या पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- तुला दान करे (अपने वजन के बराबर साबुत अन्न का दान करें।)
- अपने पूजा घर में देशी घी का दीपक जलाएं तथा लक्ष्मी जी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करें तथा सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक कार्यों के लिए यह वर्ष शुभ है। व्यापार में उन्नति तथा कार्यों में सफलता मिलती रहेगी। समय-समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होते हुए भी आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे। 6 मई के बाद आपको किसी बड़ी कम्पनी के साथ मिलने या उसके साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। आप दैनिक कार्यों में स्फूर्तिवान बने रहेंगे और कार्यक्षेत्र में अच्छा करते रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होगी।

26 सितम्बर के बाद व्यापार में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। यदि आप कुछ नया कार्य करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। कार्यस्थल पर अपने परिजनों को सम्मिलित न करें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाएं रखें। आप अपने परिश्रम के बल पर प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे वांछित बचत करने में सफल रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पारिवारिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 6 मई के बाद अचानक धन लाभ होने के साथ-साथ रुके हुए पैसे की भी प्राप्ति होगी यदि किसी भी व्यापार में धन निवेश करेंगे तो उसमें लाभ मिलेगा।

आपके अन्दर परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे धनार्जन में सहायता मिलेगी। सट्टा जुआ जैसे अनैतिक कार्यों से बचें नहीं तो आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है। 26 सितम्बर के बाद निवेश के मामले में जल्दबाजी न करें तथा बहुत सोच विचार कर ही निर्णय लें क्योंकि यह समय आर्थिक स्थिति के लिये शुभ नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक माहौल के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। मान सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित

सम्मान प्रदान करेंगे।

आपके भाईयों की उन्नति होगी। मातुल पक्ष के लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे तथा सुख व सम्पन्नता का भाव बना रहेगा। माता पिता से संबंध मधुर रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद पारिवारिक माहौल किंचित प्रतिकूल होगा परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी अनुकूल बना लेंगे। षष्ठस्थ राहु के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा सामाजिक लोग भी आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

इस वर्ष आपके बच्चों को उन्नति करने के लिए अधिक प्रयास करना पड़ेगा। प्रथम संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो 6 मई के बाद विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

मई से जुलाई तक का समय बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। लेकिन उसके बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस अवधि में बच्चों पर ध्यान देना श्रेष्ठ होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी रह सकती है। आलस्य, मानसिक कष्ट व थकावट की स्थिति बनी रहेगी। 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको सुख, शान्ति व शारीरिक आरोग्या प्रदान करेगा तथा आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

26 सितम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय अपने सेहत का ध्यान रखें। मौसमजनित बीमारियों से परेशान होंगे तथा आपका मोटापा बढ़ सकता है। खान पान पर विशेष ध्यान दें। घी, मख्खन व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्ति हेतु आापको अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील बने रहें। 6 मई के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस अवधि में आपको वांछित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी।

तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनचाहे स्थान पर तबादला हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि आपके दैनिक पूजा पाठ को प्रभावित कर सकती है, परन्तु आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके कारण आप अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे और कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे। वर्षान्त में दान पुण्य अधिक करेंगे तथा गरीब और मजदूरों की सहायता खूब करेंगे। तन्त्र-मन्त्र के प्रति भी आपका विश्वास बढ़ेगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन सरसों का तेल दान करें तथा संन्ध्या के समय पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं छटे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं द्वादश भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। व्यवसाय में आप निवेश अधिक करेंगे परंतु लाभ कम होगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कार्य व्यवसाय में रुकावटें आ सकती है। परिश्रम के बराबर फल नहीं मिलेगा। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। आपको अपने जन्म स्थान से दूर सफलता मिलेगी। यदि आप विदेश में व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं तो वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ है। नौकरी करने वालों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

27 अगस्त के बाद आपको अधिक परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। यदि कहीं आपके पैसे फंसे हुए हैं तो मिल जाएंगे। व्यापार में विस्तार की संभावन बन रही है। इस अवधि में आप किसी के साथ मित्रता में कोई कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। आपको अच्छी सफलता मिलेगी तथा आपको साझेदार का पूर्ण सहयोग मिलेगा। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएं। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपको आर्थिक रूप से सतर्क रहने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिशि करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें यदि कोई आपसे उधार मांग रहा हो तो बेहद ही सावधान रहें।

संपत्ति संबंधी कार्यों में निवेश करते हुए सावधानी बरतें। जहां तक हो सके संपत्ति के दस्तावेज भली भांति जांच लें। किसी भी ऐसे कार्य में धन का निवेश न करें जिसमें जोखिम हो। आर्थिक चिंताएं बनी रहेंगी लेकिन जरूरत पड़ने पर थोड़े विलंब से धन का आगमन होता रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं है। व्यावसायिक व्यस्तताओं के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः आत्मविश्वास बनाए रखें।

आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपका मतभेद हो सकता है। पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। वर्ष के उत्तरार्द्ध में पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

संतान

वर्ष प्रारम्भ संतान के लिए शुभ है। नवविवाहितों को सन्तान के जन्म का शुभ समाचार प्राप्त होगा। आपके बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे तथा वे सफलता के मार्ग पर सबसे आगे रहेंगे, परन्तु 10 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो सकते हैं। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं पंचमस्थ राहु के कारण आपका गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा। मानसिक रूप से आप संतुष्ट रहेंगे। लग्नस्थ गुरु के कारण मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपकी कार्य क्षमताओं का विकास होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

जून में गुरु ग्रह का राशि परिवर्तन आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन करें तथा मानसिक तनाव से स्वयं को दूर रखने के लिए योग, ध्यान, व्यायाम आदि नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके करियर के लिए पूरी तरह से अनुकूल है। आप किसी नये पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाह रहे हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को वांछित सफलता मिलेगी तथा आप अपने लक्ष्य में सफल होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें नहीं तो शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु विदेश गमन की प्रबल संभावना हैं। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। तीर्थ यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

उत्तरार्द्ध में नौकरीपेशा लोगों के लिए परिवर्तन का योग बना हुआ है। यह तबादला इनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। व्यापारिक व्यक्तियों की विदेश यात्रा होगी और उस यात्रा से आर्थिक लाभ का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बनी रहेगी। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी पत्नी का समय धर्म संबंधी कार्यों में अधिक व्यतीत होगा। जैसे दान, व्रत, जप, पूजन व तीर्थाटन आदि।

गुप्त विद्याओं व पराविद्याओं में रुचि जागृत होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में योग, ध्यान, पूजा पाठ, प्राणायाम आदि की ओर रुझान होगा। ईष्ट देव व गुरु कृपा प्राप्त होगी।

- शनिवार के दिन छाया दान करें। (कांसे के पात्र में सरसों का तेल डालें तथा उसमें अपनी परछाई देख कर उस बर्तन का दान करें।)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रतिदिन चिड़ियों को दाना डालें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में शत्रुओं द्वारा रुकावट डाली जा सकती है अतः बिना किसी पर विश्वास किये आप अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वालों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। आपके बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे तथा वे समय समय पर आपकी सहायता करते रहेंगे।

30 जुलाई के बाद आपकी नेतृत्व क्षमता उभर कर सामने आएगी। कठिन परिश्रम आपको सफलता दिलाएगा। साहस बाधाओं को दूर करने में आपकी मदद करेगा और यह आपकी किस्मत को भी चमकाएगा। मन की शांति के लिए प्रतिस्पर्धा से जुड़ी चिंताओं को अपने पास न भटकने दें। आपके मस्तिष्क में भविष्य के लिए योजनाएँ रुप लेंगी। इन योजनाओं से आपको भविष्य में अच्छा लाभ होगा ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं सुख प्राप्त हो सकता है। पैतृक सम्पत्ति या ससुराल पक्ष से धन मिलने के योग बन रहे हैं। वर्षान्त सुखद नहीं है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में महिला मित्र के ऊपर खर्चा अधिक होगा जिससे आपका बजट गड़बड़ा सकता है। धन संबंधी मामलों में आपके खर्चे कुछ बढ़ सकते हैं। घरेलू खर्चों की पूर्ति के लिए आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। अपने शौक पूरे करने के लिए भी आप कुछ ज्यादा खर्चा कर सकते हैं। अपने खर्चों को नियंत्रित करने की कोशिश करें। धनागमन कुछ मिला-जुला रहेगा अथवा यह भी संभावना बनती है कि धन आता तो रहेगा परन्तु द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके पास टिक नहीं पाएगा। बहुत सी जिम्मेदारियों को निभाने में आपके धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या बच्चे के जन्म के माध्यम से हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा जिससे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

30 जुलाई के बाद हर कदम पर जीवनसाथी का साथ मिलेगा। घर की खुशियां ही खुशियां होंगी। माता-पिताजी का प्यार और आशीर्वाद पूरे वर्ष मिलता रहेगा। घर में कोई शुभ कार्य होगा तथा उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। बच्चों को लेकर समस्या का सामना करना पड़ सकता है। 19 सितम्बर के बाद अचानक आपकी माताजी की सेहत खराब हो सकती है अतः उनकी सेहत पर विशेष ध्यान देना दें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ है।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप संतान को लेकर अत्यधिक चिंतित रहेंगे। पंचम का राहु संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। परंतु चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। गर्भवती महिलाओ को सावधानी की आवश्यकता है।

30 जुलाई के बाद दूसरी संतान के लिए समय अनुकूल हो रहा है। उसके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में वे अच्छी प्रगति करेंगे तथा उसके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रथम भाग अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो आपको परहेज की ज्यादा जरूरत है। आंख, पेट, पाचन और नसों से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। ईलाज के लिए आयुर्वेदिक दवा का सेवन करना फायदेमन्द हो सकता है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमरियों से बचा जा सकता है।

30 जुलाई के बाद का समय सेहत के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है। लग्न स्थान का गुरु आपकी सेहत को सुधारने वाला रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमताओं में वृद्धि होगी। इस अवधि में आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा, जिससे आपकी रोगप्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी जो आपको शारीरिक आरोग्यता तथा मानसिक संतुष्टि प्रदान करेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रथम भाग उत्तम रहेगा। छठे स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी

व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ होने की उम्मीद और बढ़ जाएगी।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा प्रभावित कर सकता है तथा आपके करियर में एकाग्रता नहीं रहेगी जिससे आपका मन अशान्त रहा सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। सामुद्रिक व व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है।

30 जुलाई के बाद आप छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। धार्मिक यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। 19 सितम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में राहु के पंचम भाव में गोचर के चलते आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि अधिक नहीं रहेगी। घर में साफ-सफाई, पूजा-पाठ व पवित्रता का माहौल बनाने व माता की सेवा करने से राहु के अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। ऐसा करने से कार्यों में आने वाले व्यवधानों से तथा संतान संबंधी चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बढ़ेगा। उस अवधि में आप धार्मिक कार्य कर, गरीबों को दान दें तथा तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष को जल दें एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- अपनी दिनचर्या सुधारें व तामसिक वस्तुओं का सेवन न करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने गले में दुर्गा बीसा यन्त्र का कवच धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में कुछ अच्छा करेंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत सृजित होंगे। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। इस समय के अंतराल में आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

चतुर्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान व परेशानियां आने की संभावन बन रही है। परन्तु आप अपने विवेक से उन सभी परेशानियों का हल निकाल लेंगे तथा अपने प्रतिद्वंदियों को करारा जबाव देंगे। नौकरी करने वाले जातकों के लिए यह साल अच्छा नहीं है क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अचानक किसी प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण करा सकता है।

धन संपत्ति

इस वर्ष व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। 16 फरवरी के बाद तृतीय स्थान का गुरु आपके भाईयों से लाभ प्राप्त करा सकता है। आर्थिक प्रगति के लिए आप कोई नई योजना सोच सकते हैं। कोई पुराना उधार दिया धन अचानक वापिस मिलने की भी संभावना है। आमदनी हेतु आपके द्वारा किये गए प्रयास रंग ला सकते हैं। परिवार में किसी सदस्य की सेहत खराब हो सकती है जिसके इलाज में आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। इस वर्ष अचानक कोई बड़ा निर्णय न लें। योजनाबद्ध तरीके से ही कोई कार्य सम्पन्न करें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर निवेश के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में भावनात्मक लगाव की कमी बनी रहेगी, जिससे परिवार में वैमनस्य व वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। माता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। अतः उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होती रहेगी। 16 फरवरी के बाद आपके भाईयों के लिए समय शुभ हो रहा है उनकी उन्नति होगी। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे।

जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सामाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। अतः आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके बच्चों की बौद्धिक शक्ति काफी अच्छी रहेगी।

यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य के मामले में आपको थोड़ा सा संभलकर चलने की जरुरत है। कार्यों की अधिकता की वजह से आप शारीरिक तौर पर कमजोरी व थकान अनुभव करेंगे। मौसम के बदलाव से पैदा होने वाली बीमारियों के प्रति सतर्क रहें। मोटापे से पीड़ित लोगों को मांसपेशियों में दर्द की शिकायत रह सकती है। छोटी-छोटी बीमारियों को नजरअंदाज करने की भूल न करें। जो लोग लंबे समय से बीमार हैं, उन्हें अपनी सेहत का खास ख्याल रखना होगा नहीं तो स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है।

पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। आपको अपने मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का अधिक सेवन करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप अपने करियर में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो इस वर्ष अथक परिश्रम व संघर्षसात्मक परिस्थितियों में सफलता प्राप्त करेंगे। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें।

तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने कार्य क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्राप्त करेंगे एवं अपनी संस्था में सम्मान प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

चतुर्थ स्थान का राहु प्रतिकूल स्थान पर तबादला करा सकता है, जिससे आपका मन विचलित रह सकता है। 16 फरवरी के बाद धार्मिक यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

इस वर्ष आपको अपने काम से संबंधित प्रवास पर जाना पड़ सकता है। जो व्यक्ति विदेश में रहकर कार्य करने की योजना बना रहे हैं इस अवधि में उनकी यह योजना कार्यान्वित हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ शनि के कारण इस वर्ष आपके धार्मिक कार्यों में अधिक व्यवधान आने वाला है तथा दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगी। आप चाहकर भी कोई पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। आलस्य की भावना बनी रहेगी तथा आपकी यही आलस्यता धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेगी। 16 फरवरी के बाद आपकी गुप्त विद्याओं, पराविद्याओं व गुप्त ज्ञानार्जन में रुचि जागृत होगी। आपकी पत्नी का समय धर्म संबंधी कार्यों जैसे दान, व्रत, जप, पूजन व तीर्थाटन में अधिक व्यतीत होगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डाल कर खिलाएं।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले के धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह के गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में परिवर्तन की संभावना बन रही है। नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है। जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय, नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

पूरे वर्ष आप शनि के प्रभाव में रहेंगे। इसलिए कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। आपकी साझेदारी किसी स्त्री से है तो उसमें भी दरार आ सकती है। इस वर्ष आपको व्यापार में पैसों के लेन-देन करने समय सतर्क रहना होगा क्योंकि लग्न स्थान का शनि नुकसान या हानि करा सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा लेकिन निवेश में लिया गया जोखिम आर्थिक नुकसान दे सकता है। धनेश गुरु तृतीय भाव में स्थित है जो किसी सामाजिक कार्य में धन व्यय कराएगा।

निवेश के मामले में सावधानी रखना जरूरी होगा। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच-विचार कर निर्णय लें। संपत्ति के क्रय विक्रय संबंधी कार्यों में वर्ष का उत्तरार्द्ध सफलता लेकर आ रहा है, लेकिन अंतिम निर्णय सोच समझ कर लें।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपके मान सम्मान में लगातार वृद्धि होगी। आप सामाजिक गतिविधियों में और अधिक सक्रिय होंगे। तृतीय स्थान में गुरु की स्थिति सामाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। समाजिक कल्याण के लिए आप कोई संस्था व एन जी ओ की स्थापना कर सकते हैं। परन्तु पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु घरेलु वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में कुछ लोगों के साथ वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। इस वर्ष आपकी पारिवारिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। परिजनों के साथ आप आनन्दित रहेंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में

सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। परन्तु मार्च से जून तक का समय किंचित प्रभावित रहने वाला है। इस अवधि में संतान के स्वास्थ्य व कार्य संबंधी रुकावटों के लिए थोड़े चिंतित रहेंगे। जहां तक हो सके संतान से तक वितर्क करने से बचें। वरना वैचारिक मतभेद व रिश्तों में कड़वाहट आ सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध संतान के लिए उत्तम रहने वाला है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। आपकी संतान की विशेष व्यावसायिक उन्नति भी होगी तथा वे अपने प्रतिद्वंदियों से बेहतर कर सकने में सफल होंगे।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अतः स्वयं को संतुलित एवं नियमित रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह समय उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहने वाला है। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए क्योंकि शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है क्योंकि यह आपके लिए धोखा हो सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। नौकरी करने वालों के लिए स्थानांतरण का योग बन रहा है जो कि उनके लिए प्रतिकूल होगा। यह स्थानांतरण लंबे समय के लिए हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तृतीयस्थ राहु के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी हो सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा

भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण आपके सभी पूजा पाठ में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि होने के कारण आपकी धार्मिक यात्रा होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपने घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे, जिसमें आपके घर परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

- शिवजी की उपासना करें एवं महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- माता-पिता सहित बड़े बुजुर्गों की सेवा करें तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(29/10/2014 - 29/10/2030)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 29/10/2014 को आरम्भ और 29/10/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है। दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरु करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(11/05/2025 - 27/02/2026)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 29/10/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 11/05/2025 को प्रारंभ होकर 27/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म और तंत्र-मंत्र में रुचि होगी। धन के खर्च में सूझ-बूझ का परिचय देंगे; कर्ज़ से बचेंगे। विदेश यात्रा या विदेश में निवास संभव है। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। विरोधियों और स्पर्धियों पर विजय होगी। आप में प्रशासनिक क्षमता उत्तम है। अदालत में विजय होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे; उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता की अध्यात्म में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, धनलाभ का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है; बोनस आदि से अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारों या अनुबंधों से लाभ होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को कर्मचारियों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों और पैरों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- गुरु - चन्द्र
(27/02/2026 - 29/06/2027)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 29/10/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 27/02/2026 को आरंभ होकर 29/06/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी लाभकारी दूरस्थ स्थान की यात्रा होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। धनागम सरलता से होगा। संतान से सुख मिलेगा। बहुत से मित्र होंगे। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर होंगे, वे धनी बनेंगे। आपकी कला और खेलकूद में रुचि होगी। धर्म और अध्यात्म में दिलचस्पी हो सकती है। जनता की भलाई के कार्य करेंगे।

आपके जीवनसाथी को सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है।

आपके पिता के स्पर्धियों की संख्या में कमी आएगी, वे कला में रुचि लेंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं, अचानक लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के

लिए सौभाग्य, माता-पिता से लाभ, आत्म-विश्वास में वृद्धि, सुख-सुविधाओं और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधा संपन्न होगा। परामर्शदाताओं के लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। कानों और शरीर के निचले अंगों की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरवजी की उपासना दूध से करें।

अंर्तदशा :- गुरु - मंगल
(29/06/2027 - 04/06/2028)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 29/10/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/06/2027 को प्रारंभ होकर वद 04/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाएं प्रबल होंगी जिन्हें आप साकार कर सकेंगे। पिता से संबंध उत्तम होंगे। लंबी दूरी की यात्राएं हो सकती हैं। अध्यात्म और दर्शन में रुचि ले सकते हैं। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं या उससे आय बढ़ेगी; वाहन सुख उत्तम होगा। शिक्षा में सफलता मिलेगी। माता से संबंध मधुर होंगे। सब कार्य वांछित ढंग से पूर्ण होंगे।

आपके जीवनसाथी की कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। पिता सफल ओर आत्मविश्वास से पूर्ण होंगे। माता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, धनलाभ, प्रभावशाली मित्रों का संकेत है।

आपकी संतान को शिक्षा में सफलता मिलेगी; विवेकशक्ति उत्तम होगी, विभिन्न गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, उच्चपद मिल सकता है, खुश रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पहले किये निवेश से लाभ होगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ऊँ अं अंगारकाय नमः

महादशा :- शनि
(29/10/2030 - 28/10/2049)

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपके जीवन में यह 29/10/2030 को आरम्भ और 28/10/2049 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि दशम भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है, किन्तु अत्यन्त शक्तिशाली है और शुभ-अशुभ दोनों का कार्य करता है। इसे बाधक ग्रह कहा जाता है जो जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। फल की प्राप्ति में यह विलम्ब करता है, पर उससे वंचित नहीं करता । यह जातक को लक्ष्य की पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 12 वें, 4 थे तथा 7 वें भाव पर है और यह इन भावों के कार्य को प्रभावित कर रहा है। दशम भाव, जिसमें यह स्थित है, प्रतिष्ठा, सामाजिक सम्मान, सफलता, आदर, ख्याति, उत्तरदायित्व, सांसारिक गतिविधि, पदोन्नति, प्रगति, उच्च पद, सरकार से सम्मान का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

इस महादशा के दौरान आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई गम्भीर समस्या नहीं होगी,

न ही कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना होगी और आप सामान्यतया कार्यों को पूरा करने की स्थिति में होंगे। किन्तु, आपको कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने के प्रति सतर्क तथा सावधान रहने की सलाह दी जाती है क्योंकि नीच का शनि मस्तिष्क को प्रभावित करता है।

धन सम्पत्ति :

दशम अर्थात् व्यवसाय व जीविका के भाव में स्थित शनि की 12वें भाव पर दृष्टि है। इसलिए आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के प्रति सतर्क रहना चाहिए क्योंकि कुछ हानि की सम्भावना है।

व्यवसाय :

शनि दशम भाव में स्थित है और उसे शक्ति प्रदान कर रहा है। आपको आधिकारिक पद की प्राप्ति की सम्भावना है। इस दशा के दौरान आप शासक हो सकते हैं-अथवा आपको मन्त्री पद की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने प्रभुत्व तथा सेवा का प्रदर्शन करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

दशम भाव से शनि की 12वें, 4थे तथा 7वें भावों अर्थात् शयन स्थान, 'शुभस्थान' और जीवनसाथी के भावों पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको एक सुन्दर तथा सहायक जीवन साथी की प्राप्ति होगी, किन्तु, जीवन में विवाद हमेशा होते रहेंगे जिससे आपको मानसिक अशान्ति तथा निराशा बनी रहेगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शनि की दशा के दौरान आप निराश रहेंगे, आप में नकारात्मक भावना उत्पन्न होगी और आपकी शिक्षा में बाधाएं आएंगी।

अंर्तदशा :- शनि - शनि
(29/10/2030 - 31/10/2033)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/10/2030 को प्रारंभ होकर 28/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 29/10/2030 को प्रारंभ होकर 31/10/2033 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शनि अशुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 12, 4, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। आप ईमानदार और कुशल प्रशासक होंगे। गरीबों की मदद करेंगे। तीर्थों की यात्रा करेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें।

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।

अंर्तदशा :- शनि - बुध
(31/10/2033 - 11/07/2036)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 29/10/2030 को प्रारंभ होकर 28/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 31/10/2033 को प्रारंभ होकर 11/07/2036 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दार्शनिक स्वभाव के हो सकते हैं, चिंतित रह सकते हैं। विषय-वासनाओं में रुचि हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - केतु
(11/07/2036 - 19/08/2037)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/10/2030 को प्रारंभ होकर 28/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 11/07/2036 को प्रारंभ होकर 19/08/2037 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको अच्छे अवसर मिल सकते हैं, पर कुछ विचित्र अनुभव भी हो सकते हैं। कुल मिला कर यह अंतर्दशा अशुभ ही रहेगी। अचल संपत्ति की हानि हो सकती है ; खुशियों में कमी आ सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(19/08/2037 - 19/10/2040)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/10/2030 को प्रारंभ होकर 28/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 19/08/2037 को प्रारंभ होकर 19/10/2040 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुख-सुविधाओं के लिए व्यग्र रहेंगे। इस संदर्भ में असफलता मिल सकती है, जिससे दुखी हो सकते हैं। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से मित्रता या अवैध संबंध हो सकते हैं जिससे पारिवारिक जीवन में बाधाएं आ सकती हैं या जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है। बदनामी से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(19/10/2040 - 01/10/2041)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/10/2030 को प्रारंभ होकर 28/10/2049 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 19/10/2040 को प्रारंभ होकर 01/10/2041 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उपेक्षित महसूस कर सकते हैं। कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। संतान के कारण भी कठिनाइयां आ सकती हैं। निराश हो सकते हैं। किसी गैरकानूनी कार्य से संबद्ध हो सकते हैं जिससे नेत्रों की शक्ति क्षीण हो सकती है। यह अंतर्दशा शुभ नहीं रहेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(01/10/2041 - 02/05/2043)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 29/10/2030 को प्रारंभ होकर 28/10/2049 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। चंद्रमा मन और माता का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बाधाओं के बावजूद प्रत्येक कार्य में सफल रहेंगे। दान-धर्म के कार्यों से संबद्ध रहेंगे, समाज में सम्मान मिलेगा। लोकप्रियता बढ़ेगी, धनागम उत्तम होगा। विद्वानों से संपर्क रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(02/05/2043 - 10/06/2044)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 29/10/2030 को प्रारंभ होकर 28/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 02/05/2043 को प्रारंभ होकर 10/06/2044 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 12, 3, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अपने क्षेत्र में नेता या अग्रणी बन सकते हैं। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। क्रोध और अभिमान से बचें, अन्यथा भाई-बहनों और पिता से संबंध बिगड़ सकते हैं।

प्रसिद्ध होने के बावजूद पिता के आज्ञाकारी नहीं हो सकते हैं। इस कारण पिता को कष्ट हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें, हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- शनि - राहु
(10/06/2044 - 17/04/2047)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/10/2030 को प्रारंभ होकर 28/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 10/06/2044 को प्रारंभ होकर 17/04/2047 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी और सफल होंगे। विषय-वासना में अधिक रुचि हो सकती है। खूब यात्राएं कर सकते हैं, जिसके कारण भौतिकता में रुचि अधिक होगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

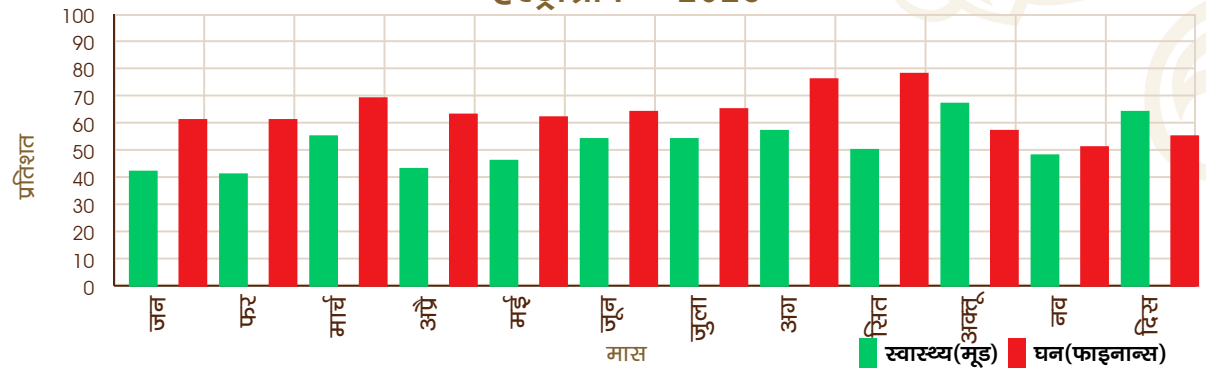

एस्ट्रोग्राफ - 2027

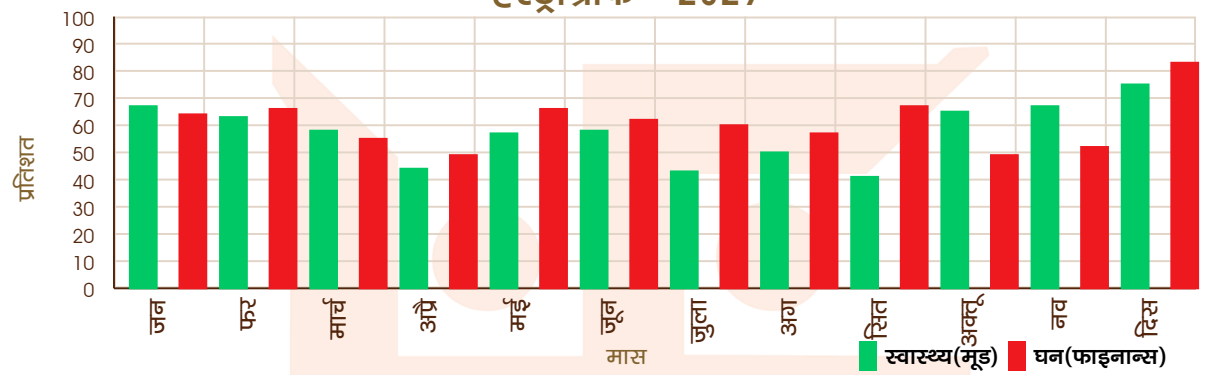

एस्ट्रोग्राफ - 2028

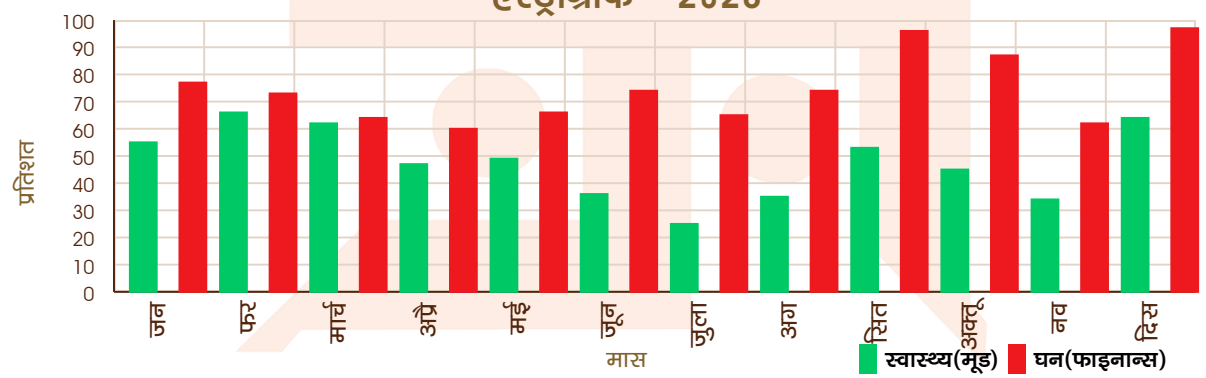

एस्ट्रोग्राफ - 2029

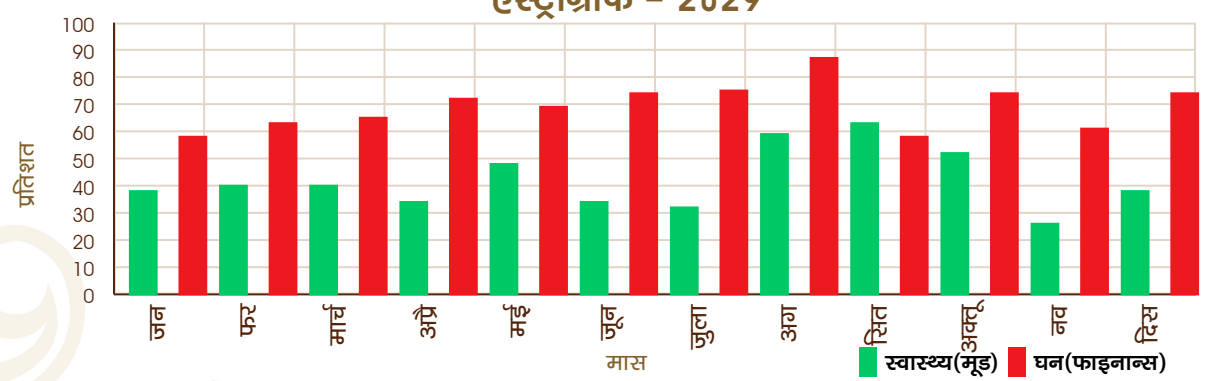

एस्ट्रोग्राफ - 2030

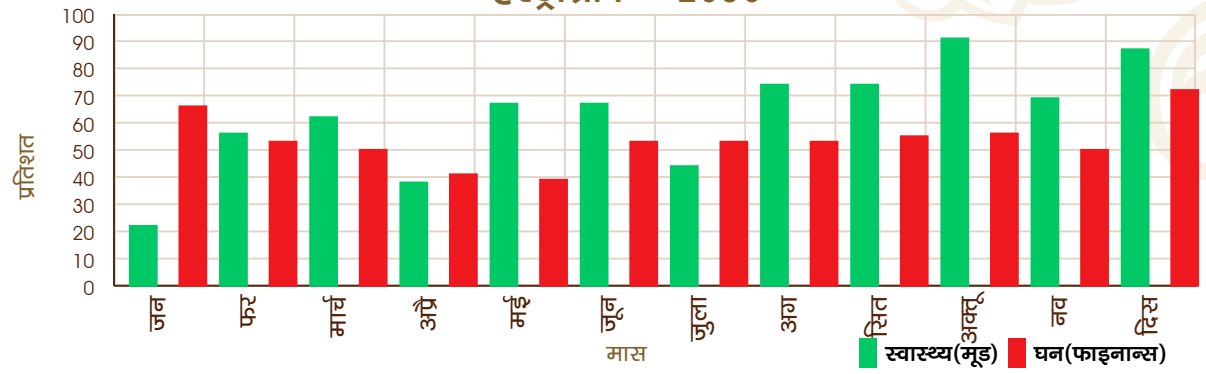

एस्ट्रोग्राफ - 2031

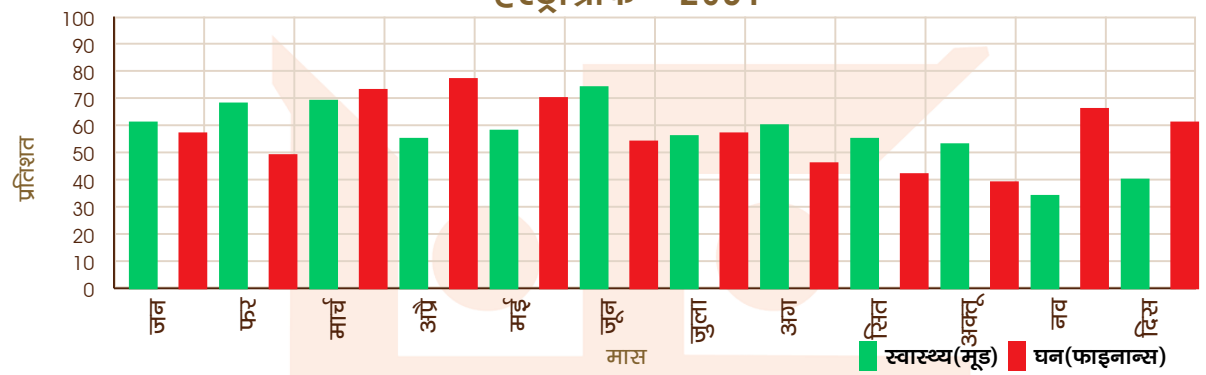

एस्ट्रोग्राफ - 2032

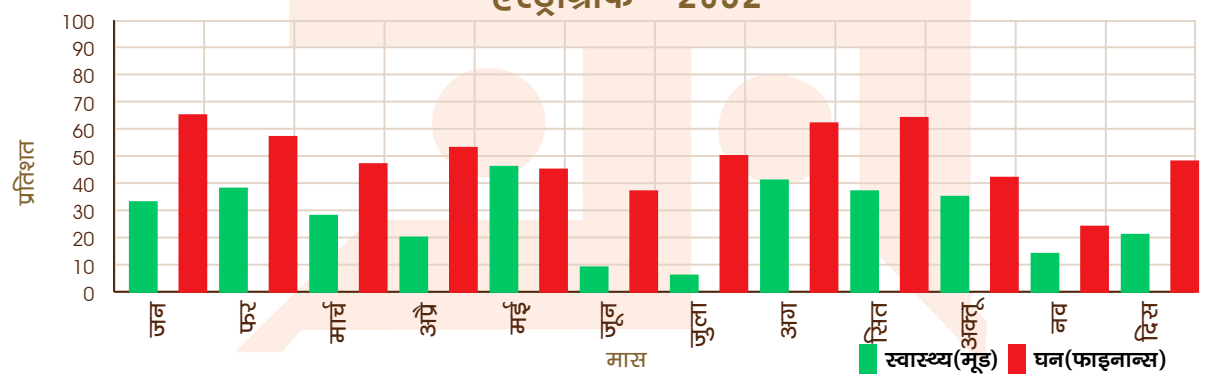

एस्ट्रोग्राफ - 2033

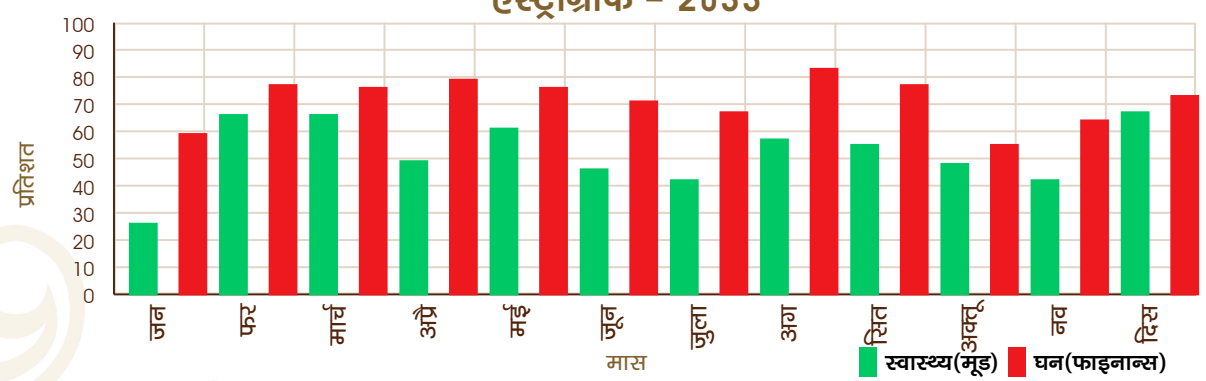

एस्ट्रोग्राफ - 2034

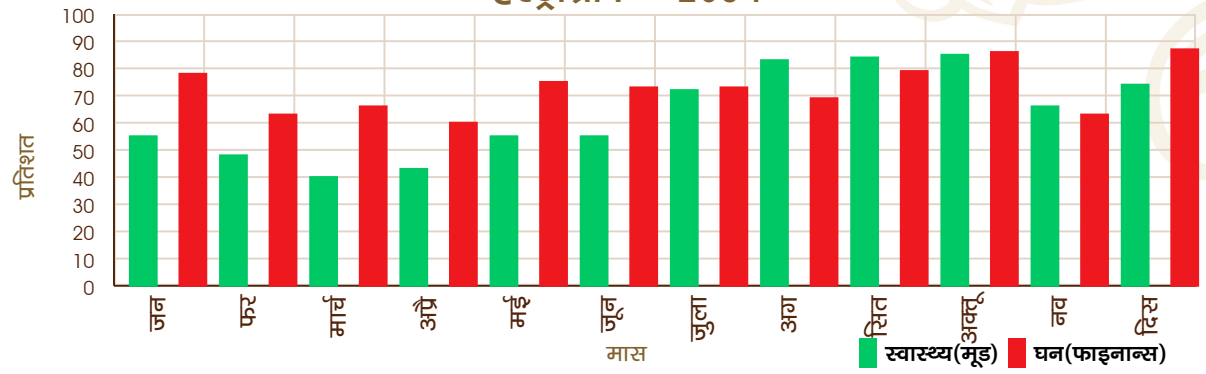

एस्ट्रोग्राफ - 2035

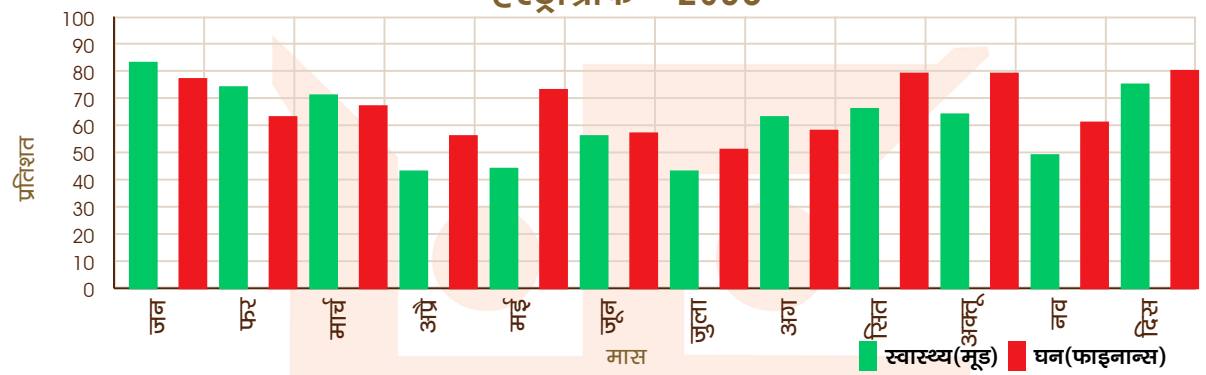

एस्ट्रोग्राफ - 2036

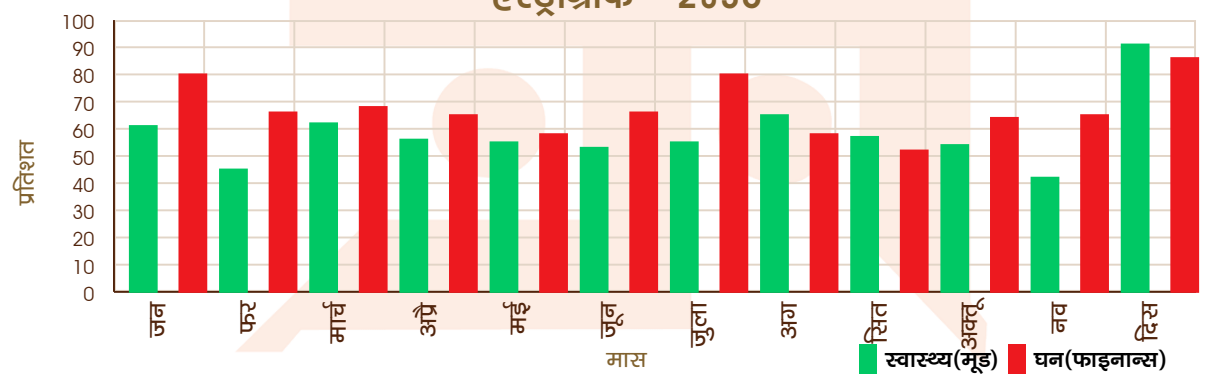

एस्ट्रोग्राफ - 2037

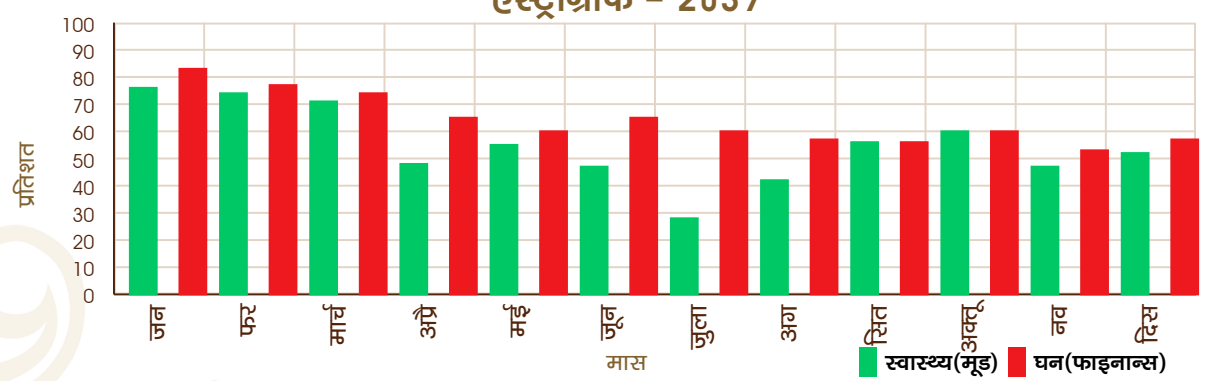

एस्ट्रोग्राफ - 2038

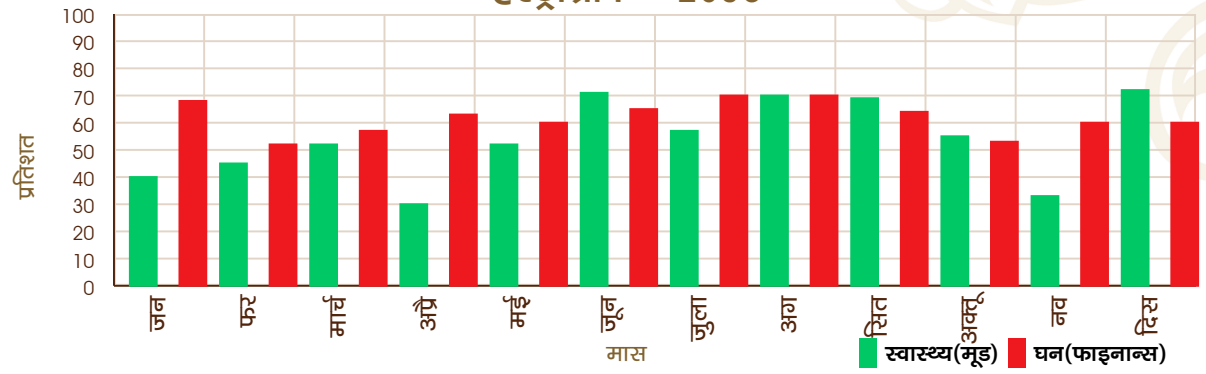

एस्ट्रोग्राफ - 2039

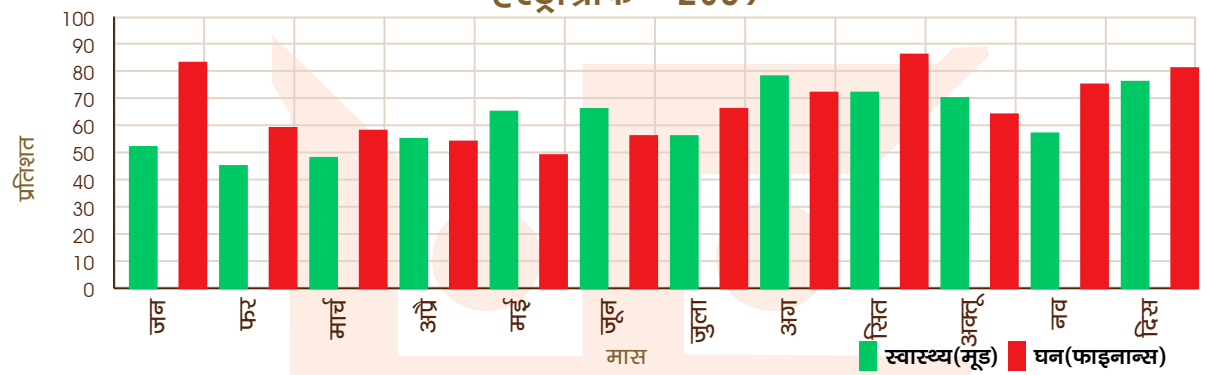

एस्ट्रोग्राफ - 2040

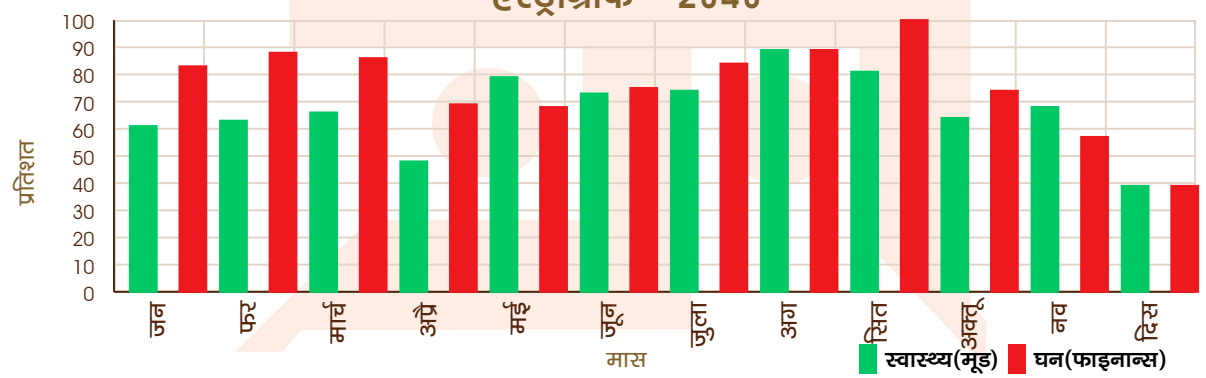

एस्ट्रोग्राफ - 2041

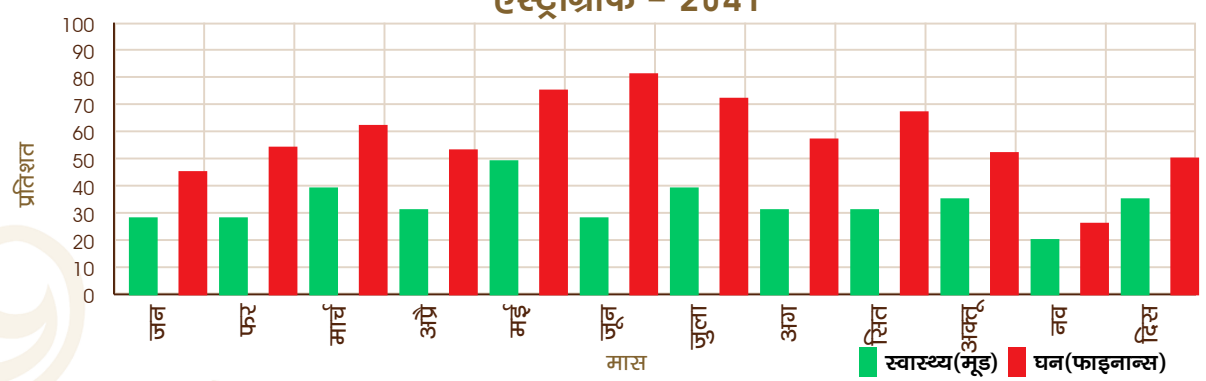

एस्ट्रोग्राफ - 2042

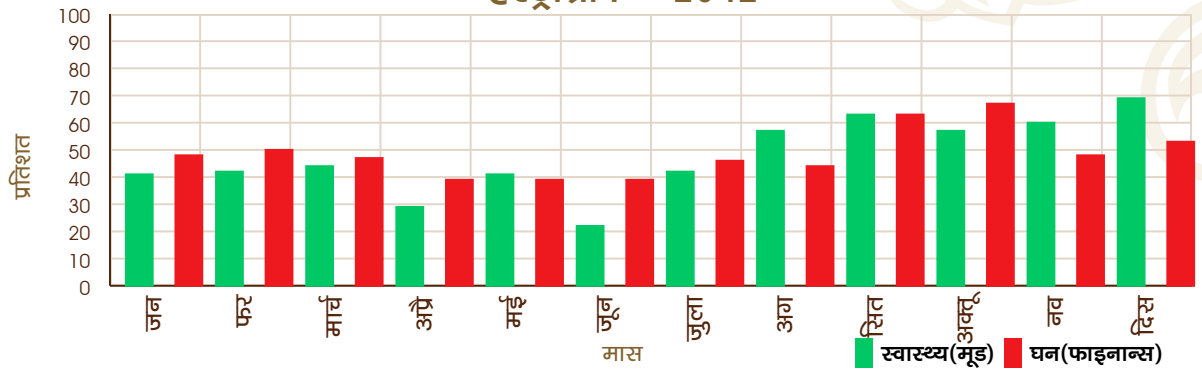

एस्ट्रोग्राफ - 2043

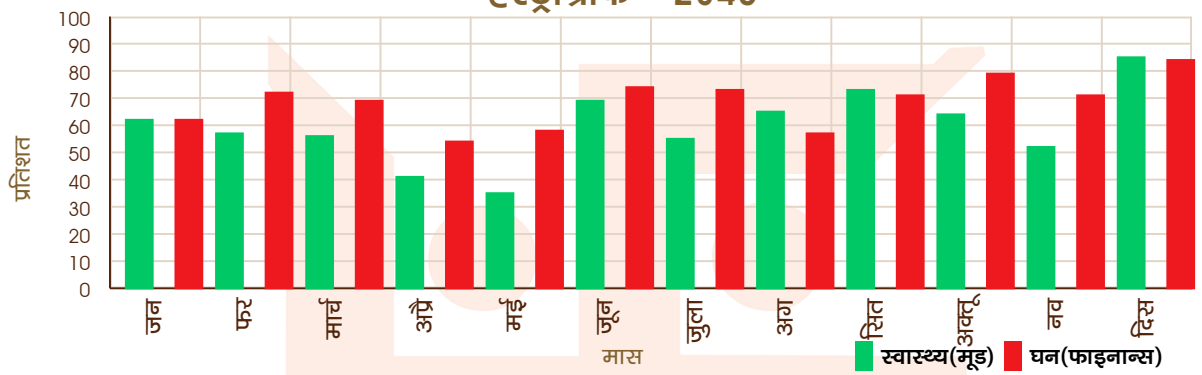

एस्ट्रोग्राफ - 2044

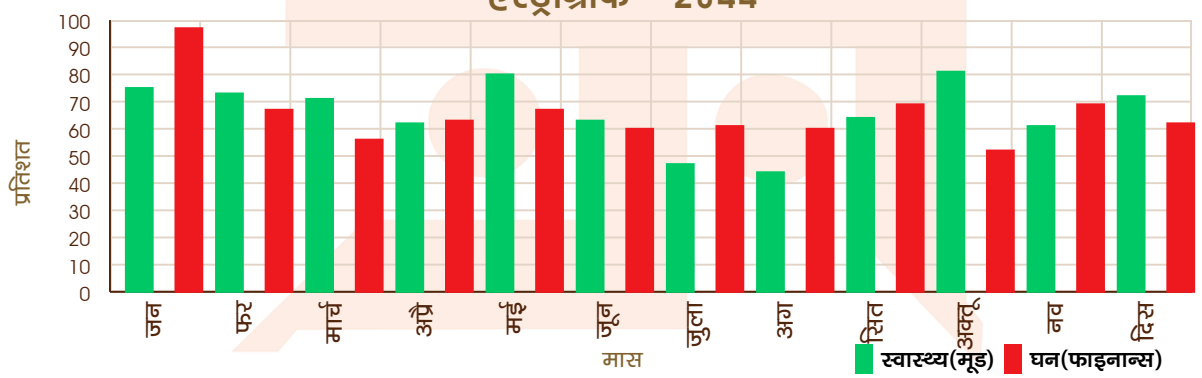

एस्ट्रोग्राफ - 2045

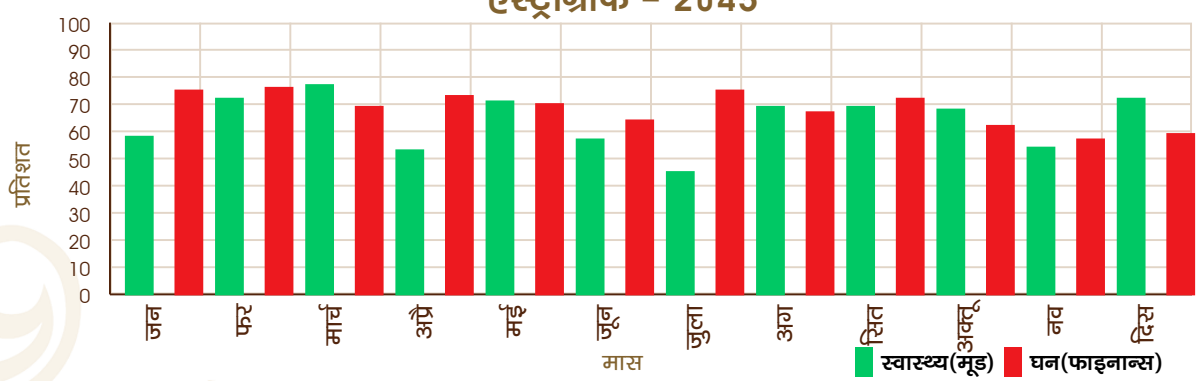

योग

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,केतु,शुक्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।

शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,केतु,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सर्प भय योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश राहु स्थित राशि पद से युक्त हो अथवा लग्न राहु युक्त हो तो जातक को सर्प का भय होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सर्प का भय होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।

अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,मंगल,शनि,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग योग

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा।
रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः।।
।। मानसागरी ।। अ.4/अरि.-57।।

यदि जन्मकुंडली में चन्द्र के क्षेत्र में मंगल स्थित हो तो जातक रक्त-पित्त के विकार से हीन अच्ग और नाना प्रकार की व्याधियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप रक्त-पित्त दोष से दुखी तथा विकलांग होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

देश विदेश यात्रा योग

व्ययेशे पापसंयुक्ते व्यये पापसमन्विते ।
पापग्रहेण संदृष्टे देशाद्देशान्तरं गतः ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-

यदि जन्मकुंडली में व्ययेश पाप ग्रह से युक्त हो और व्यय भाव में पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि व्यय भाव पर हो तो जातक देश विदेश में जाने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,केतु,शुक्र योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप देश विदेश में भ्रमण करने वाले होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।